[श्री दामोदर पान्डे]

आज जब बदली हुई परिस्थितियों में सभी बातों को देखा जाता है तो यह महसूस किया जाता है कि कोल बोर्ड की कोई आवश्यकता नही रह गई थी, इसी लिए मंत्री महोदय जो बिल लाये हैं—कोल बोर्ड को समाप्त करने के लिये—यह स्वागत योग्य काम है।

सभापति महोदय : क्या आप और टाइम लेंगे ।

श्री दामोदर पांडे : जी हां, मुझे थोड़ा वक्त और चाहिए ।

सभापति महोदय : ठीक है, आप कल जारी रखिये ।

अब हम एडजार्नमेंट मोशन लेते हैं—इस के लिये ढाई घटा रखा गया है ।

श्री ज्योतिर्मय बसु (डायमन्ड हार्बर) : ढाई घटे में नही होगा ।

सभापति महोदय : इस वक्त तो ढाई घंटे रखे गये हैं, बाद मे देखा जायेगा ।

16 hrs.

MOTION FOR ADJOURNMENT—*Contd.*

FAILURE TO AVERT RIOT IN SADAR BAZAR AREA IN DELHI—*contd.*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (ग्वालियर) : सभापति जी, मैं प्रस्ताव करता हूं कि सदन की बैठक स्थगित की जाये ।

यह कार्य-स्थगन प्रस्ताव, दिल्ली मे जो साम्प्रदायिक उपद्रव हुआ है, उसको लेकर है । साम्प्रदायिक उपद्रव एक गंभीर घटना है । उसकी चर्चा एक नाजुक मामला है । हमें यह ध्यान रखना होगा कि चर्चा साम्प्रदायिकता को और साम्प्रदायिक उपद्रव को दबाने में सहायक होनी चाहिए, उसको बढ़ाने में नही । 1947 के बाद दिल्ली में यह सब से बड़ा साम्प्रदायिक दगा हुआ है । सरकारी आकड़ो के अनुसार दंगे में दस लोग मरे हैं, गैर-सरकारी आंकडे मरने वालों की संख्या इससे कही ज्यादा बताते हैं । घायल होने वालो की सख्या सैंकडो में है । अस्पतालो से उनकी सही तादाद का पता नही लग सकता । बहुत से लोग पुलिस द्वारा परेशान किये जाने के डर से अस्पतालों में नही जाते । आज प्रात काल मैं दगा-ग्रस्त इलाके मे घुमा था, मुझे एक डाक्टर ने बताया कि दो सौ ढाई सौ लोग उनके पास ऐसे आये जिके शरीर में छर्रे लगे थे और वह छर्रे उन्होंने वही पर निकाले ऐसे लोगो की तादाद अस्पतालों के आंकड़ों से नही मिलेगी । दंगे मे बहुत बड़ी संख्या में दूकानो में आग लगाई गई और भारी पैमाने पर सम्पत्ति नष्ट हुई है । मैं दंगे मे मरने वाले सभी व्यक्तियो के प्रति , चाहे वे किसी भी सम्प्रदाय के हो, शोक संवेदना प्रकट करना चाहता हूं । हमारी नजर में मरने वाले भले इस सम्प्रदाय के हों या उस सम्प्रदाय के हो—सरकारी आकड़ों के अनुसार दस लोग मरे है, उनमे 8 हिन्दू बताये गये हैं, 2 मुसलमान—लेकिन दुनिया की नजरो में जो मरे हैं वे भारतीय हैं भारत की राजधानी दिल्ली से ये मरे हैं, इससे सारे ससार मे हमारी प्रतिष्ठा गिरी है और हम एक असभ्य देश के नाते दुनिया के सामने कटघरे में खड़े हो गए ।

आज सबेरे मुझे कई इलाकों में जाने का मौका मिला था । शोक सतप्त परिवारों के दृश्य को मैं भूल नही सकता । 19 साल का एक लडका सरदार रजीत सिंह, बाप का एकलौता बेटा, तीन बहनों में अकेला भाई, गोली का निशाना बनाया गया । वह किसी उपद्रव में शामिल नही था । उसकी मा पूछती थी मेरा बेटा क्यों गया ? मरने वालों में एक

नौजवान यूसुफ नाम का भी है, उसकी उम्र 18 साल थी। उसके घर वाले भी जरूर यह पूछते होंगे कि उनके बेटे को अपनी जान से हाथ क्यों धोना पड़ा? सवाल यह है क्या उपद्रव को रोका नहीं जा सकता था? सवाल यह है क्या उपद्रव जब शुरू हो गया तो प्रभावी तरीके से उसको दबाया नहीं जा सकता था? इस उपद्रव के बारे में हमें दो तीन मुख्य बातें याद रखनी होंगी। पहली बात यह कि दंगा उसी इलाके में हुआ है जिसमें 11 महीने पहले एक साम्प्रदायिक दंगा हो चुका है। वहीं सदर का थाना है, वहीं आजाद मार्केट है जिसमें पिछले जून में आग लगी थीं। यह ठीक है उस समय मरने वाले कम थे, आग से ज्यादा नुकसान हुआ था लेकिन यह इलाका वहीं है। भारत की राजधानी में एक वर्ष में एक ही इलाके में दो बार साम्प्रदायिक दंगा होना, यह बताता है कि लोगों की जान व माल की हिफाजत करने की प्राथमिक जिम्मेदारी का सरकार पालन नहीं कर पा रही है। जब यह पता था यहां दंगा हो चुका है और मुझे "हिन्दुस्तान टाइम्स" से मालूम हुआ है, मैंने वहां के लोगों से भी बातचीत की थी कल पुलिस अफसरों ने भी प्रेस कान्फ्रेन्स में यह स्वीकार किया कि जिस छोटी सी घटना को ले कर दंगा शुरू हुआ उस घटना का आरम्भ एक दिन पहले हो चुका था। सभी कहते हैं सिनेमा घर में कोई झगड़ा हुआ था, वह झगड़ा दूसरे दिन बढ़ गया। झगड़ा व्यक्तियों का था मगर उसने दो फिरकों के झगड़े का रूप ले लिया। हिन्दुस्तान टाइम्स कहता है 11 बजे से वहां तनाव था। पुलिस को पहली रिपोर्ट मिली है सवा बजे के करीब और फायर ब्रिगेड को टेलीफोन किया गया है 1 बज कर 13 या 1 बज कर 15 मिनट पर। लेकिन अगर एक रात पहले कुछ घटना हो चुकी थी और वह इलाका ऐसा है जहां 11 महीने पहले दंगा हो चुका था तो क्या प्रशासन का यह काम नहीं था कि व्यक्तियों के दंगे को सम्प्रदायि दंगे का रूप लेने से पहले ही हस्तक्षेप करता, लोगो के साथ कड़ाई से निपटता? जिनसे उपद्रव की आशंका थी उन्हें गिरफ्तार करता लेकिन पुलिस यह करने में सर्वथा विफल रही है। सभी जानते हैं जो भी उपद्रव शुरू होते है वे छोटी सी बात को लेकर होते हैं लेकिन बात का बतंगड़ बन जाता है व्यक्तिगत झगड़ा साम्प्रदायिक झगड़ों का रूप ले लेता है। यदि प्रारम्भिक कड़ी कार्यवाही की जाये तो रोक-थाम की जा सकती है। इस मामले में रोक-थाम नहीं की गई। जब पुलिस को पहले खबर मिली और पहला दस्ता पहुंचा तब हालत इतनी बिगड़ चुकी थी कि 10—15 पुलिस के जवान उस हालत पर काबू नहीं पा सकते थे। दूकानों में आग लगने लगी; किशनगंज में एक मस्जिद में भी आग लगी है, उसके नीचे दुकानें थीं। मस्जिदों में आग लगने की मैं कठोर शब्दो में निन्दा करना चाहता हूं। पूजा के स्थान फिर चाहे वे मन्दिर हो मस्जिद हो, किसी भी सम्प्रदायिक के हों, सुरक्षित रहने चाहिए, उनकी पवित्रता की रक्षा की जानी चाहिए। हमारे लिए छत्रपति शिवाजी महाराज का आदर्श है जो आजादी के लिए मुगलों से लड़े लेकिन उन्होंने मस्जिदों को हाथ नहीं लगने दिया। लेकिन मस्जिद जली है इससे कोई इनकार नहीं कर सकता, मैं अपनी आंखो से देख कर आया हूं।

लेकिन मैं एक बात कहना चाहता हूं अगर पूजा के स्थानो का दुरुपयोग किया जाय, अगर किसी मस्जिद में हथियार इकट्ठे किये जायें, अगर किसी मन्दिर से पत्थर फेंके जायें, किसी मन्दिर से गोलियों की बौछार की जाये तो क्या पुलिस का काम नहीं है कि मन्दिर में घुस जाये और जो गोलियां चलाने वाले हैं उनको पकड़े? यही नियम मैं मस्जिदों पर भी लागू करना चाहता हूं। एक सेक्युलर देश में पूजा के स्थानों का अगर दुरुपयोग किया जाता है तो उन पूजा के स्थानों की आड़ लेकर उपद्रवकारियों को बचने की छूट नहीं

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

देनी चाहिए । मुझे ताज्जुब हुआ जब प्रेस कान्फ्रेंस में आई जी से पूछा गया मस्जिद का नाम ले कर कि आप उसमें क्यों नहीं गये । जहां से गोली चल रही थी तो उन्होंने यह कहा कि पुलिस को मस्जिद में आने की इजाजत नहीं है । मैं नहीं जानता कि वहां से पेलेट्स चल रहे थे या नहीं लेकिन इतना जानता हूं कि पी टी आई के संवाददाता ने रात में समाचार दिया कि मस्जिद से स्निपिंग हो रहा था और इस समाचार को वापिस कर दिया गया । प्रधान मंत्री के घर से गृह मंत्री के घर से सूचना मंत्री के घर से टी आई को, सरकारी अधिकारियों को जगा जगा कर कहा गया कि तुम ने यह खबर क्यों भेजी इस खबर को वापिस करो और वह खबर वापिस कर ली गई । अगर इस का यह उद्देश्य था कि दंगों की ऐसी खबर नहीं जानी चाहिये जिन से भावनाएं भड़कें, उत्तेजना हो तब तो मैं उससे सहमत हूं लेकिन यह बात और यह स्थिति स्पष्ट हो जानी चाहिये कि क्या पूजा के स्थानों को उपद्रवों के अड्डे बनने की छूट देंगे ? नियम सब के लिये समान होना चाहिये, ऐसी व्यवस्था होनी चाहिये कि उससे कोई बच न पाए.....

SHRI A. SHAMIM (Srinagar): It is a question of fact.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : तथ्य का पता लगा लो ।

फैक्ट कुछ भी हो अगर पुलिस अफसर से पूछा जाय कि आप मंदिर में क्यों नहीं गए या मस्जिद में क्यों नहीं गए तो उनका जवाब यह नहीं होना चाहिये कि वहां जाने की हमें इजाजत नहीं है, गुरुद्वारे में, मंदिर में या मस्जिद जाने की हमें इजाजत नहीं है, अगर उनका उपयोग साम्प्रदायिक शांति भंग करने के लिये किया जाता है तो कानून की सीमा से कोई बच न पाये आपको ऐसी व्यवस्था करनी चाहिये । देश में कानून और न्याय की व्यवस्था नहीं रहेगी तो कोई उपासना की पद्धति चल नहीं सकती है ?

दूसरी बात इस दंगे के बारे में उल्लेखनिय यह है कि अधिकतर जो लोग मरे—मैं अधिकतर कह रहा हूं—वे गोलियों से मरे या छरों से मरे आम तौर पर दंगों में समाज विरोधी तत्व शामिल हो जाते हैं, गुंडे भाग लेते हैं, छुरेबाजी होती है और छुरेबाजी से मरने वालों की तादाद बढ़ती है । मैं गृह मंत्री से पूछना चाहता हूं कि जो दस लोग मरे हैं उन में से एक आध को छोड कर क्या यह सच नहीं है कि बाकी गोली या छरों से मरे है ?

यह भी ध्यान में रखने वाली बात है कि पुलिस समय पर क्यों नहीं पहुची । पुलिस संख्या से इतनी कम क्यों थी ? आप सब अखबारों की रिपोर्ट पढ़े । सब से ने एक बात यही कही है कि पुलिस देर से पहुची, तो कम संख्या मे पहुची, पहुची तो इस हालत में नहीं थी कि उपद्रव पर काबू कर सके । उपद्रव फैलता गया । बहादुर गढ़ रोड पर पहुचा । मरने वालों की सब से अधिक तादाद वहां है । छ सात लोग वही मरे है । एक मकान से चलने वाली गोलियों से मरे है । उनके शरीरों पर छरों के निशान है, गोलियों के निशान हैं । लोगों ने पुलिस को बताया कि इस मकान से गोली चल रही है । पुलिस ने कहा कि हमारे पास गोली चलाने का आदेश नहीं है । इतना ही नहीं पाच छः जो पुलिस वाले थे वे उस स्थान से जाने लगे, भागने लगे । लोगों ने उनको पकड़ा और कहा कि अगर तुम गोली नहीं चला सकते तो बदूक हमे दे दो । अखबारों में छपी हुई खबरें इसकी पुष्टि करती है । घण्टों गोलिया चलती रही, लोग मरते रहे, आगें लगती रही फिर भी दिल्ली के उस हिस्से को उपद्रवकारियों के भरोसे छोड़ दिया गया । मैं जानना चाहता हूं कि दिल्ली पुलिस कहां थी ? क्या सारी पुलिस रेलवे स्ट्राईक को तोड़ने के लिए लगा दी गई है? क्या जान और माल और इज्जत की हिफाजत आप गुंडों के भरोसे छोड़ देंगे ? फिर बार्डर सिक्योरिटी फोर्स बुलाई गई । भारत की सीमा सिकुड़ती जा रही है । अभी उस दिन बिहार तक पहुंची थी, अब राजधानी तक आ गई है । क्या पुलिस की शक्ति इतनी कम है या जो पुलिस

की शक्ति है उसका हम ठीक उपयोग नहीं कर पाते ? गृह मंत्री स्वीकार करेंगे कि बोर्डर सिक्योरिटी फोर्स के आने में भी देर हुई। कितनी देर हुई ? कहा गया कि एक घण्टे में आ जाएगी। मेरा अंदाज है कि उसके आने में दो ढाई घण्टे लगे। क्या संकट काल में यह हमारा इंतजाम है ? मैं मानता हूं कि बाहर से पुलिस लाने में कुछ समय लग सकता है लेकिन जिस विस्फोटिक परिस्थिति में हम रह रहे हैं उस में अगर इतना समय लगेगा चाहे वह साम्प्रदायिक दंगा हो या किसी और तरह की हिंसा हो तो फिर उसका प्रभावशाली ढंग से निराकरण हम नहीं कर सकेंगे, उसका सामना नहीं कर सकेंगे। मैं चाहता हूं कि गृह मंत्री इस पर प्रकाश डालें।

जब ग्यारह महीने पहले इस इलाके में दंगा हुआ था तो हमने ज्यूडिशल इनक्वायरी की मांग की थी। सरकार की ओर से कहा गया था कि अदालती जांच में देर लगती है, उसमें प्रवृत्ति यह होती है कि पुलिस के अफसर अपना बचाव करना चाहते हैं, अपनी विफलता सामने आने देना नहीं चाहते, इसलिए हम अदालती जांच नहीं करेंगे, हम एक अफसर तैनात करेंगे, एक बड़ा अफसर जो इस इलाके में हुए साम्प्रदायिक दंगे की जांच करेगा। श्री टंडन तैनात किए गए। वह जांच सार्वजनिक जांच थी। अखबारों में विज्ञापन देकर जनता को गवाही के लिए बुलाया गया। हम जानना चाहते हैं कि वह जांच रिपोर्ट कहां है, उसे प्रकाशित क्यों नहीं किया गया है ? उस रिपोर्ट से क्या निष्कर्ष निकाले गए हैं ? क्या यह सच नहीं कि उसमें कहा गया है कि पुलिस अगर समय के कदम उठाती और पहले से सावधान होती तो दंगों को टाला जा सकता था ? ग्यारह महीने के बाद फिर वही इतिहास दोहराया जा रहा है। मेरी मांग है कि वह रिपोर्ट प्रकाशित होनी चाहिये।

उस समय हमने कहा था कि सदर थाने का इलाका बहुत बड़ा है, इसमें जगह जगह चौकियों की आवश्यकता है, कुछ ऐसे स्थान हैं, ऐसे केन्द्र हैं जहां छोटी छोटी बातों को लेकर तनाव पैदा हो जाता है। वहां अगर तत्काल पुलिस पहुंच सके तो फिर उस तनाव को हम व्यापक उपद्रव में बदलने से रोक सकते हैं। लेकिन उस सुझाव पर ध्यान नहीं दिया गया, उस पर अमल नहीं हुआ। हमारी मांग है कि सारे सम्प्रदायिक उपद्रव की अदालती जांच होनी चाहिये, तथ्य सामने आने चाहिये, में उपद्रव करने वाले कौन हैं, इसका पता लगना चाहिये, इन को कठघड़े में खड़ा किया जाना चाहिये और उन्हें कठोर से कठोर सजा दी जानी चाहिये। क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है कि घंटों गोली चलती रही और गोली चलाने वाले अभी तक पकड़े नहीं गये हैं ? उनके नाम दिये गये हैं, जिन घरों से गोलियां चली हैं, उसको पुलिस वालों ने देखा है, पुलिस के डी० आई० जी० छुर्रे से, पेलेट से घायल हुये हैं। वे छर्रे कहां से आए। हमारी मांग है कि सारे इलाके में जिन जिन को भी हाथियारों के लाइसेंस दिये गये हैं, बन्दूकों के दिये गए हैं, सब को बुलाया जाना चाहिये और उनके हथियार थाने में जमा करा लिये जाने चाहिये। जिन घरों के बारे में शक है कि वहां हथियार छिपा कर रखे गये हैं या वहां से गोलियां चलीं थीं उन घरों की तलाशी ली जानी चाहिये फिर चाहे वे हिन्दुओं घर हो या मुसलमानों के हों। एक एक घर में उस इलाके में तलाशी लेना जरूरी है। किसी को भी अवैध हथियार रखने की छूट नहीं दी जा सकती है। लेकिन ये कदम नहीं उठाए जा रहे हैं

यह भी जरूरी है कि नेशनल इंटेग्रेशन काउंसिल को जो सिफारिशें थीं यह बताया जाये कि उन पर क्यों नहीं अमल किया गया है। चूंकि वे सरकारी सिफारिशें थीं इसलिए मैं उनका उल्लेख करता हूं। वैसे तो हमारी सरकार के लिए नैशनल इंटेग्रेशन का मामला भी एक मौसमी मामला है। 1961 में नैशनल इंटेग्रेशन काउंसिल बनी थी जब चीन ने हमला किया था, उसको खत्म कर दिया गया। 1968 में फिर से उसको जिन्दा किया गया।

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

श्रीनगर में उसकी बैठक हुई। वहां जो सिफारिशें की गई उनको फिर बेहोश कर दिया गया। कुछ महीने पहले फिर से उसको जिन्दा किया गया। अब पता नहीं वह मर गई है या अधमरी है या सिसक रही है....

श्री शशि भूषण (दक्षिण दिल्ली): आप भी तो उसके सदस्य हैं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: इसलिए मुझे पता नहीं है। मैं खत्म करना चाहता हूं।

"As communal disturbances result from building up of communal tensions, it is essential to have prompt and correct intelligence available to the Government. For this the following measures should be taken:-

(a) A Special Intelligence Unit should be constituted at the State and Central levels. The Unit should be composed of persons specially trained, possessing aptitude and absolute impartiality for this type of work."

क्या दिल्ली में ऐसा हुआ? उन स्पेशल इनटेलिजेंस यूनिट्स की रिपोर्ट क्या है? क्या उसके आधार पर पुलिस ने कार्यवाही की।

"(b) Intelligence Agencies should furnish their reports and assessments to the District Magistrates and District Superintendents of Police regularly and without delay.

"(c) The District Magistrates and District Superintendents of Police should be charged with personal responsibility for Scrutinising these reports and taking preventive action promptly to forestall any communal disturbances"

इस में आगे यह कहा गया है:

"The District Magistrate and Suprintendent of Police should be made personally responsible for prompt action to prevent or stop communal disturbances."

दिल्ली में जो पिछला उपद्रव हुआ था; उसके बाद किसी अफसर को सजा देने के बजाय उन लोगों को तरक्की दी गई। किसी के खिलाफ कार्यवाही नहीं हुई। अब हम यह जानना चाहते हैं कि क्या इस उपद्रव के लिए किसी को जिम्मेदार ठहराया जायेगा या नहीं, किसी पर उत्तरदायित्व डाला जायेगा या नहीं, किसी से जवाब तलब होगा या नहीं।

लेकिन मुझे यह कहने में संकोच नहीं है कि साम्प्रदायिक उपद्रव जहां प्रशासन द्वारा निपटने का मामला है, वहां वह लोगों के दिलों और दिमागों में चलने वाली लड़ाई को जीतने का भी सवाल है। हम उस लड़ाई को जीतने में नाकामयाब रहे हैं, यह मानने में किसी को संकोच नहीं होना चाहिए।

अभी एक पाकिस्तानी पत्रकार, कराची के "जहांनुमा" के सम्पादक, श्री महमूद शाम, यहां आये थे। दिल्ली के उर्दू मासिक 'पाकीजा' के अप्रैल अंक में उनका एक इन्टरव्यू छपा है। मैं उन के कुछ शब्द सदन में सुनाना चाहता हूं —क्षमा कीजिए, मैं उर्दू नहीं पढ़ सकता हूं:—

"Shree Sham has expressed surprise that the Indian nation is compartmentalised into majority and minority. He said that Indian Muslim leaders are more to blame in this respect and that they seem to suffer from inferiority complex."

He further said that:

"High officials in New Delhi had told him that Shrimati Gandhi's public declaration that India should

have been invited to the Islamic Conference as there are largest number of Muslims in India after Indonesia, was an election speech. However, he wondered why the Indian leaders still think in terms of Hindu and Muslim if they are against the two-nation theory."

श्री शशि भूषण : यह पाकिस्तानी जनसंघी मालूम होता है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : और यह कांग्रेसी जनसंघी मालूम होता है।

हमें यह मानना पड़ेगा कि हम एक देश मे रहते हैं, मगर अभी हम एक कौम के रूप मे नहीं रहते हैं। मजहब अलग होने के बाद भी एक राष्ट्रीयता का भाव हम ने पैदा नहीं किया है। इसीलिए छोटी छोटी घटनायें ऐसे रूप मे प्रकट होती है, जिस से हम को शरमिन्दा होना पड़ता है।

लेकिन जब तक इस साम्प्रदायिक सवाल को वोटों की नजर से देखा जाता रहेगा, तब तक यह समस्या हल नहीं होगी। दंगा केवल एक गहरी बीमारी का विस्फोट है—वह बीमारी नहीं है, बीमारी का लक्षण है। बीमारी अधिक गहरी और अधिक कठिन है। जहा हम प्रशासनिक स्तर पर इस तरह के विस्फोटों को कड़ी कार्यवाही के द्वारा दबाने की कोशिश करें, वहां बीमारी की तह में जा कर उस का स्थायी इलाज ढूंढने का भी प्रयत्न करे, यही मेरा निवेदन है।

MR. CHAIRMAN: Motion moved:

"That the House do now adjourn."

श्री एच० के० एल० भगत (पूर्व दिल्ली) : सभापति महोदय, अभी श्री वाजपेयी ने कहा है कि यह बहुत नाजुक मामला है, और इस बारे में इस सदन में ऐसी बहस होनी चाहिए, जिस का असर बाहर खराब न पड़े और जिस से साम्प्रदायिक तत्व या दंगा करने वालों की कोई हौसला-अफ़ज़ाई न हो। मैं श्री वाजपेयी का जाती तौर पर बहुत आदर करता हूं। लेकिन काश ! जो बात श्री वाजपेयी कहते हैं, वही बात वह या उन की पार्टी करती होती।

एक माननीय सदस्य : और जो पार्लियामेंट में कहते हैं, वही बाहर भी कहते।

श्री एच० के० एल० भगत : उन्होंने पार्लियामेंट में जो कहा है, उस पर भी मैं आ रहा हू। यहां पर उन्होने ऐसी बाते कही हैं, जिन से साम्प्रदायिक दगा करने वालो की हौसला-अफ़ज़ाई हो सकती है और मैं उन से यह उम्मीद नही करता था कि वे ऐसी बातें कहेंगे।

अभी जब कि लोगो के घरो में आग लगी हुई है—पूरी तरह बुझी नही है, जो बेगुनाह लोग मरे है, अभी उन के घरो मे मातम मनाया जा रहा है, शहर के उस हिस्से में अभी कर्फ्यू लगा हुआ है, स्थिति कंट्रोल में तो कही जा सकती है, लेकिन यह नही कहा जा सकता है कि दंगा बिल्कुल खत्म हो गया है, क्या ऐसी हालत मे हम लोग जो चाहे यहा कह सकते हैं ? काश ! श्री वाजपेयी और उन के कुछ दूसरे साथियों ने यह सोचा होता कि इस समय जरूरत किस बात की है। इस समय जरूरत इस बात की थी कि लोगों से मिल कर उन को शान्ति के लिए तैयार किया जाता, दुखियों की मदद की जाती और दिल्ली में शान्ति का वातावरण बनाने के लिए काम किया जाता। लेकिन मुझे इस बात का बहुत दुख है कि ऐसा करने के बजाये श्री वाजपेयी की तरफ़ से —और कुछ और पार्टियों के नेताओ की तरफ़ से, जिन के बारे में मैं ईमानदारी से महसूस करता हूं कि वे साम्प्रदायिक शान्ति चाहते हैं; इस का मुझे और ज्यादा दुख है—

[श्री एच० के० एल० भगत]

उस समय इस हाउस मे एजार्नमेंट मोशन लाया जा रहा है । मैं इसके इन्कार नही करता हू कि वह उन का अधिकार है । लेकिन जब घर जल रहा हो, जब आग लगी हो, तो आग मे कूद कर आग को बुझाया जाता है । उस समय पोस्ट मार्टम नही किया जाता और न ही कुछ बातो को प्रिज्यूम कर के स्पीच दी जाती है ।

मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि श्री वाजपेयी की स्पीच को सुन कर मुझे यह लगा कि उन का निशाना दिल्ली मे शान्ति नही है । एक तरफ तो वह मांग कर रहे हैं कि इस मामले की जुडिशल एनक्वायरी होनी चाहिए और दूसरी तरफ उन्होने इस मामले के मुताल्लिक कुछ बातो को प्रिज्यूम कर लिया है । श्री वाजपेयी मौके पर गये हैं, लेकिन वह दगे वाले दिन तो गये नही । आई-विटनेस वह नही हैं । उन के सामने कुछ नही हुआ । उन्होने किसी को फायरिंग करते नही देखा है । फ़ायरिंग मस्जिद से हुई या नही, उन्होने इस बात को नही देखा । लेकिन उन्होने यहा कई फ़ैक्ट्स बयान कर दिये ।

मुझे ताज्जुब हुआ कि श्री वाजपेयी जैसा समझदार इन्सान एक तरफ़ एन्क्वायरी की माग कर रहा है और दूसरी तरफ़ ऐसी बाते कर रहा है, जिन को इस पार्लियामेंट मे कहने से करन्सी मिल सकती है और जो बाहर फैल कर जनता में और ज्यादा उत्तेजना पैदा कर सकती है । श्री वाजपेयी ने जो कुछ कहा है, उस को उन्होने खुद अपनी स्पीच से नेगेटिव कर दिया है ।

मुझे ताज्जुब है कि श्री वाजपेयी जैसा आदमी इतनी एग्जेजेरेशन कर सकता है कि मैं ने उस इलाके के एक प्राईवेट डाक्टर से बात की, जिस ने कहा कि मैंने दो ढाई सौ आदमियो के जिस्म से पैलेट निकाले हैं । थोड़ा सा मैडिकल साईंस का नालेज मुझे भी है । पैलेट कैसे निकाले जा सकते हैं ? दो ढाई सौ आदमियों के जिस्म से पैलेट घुस जाये और एक प्राईवेट आदमी मौके पर खडा हो कर उन सब के जिस्म से पैलेट निकाल दे, इस बात पर कौन यकीन करेगा ? मैं श्री वाजपेयी से क्षमा चाहता हू, लेकिन मैं कहना चाहता हू कि वह बातो को ग्रासली एग्जेजेरेट कर रहे है, उन को ट्विस्ट कर रहे है ।

श्री वाजपेयी का मकसद क्या है ? वह मुझे माफ करें, उन का मकसद शान्ति कायम करना नही है, बल्कि उन का मकसद शान्ति को बिगाडना है । इस के सुबूत के तौर पर मैं कहना चाहता हू कि अगर उन की पार्टी की नीयत शान्ति कायम करने की होती, तो वह ऐसे काम न करती, जो कि उस ने किये है । श्री वाजपेयी ने कहा कि इस मामले को राजनीति में न डाला जाये । जब कोई दगा होता है, तो हम लोगों को शान्ति कायम करने के लिए कहते हैं । लेकिन दगे के फ़ौरन बाद श्री वाजपेयी की पार्टी का बयान आ जाता है कि कांग्रेस वाले इकानोमिक इस्यूज से बचने के लिए दगे करवा रहे है । इस तरह का रेजोल्यूशन पास किया जाता है और उन के प्रैसिडेंट का स्टेटमेंट आ जाता है । इस हालत में अगर मैं कह दू कि दंगा करवा कर उस का ब्लेम कांग्रेस पर डालने की कोशिश की जाती है, तो क्या वह ग़लत होगा ?

आप गौर करे कि श्री वाजपेयी की पार्टी शान्ति कायम रखने के लिए क्या मदद कर रही है । उन के लोकल यूनिट की मीटिंग होने के बाद एक बयान दिया गया—और श्री वाजपेयी उस बयान को कान्ट्राडिक्ट नही कर सकेंगे, क्योकि वह तमाम अखबारो मे आया है—कि जिन लोगों ने गोली चलाई है, अगर उन को चौबीस घटे के अन्दर अन्दर गिरफ़्तार न किया गया, तो हम दिल्ली मे

डायरेक्ट एक्शन शुरू कर देंगे । जब यहां दंगा हो रहा है, तब इस तरह डायरेक्ट एक्शन की धमकियां देना, और एक पार्टी के नेता की तरफ़ से कुछ बातों को प्रिज्यूम करना, कहां तक हक-बजानिब हैं ? मैं उन के अख़बार मदरलैंड को क्वोट कर रहा हूं— यू० एन० आई० ने उस न्यूज़ को सर्कुलेट किया है, "दि दिल्ली प्रदेश जनसंघ हैज थ्रेटन्ड टु रिसार्ट टू डायरेक्ट एक्शन," अगर फ़लां फ़लां लोगों को पकड़ा न गया । कौन लोग हैं, उन के नाम दिये गये है । इस दंगे के पीछे जो कोई भी आदमी हो, वह छोटा हो या बड़ा, और वह चाहे किसी भी फ़िरके से ताल्लुक रखने वाला हो, उस को एकदम गिरफ़तार करना चाहिए । लेकिन यह कितनी अजीब बात है कि कोई यह तय कर दे कि अगर फ़लां फ़ला आदमियों को नही पकड़ा गया, तो डायरेक्ट एक्शन शुरू कर दिया जायेगा । और डायरेक्ट एक्शन क्या है ? ये लोग सड़कों पर आ जायेंगे । डाइरेक्ट ऐक्शन क्या है ? आप सड़कों पर आ जाएंगे ? आप कानून तोड़ेंगे ? जो कानून और व्यवस्था दंगाबाजों ने तोड़ी है आप उस में शरीक होना चाहते हैं ? जनता को आप क्या कहना चाहते हैं ? यह आप का बयान साफ साफ बताता है कि आप इस सिचुएशन का अनड्यू ऐडवांटेज लेना चाहते हैं ।

फिर मौके पर क्या हुआ ? मौके पर सुभद्रा जोशी जी गईं, अमरनाथ चावला जी गए तो वहां पर इन के कार्यकर्ताओं ने लोगों को प्रोवोक किया । वह गए थे शांति से मदद करने के लिए और लोगों को प्रोवोक कर के उन को तंग करने की, उनको परेशान करने की, उन के खिलाफ मुज़ाहिरा करवाने की कोशिश की गई । फिर आप कहते हैं कि आप शांति चाहते हैं । मैं कहता हूं कि आप ठण्डे दिल से सोचें । यह आप के अखबार में लिखा है जो मैं कोट कर रहा हूं, किसी दूसरी जगह से कोट नहीं कर रहा हूं यू एन आई ने खबर दी है। आप की लोकल पार्टी यूनिट की खबर है। पिछली दफा दंगा हुआ तो आप ने एक बड़ा भारी सीजलिंग पोस्टर निकाल दिया । अभी वाजपेयी जी ने कहा कि टंडन कमेटी की रिपोर्ट 11 महीने पहले आई थी । उस रिपोर्ट को नहीं छापा गया । वाजपेयी जी को पता होगा टंडन कमेटी के एक्सट्रैक्ट्स छपे थे । उसके बाद कई बार पार्लियामेंट हुई है आप ने भी मांग नहीं की कि टंडन कमेटी की रिपोर्ट छपे आज 11 महीने के बाद आप टंडन कमेटी की रिपोर्ट छापने की मांग कर रहे हैं और उस में आप सरकार की बहुत कोताही की बात कर रहे हैं। मैं कहता हूं कि बहुत अच्छा होता कि आज यह हाउस यहीं काम करता कि हम दंगों की निन्दा करते हैं, पहले दिल्ली में शान्ति कर लें, उसके बाद बैठेंगे और उसे डिस्कस करेंगे । फिर उस में जो कसूरवार होगा उस को सजा देंगें ।

अभी वाजपेयी जी ने कहा कि जूडिशियल एन्क्वायरी करिए जूडिशियल एन्क्वायरी कर लिजिए लेकिन उस में आखिर में क्या निकलता है? दो साल, तीन साल, चार साल, पांच साल लगते हैं । जूडिशिल एनक्वायरी मे । तब तक गवाहियां खत्म हो जाती हैं । गवाहियां देने वाले खत्म हो जाते हैं। मैनिपुलेशन का टाइम मिल जाता है। मैं मांग करता हूं कि एक हाई लेवेल एन्क्वायरी फौरन कफ्यू खत्म होने के साथ ही सरकार को शुरू करनी चाहिये जिस में यह देखे की दंगा कैसे शुरू हुआ, इस के पीछे कौन से तत्व है, कौन सी शक्तियां हैं, कौन लोग हैं जिन्होंने इस को एन्करेज किया, अबेट किया और एड किया ? किन लोगों का मौके पर बिहेवियर क्या रहा, पीछे क्या रहा, उन के अखबारों ने क्या लिखा कौन शक्तियां है हमारे देश में जो इन दगों को कराना चाहती हैं?

[श्री एम० के० एल० भगत]

एक बात मैं और कहना चाहूंगा बाम ओर से जो हमारे सी पी आई और सी पी आई एम के नेता हैं उन से ठीक है, उन को अधिकार है जो चाहें करें मैं ईमानदारी से यह महसूस करता हूं कि वे और हमारे श्री श्याम नन्दन मिश्र की पार्टी के लोग तथा सी एम के वाले साम्प्रदायिक दंगे नहीं चाहते, वे इस के खिलाफ हैं। लेकिन मैं ज्योतिर्मय बसु की सूचना के लिए कहना चाहता हूं, इन दंगों के बारे में आप की लोकल जो यूनिट्स हैं सी पी आई एम की और सी पी आई की उन का क्या कहना है, वह मैं पढ़ कर सुनाना चाहता हूं।

"In a press note issued on Monday CPI, Delhi State Council Secretary, Premagar Gupta and CPI(M) Regional Committee Secretary, Jaipal Singh said it was absolutely certain that the riots were premeditated and organised by the RSS, and the origin of the fight had been stage-managed. For the part three months, it said, the Jan Sangh had been trying in various ways to disturb peace in Delhi as part of an all-India plan to create anarchy and chaos. The success of the left and democratic movements culminating in the successful one on Friday had completely unearthed the Jan Sangh. As a result it was now trying to drown this democratic unity of these people against hoarders and blackmargeteers into communal orgies.".

यह कमेंटी है आप के सी पी आई एम और सी पी आई के लीडर्स का; आप को यह सोचना चाहिये कि जब कम्युनल पीस, नेशनल हारमनी थ्रेटेन होती है तो वाजपेयी जी के साथ आज की तारीख में जब कि अमन की जरूरत है, आप ऐडजर्नमेंट मोशन के लिये खड़े होते हैं।

(व्यवधान) . . .

श्री एस० ए० शमीम : इन की इत्तिला के लिये मैं बता दूं।

He is confusing the issue. This is a mistaken motion. Our adjournment motion is for entirely different reasons. Only Mr. Vajpayee's has been balloted as No. 1. He should stand corrected.

श्री एम० के० एल० भगत : मैं शमीम साहब की बात मानता हूं। . . . (व्यवधान)

SHRI S. A. SHAMIM: There is an adjournment motion which has been tabled by me also. (*Interruptions*).

यह रेलवे वर्कर्स का मामला नहीं है, जरा तमीज से बात करिए. . .

श्री शंकर दयाल सिंह (चतरा) : प्वाइंट आफ आर्डर। मान्यवर सदन में बड़ी शांति से बात होनी चाहिए और हो भी रही है। आदरणीय भगत जी का बहुत ही सुन्दर सुझाव और भाषण हो रहा है। लेकिन अभी माननीय शमीम साहब ने शर्मा जी के लिए कहा कि जरा तमीज से बात करें। ये शब्द वे वापस लें।

श्री एस० ए० शमीम : यह कोई जुर्म है कहना कि तमीज से बात करिए? क्या मैं यह कहूं कि बदतमीजी से बात करिए? यह कोई प्वाइंट आफ आर्डर है?

सभापति महोदय : यह इस सवाल पर प्वाइंट आफ आर्डर भले ही न हो लेकिन हमारी जबान में अल्फाज बहुत अच्छे नहीं समझे जाते उन इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

श्री एस० ए० शमीम : सभापति महोदय, ये कांग्रेस के डिप्टी लीडर बात करते हैं कि नीचे बैठो, चुप बैठो, लफंगों की तरह बात करते हो। यह डिप्टी लीडर बने फिरते हैं? इन्हें बताना पड़ेगा कि तमीज से बात करिए।

श्री ज्योतिर्मय बसु : यह लफंगा शब्द कम से कम निकलवा दीजिए रेकार्ड से ?

श्री ए० पी० शर्मा (बक्सर) : इन्होने यह कहा कि ये रेलवे वर्कर नही है। ये रेलवे वर्कर्स को अपनेसे हेय समझते है ? वे इन से बहुत अच्छे हैं।

श्री एच० के० एल० भगत : सभापति महोदय, मैं बात मानता हू शर्मा साहब की इतनी थोड़ी सी बात मैं भी समझता हूं कि उन्होंने जो ऐडजर्नमेंट मोशन दिया और कुछ दूसरे नेताओ ने भी दिया, वाजपेयी जी का भी आया, इसलिए उन्होने मूव किया। मैं कहना चाहता हू शर्मा साहब से, बुरा मत माने उनको आज के दिन सोचना चाहिए था कि जब अभी दिल्ली के अन्दर हालत अच्छी नहीं है तो ऐडजर्नमेंट मोशन लाने का कोई फायदा होगा या नही ? यह दूसरे नेताओ को भी सोचना चाहिए था।

मैं यह अर्ज करना चाहता हूं कि दंगे हुए और यह हमारे सब के लिए बहुत शर्म की बात है। दिल्ली के नाम पर यह बहुत बडा धब्बा है और उस धब्बे से हम मे से कोई आदमी बच नही सकता। दुनिया में हमारी पोजीशन गिरी है। हमारे देश का नुकशान हुआ है।

मैं आप से यह कहना चाहता हूं कि सी० पी० आई और सी० पी० आई० एम० के नेताओं ने जो कहा है कि

It is a part of an All India Plan to create chaos in the country.

मैं उससे ऐग्री करता हू और अब भी यह कह रहा हू। इस का ताल्लुक बहुत इम्मीडिएट उस से हो या न हो, लेकिन ताल्लुक साफ है।.. (व्यवधान) .. मैं खत्म कर रहा हूं।

वाजपेयी जी ने बहुत सी बातें कही। उन्होंने फैक्ट्स भी बयान कर दिए। उन्होंने एक घंटा मौके पर जा कर देखा। मैं आप की ईमानदारी से बताना चाहता हूं कि मैं वहां 8 घंटे लगातार मौके पर रहा। साढे तीन से लेकर के रात के 11 बजे तक और मैं ईमानदारी से कहता हू कि तमाम बातें जानने और पूछने के बाद भी मैं इस राय पर नही पहुंच सका कि मैं यह कहूं कि यह सब किस ने शुरू किया ? कहां से गोली आई ? मुझे लोगों ने कहा कि गोली के लिए जगह हम नही बता सकते, डायरेक्शन बता सकते हैं। इन्होंने तो एक पर्टीकुलर प्लेस भी आइडेंटिफाई कर दिया। सवाल यह होता है कि ऐसे मामलों मे फैक्टस् हम पालियामेंट के सामने कहें तो उसमें कोई प्राइमाफसाई बेसिस होनी चाहिए, उस मे कुछ सच्चाई होनी चाहिए, कुछ उसका ताल्लुक होना चाहिए। यह नही कि मैं गया, मुझे एक डाक्टर ने बताया, दो सौ गोलिया मैंने निकाली। डाक्टर से यह पूछा नहीं कि दो सौ गोलियां कैसे निकाली जा सकती हैं ? क्या उसने आपरेशन किया था क्या किया ? एक मजाक लगता है। आप सोचिए जरा। एक जिम्मेदार आदमी इतना ग्रास एग्जैजरेशन हाउस में खडे हो कर कर रहे हैं। मैं जाती तौर पर उनका आदर करता हूं।... (व्यवधान) ...

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : ये छर्रे देखें।

श्री एच० के० एल० भगत : मेरे भाई कह रहे हैं कि हाई-लेबल इन्क्वायरी की जाय, मैं भी इस मांग का समर्थन करता हूं और चाहता हूं कि हाई लेबल इन्क्वारी जरूर की जाय ताकि मालूम हो सके कि किस का कुसूर है। अगर पुलिस का कुसूर निकले, वाजपेयी जी के चेलों का कुसूर निकले, मेरा निकले, जो भी कुसूरवार साबित हो, उस को सख्त से सख्त सजा दी जाय—इस बात की माग करता हूं।

यह बड़ा आसान काम है—यहां खड़े होकर सरकार की निन्दा करना, सरकार के

[श्री एच के० एल० भगत]

खिलाफ कहना और अगर सरकार का कुसूर होगा तो सरकार उस से बच नही सकती। लेकिन इस मामले मे मैं जानता हू—हमारे होम मिनिस्टर और प्राइम मिनिस्टर ने सारी सिचुएशन के साथ पूरा टच रखा है, वे मौके पर गये। जब जरा सी भी खबर आई कि झगडा फिर शुरू हो गया—15 मिनट के अन्दर-अन्दर होम मिनिस्टर और प्राइम मिनिस्टर मौके पर आये, उन्होंने वहा की स्थिति को समझा और जरूरी हिदायते दी। मेरा यह कहना कि अगर सरकार को ब्लेम करने से प्राब्लेम हल हो जाती है तो कीजिए, लेकिन इससे आप क्या आग बुझा रहे है? सरकार को ब्लेम कीजिए—लेकिन इससे प्राबलम हल नही होगी। सरकार अपनी जिम्मेदारी को उठायेगी, जो उसे करना होगा, वह करेगी लेकिन आप भी अपनी जिम्मेदारियों से बच नही सकते।

समापति महोदय, मैं ऐसा मानता हू कि देश मे जो कुछ हो रहा है—यह सब एक दूसरे का हिस्सा है—ये सब लिक्स हैं—links in the chain of efforts being made in this country to create chaos and lawlessness.

इस में कुछ पार्टीज एक दूसरे को कम्पीट कर रही हैं, सब सोचे बैठे है कि देश मे रिवोल्यूशन आने वाला है, इसको कौन लीड करे, राइटिस्ट्स करे लेफ्टिस्टस करे—सब एक दूसरे से आगे बढने की कोशिश कर रहे है ...(व्यवधान)

मैं बडे अदब से एक बात सिम्बोलिकली कह रहा हू—ये कोशिशे किसी भी नाम मे की जाए —कम्यूनल दगे के नाम से की जाए, रीजनल स्लोगन्ज के नाम से की जाए, प्राइज राइज के नाम से की जाय, करप्शन के नाम से की जाय वाजपेयी जी ने कहा पीसफूल एक्स्ट्रा कास्टीचूशनल मीन्स का इस्तेमाल किया जाय, मैं कहूगा आप जरा इस की स्पीचो को देखिये—आप को मालूम होगा कि ये लोग बाय-बायलेस इस कन्ट्री की डेमोक्रेसी को तबाह करना चाहते है; याद रखिये अगर मुल्क में फिरकेवाराना दगे होंगे तो यह जम्हूरियत कायम नही रह सकेगी। इन्होंने अपने भाषण मे यह भी कहा कि मन्दिरों और मस्जिदो का इस्तेमाल इन कामो के लिए नही करने देना चाहिए, इस किस्म की ला-लैस एक्टिविटीज के लिए नही करने देना चाहिए। लेकिन मैं उन से पूछता हू—यह वाक्या हिन्दुस्तान मे पहला वाक्या नही है, इस से पहले बीसियो दफा वाक्य हुए है—मैं उन को चलेन्ज कर रहा हू आप अपनी किसी स्पीच को निकाल कर बतला दे जहा पहले उन्होंने यह कहा हो कि किसी मन्दिर या गुरुद्वारे का इस किस्म की एक्टीविटीज के लिए इस्तेमाल नही होना चाहिए—हालाकि मैं भी इस ख्याल से मुत्तफिक हू।

एक बात कह कर मैं खत्म करूगा डेमोक्रेसी अगर इस मुल्क मे कायम रही तो यह मुल्क कायम रहेगा, लेकिन अगर डेमोक्रेसी नही रही तो एक बात कहना चाहता हू—मैं ने उस दिन भी कहा था—आज फिर सिम्बोलिकली कह रहा हू—मेरे भाई ज्योतिर्मय बसु की गर्दन काफी स्टिफ है, जुबान उन की तेज है—सबसे पहला नम्बर लैम्पपोस्टर पर उन्ही का होगा, ये फासिस्ट पार्टी सब से पहले उन का ही खत्म करेगी, उस के बाद माइल्ड-मैनर्ज इन्द्रजीत गुप्ता साहब का नम्बर आयेगा, मेन्टन लुकिंग हीरन मुखर्जी साहब का नम्बर आयेगा सीधे लटका दिया जाएगा, मैं मिश्रा जी की तरफ भी देख रहा हू—उन को भी कोई बचन नही देगा, और फिर वाजपेयी जी को भी कहता हू—

Even you will be honoured out by your hoardes—RSS hordes—because then they would not need a parliamentarian.

पीलू मोदी चले गए—पीलू मोदी साहब जो अपनी बेटी-पर्सनलिटी और जबान की ताकत से इस हाउस मे डामिनट करते है, अगर डेमोक्रेसी चली गई तो वे भी बेट-लैस पर्सनलिटी बन जायेंगे, उन की जुबान बन्द हो जाएगी।

आखरी बात समर गुहा साहब से कहना चाहता हूं—वे डेमोक्रेटो है, उन का डेमोक्रेसी में विश्वास है, लेकिन उन को कोई बंगला देश जाने नहीं देगा। हमारे मधु लिमये भी चले गए—

The laborious Mr. Madhu Limaye who always has a point to make and makes it rather grimly.

सभापति महोदय : अब आप खत्म कीजिए।

श्री एच० के० एल० भगत : मैं चेयर का इस ओर बतलाना चाहता हूं। मैं कह रहा था—

Mr. Madhu Limaye will have no opportunity to makes a point in a grim manner.

मोरारजी देसाई साहब का मैं बहुत आदर करता हूं, वह भी इन्दिरा जी के जानसीन नही बन सकेंगे जय प्रकाश बाबू को तब कपडा बांधने की जरूरत नही रहेगी, उन की जुबान भी आटोमेटिकली बन्द हो जाएगी, कोई उन को बोलने नही देगा।

Take it as coming from one of your very small colleague.

आज जो सवाल हमारे सामने आया है—

As I am one of your humble colleagues in Parliament, take it as a warning of one citizen of India.

अगर डेमोक्रेसी खत्म हुई तो सब कुछ खत्म हो जाएगा। वाजपेयी जी, यह डुप्लीसिटी, लीगल-फिवर्लिंग और टैकनीकल एक्सप्लैनेशन की बात को छोड़ कर साफ़ साफ़ तय कीजिए—आप को इस मुल्क के निजाम को बचाना है या नही, डेमोक्रेसी की रक्षा करनी है या नही, अगर हम नही कर सके तो याद रखिये इस मुल्क के करोड़ों लोग हम पर हमेशा लानत भेजेंगे।

SHRI JYOTIRMOY BOSU (Diamond Harbour): Mr. Chairman, the latter part of Shri Bhagat's speech has indeed amused many of us. The Communist have fought Fascists through decades and so these therats will never make us change our process and our methods. We have also seen the fangs of the ruling party in West Bengal, how close they are to Fascists in their actions. We will face the right reaction with full vigour, and we are not at all afraid of that.

Coming to the real business, namely the riots in Delhi, Shri Bhagat took us to Faridabad when we were trying to travel to Ghaziabad. The riot that has taken place on Sunday and afterwards is the worst ever riot since independence, and it has taken place within a stone's throw of the Home Minister's residence and the seat of the Home Ministry. This shows the utter failure to protect the minorities by this Government because of which the confidence of the minorities in the whole sub-continent has been shaken altogether.

Now on earth in the capital of this country a riot like this could take place and move forward within hours without any effective control. I could have understood if the riot had taken place in Karimganj. Then I could have understood that the Government could have an alibi to say that it was in a remote corner. But Sadar Bazar is within a stone's throw of this Government. According to hospital sources, 28 people dies, 300 were injured, many buildings gutted and the loss of property is modestly valued at Rs. 1½ crores. I had been to that area three times since Sunday and, according to my knowledge, in that area 60 shops belonging to the minorities have been burnt, five mosques have been burnt and partially demolished also, and the intensity of the fire was so severe that even pucca roofs collapsed, thus rendering many homeless. And I regret to reveal that most of them belong to the minorities.

I would request the Home Minister to take the trouble of going to premises No. 1088 at Kishanganj. In fact, there are many other houses in that area which are in the same position. In that building petrol-soaked rags were thrown from outside with the result that the premises, which houses

[Shri Jyotirmoy Bosu]

30 to 50 families, was completely gutted and the roof, which would be at least 15" thick, collapsed because of the intensity of the fire. It was not petrol-soaked rags alone but even petrol cans were hurled at the fire. In the same area, twice within a short time, riots have taken place. Strengely enough, it happened—I do not know, I may be wrong; tell me, if I am wrong—whenever there was a leftist united bandh. We had one bandh on the 3rd of May this year and we had one last year.

It is very strange.

Last year, 11 months ago, a riot took place. Is it not a fact that the same Deputy Commissioner is still there? What action has been taken against him? Is it not a fact that this gentleman has in the past been a sympathiser of a particular political out look? We want to put a question bluntly to the Home Minister. We must know whether this Deputy Commissioner had been lenient, had been inefficient and had a design to help somebody. We want to know whether allegations have come to his notice that this person in the past had been a sympathiser of a particular set of people.

Another interesting thing here is that a bye-election to the Metropolitan Council in Paharganj area is also pending. Incidentally, I would like to quote what Shrimati Indira Gandhi had once said presiding over the National Integration Committee of the A.I.C.C.:

> "The part played by the politics and their encouragement of antisocial elements must also be considered. A point to note is that such disturbances are more frequent near election time."

We would like to be enlightened on this from Mrs. Indira Gandhi or Mr. Dikshit or from both.

The worst thing was the total failure of the Administration and the Police. That failure was greatly responsible for the losses. If I were Mr. Dikshit, I would have resigned because this is a glaring instance of the total failure on the part of the Home Minister. I would like to know from the Home Minister as to when he first got the information about the rioting on Sunday and what action did he take and at what time.

I am told by very reliable people repeatedly, by many persons, that the police did not arrive in time. The trouble started at 1.30 P.M. on Sunday. Mobs of 500 to 2000 in each group were given a free hand to indulge in arson and rioting. As I told you, the hurling of petrol-soaked rag balls was, one of the main weapons. I have told you the premises No 1088 which has a frantage on Bahadurgarh Road. This is one example.

I may tell you that *jhagra* over sugarcane juice drinking is only a plea, a pretext. I asked senior police officers as to how many arsons took place. Because they are accustomed to deal with a particular type of Congress Ministers, they can always give cock and bull stories. Two or three times, immediately in half an hour's time I talked to two or three fire-men of the Fire Brigade. I started by asking them, "You must be very tired, working very hard since yesterday." And the reply was "Yes Sir. We have never had any rest at all. We have not been able to remove our helmets."

Two or three arsons, any man with commonsense will understand, will not keep the Fire Brigade people occupied for 36 hours. So, it has been a continuous progress. The Paharganj Police Station arrested 17 persons for setting fire to properties belonging to minorities but housed in houses belonging to other communities. Here, I would like to ask Mr. Dikshit about it. My information is that they have been treated rather leniently. I would like to

know what specific action has been taken against them.

Further, I am very distressed to hear that some people frantically phoned the Prime Minister, the Home Minister, the Lt. Governor, the Deputy Commissioner, the Superintendent of Police and the Police Station from 1-30 P.M. and one Mr. Kadar told me that he got no response, no help, from any of these quarters. I am told that the Prime Minister spoke to a Member of Parliament of this House at 5 P.M. that army was being summoned and it may be deployed. That gentleman again at 5.30 phoned up to ask if the Army had been deployed, and he was told इसमें देर लगती है, it could not come. It is very difficult to accept that bacause if they really meant business, then they should have come. I want to ask why the Police did not come during the first 2½ hours. Why is it that the Border Security Force was brought after 2½ hours only? Why is it that the first set of policemen were passive? Why is it that the policemen who came later connived with the miscreants and they fired their teargas shells and bullets towards the houses where minorities were living. These are very serious matters. If this can happen in Delhi, you can well imagine what can happen in Meerut. Gen. Shahnawaz Khan will recall what happened in 1968. You have a huge Home Ministry. And what is your Budget? It has gone up from Rs. 3 crores to Rs. 160 crores for Central policing. Is it for this that the Delhi Police expenses have touched over Rs. 10 crores? It is a shame on you that you consume people's hard-earned money like this. You have a Home Minister who does not know the difference between a butt and a barrel. I have had lots of talks with him. The most regrettable thing is this. When some of us were very anxious to help them in the situation, I got in touch with Mr. Dikshit and told him that we, six or seven MPs from the Opposition, wanted to do some good, wanted to help the administration and, therefore, we wanted to go there. He said, "please get in touch with the Lt. Governor; I am speaking to him". I spoke to Mr. Baleswar Prasad and he said, "I am speaking to Paharganj and Sadar Bazar Police Stations". So, myself and my friends went and sat in the Paharganj Police Station for 45 minutes, to be told by a puny inspector that no instructions had been issued and that we could not go. Then we went to the Sadar Bazar Police Station. There also we met with the same fate. And when we hear that the Congress MP was allowed to go, discrimination was made, I am compelled to say that you want to make politics even in a critical situation like this. It is really a most shameful attitude. Mrs. Gandhi should assess whether the Home Minister is worth his salt, whether he is capable of running the affairs of a vast country like ours and particularly when the country is facing serious trials in various spheres, particularly due to the economic crisis and failures. She has to take a decision. If she is guided by other considerations, then it will be terrible.

They have talked about firing. We are told that shotguns, pistols and revolvers were used. There were two types of firing. We have analysed them clearly. One set of people used fire-arms as a mode of aggression; they fired to move forward as an expeditionary force. Then there was another set of people. I must frankly say that Mr. Vajpayee's parents belonged to the same religion as my parents belonged to. I profess no religion. It is a fact that the minorities had to resort to firing in desperate self-defence, when the police did not come, when they were being attacked, when they found that murders were being committed, houses were set on fire. What would you do in such a situation when you have fire-arms? You

[Shri Jyotirmoy Bosu.]

do not carry fire-arms for display. You fire. I would do the same thing. So, they fired. What is wrong in that? But the question is: Mr. Ved Marwah was fired at. He is a triple-striped uniformed policeman and I am a little confused to understand whether a man belonging to the minority community will have the courage and guts in this country to fire at the DIG, Police with a posse of policemen around him. I do not accept it.

17 hrs.

The question is: at one place a very interesting thing has happened. In one place, a Plymouth car was taken out of the garage and burnt. I inquired why it has been done. The car belongs to a man from the minority community and the garage belongs to a person of the opposite community. So, the people who wanted to set fire to the car did not want to damage the building belonging to the somebodyelse. So, these are the happenings.

What happened? Why were the rowdies not taken care of by the Police well in advance? I saw the Home Minister. I repeatedly said, 'If I were you, I would have rounded up the rowdies.' I saw the Prime Minister and made the same suggestion at 10 p.m. I am told that many of them are very much at large and tension is growing and we never know what is going to happen tomorrow or tonight. We would like to know what is happening.

Then, about the supply of food and relief. Children are starving. No curfew passes. Curfew passes to a selected few, a chosen and favoured few and not to all—curfew passes, food, milk, water etc. We have a huge Red Cross establishment, well subsidised from people's money. What have they done? I have to chase them, 'What are you doing my dear General Maitra?' They were pushed to go in and see Mr. Mirdha but so far I do not know what they have been able to do.

What I say is, the recruitment to the Defence Services and the Police forces is extremely important. There are recommendations which say that due weightage should be given. We went to Meerut in 1968. The percentage of Muslims there was about 38 per cent at that time. I asked them, 'How many Sub-Inspectors and Constables are there from the minority community?' The figures they gave were next to nothing. If you want to really create confidence, their share in the recruitment to Police force and the Defence forces must be increased.

Then, about verification of new recruits. Do you verify the antecedents? You do it for me. A CPM man applying for a job, you cannot touch with a barge-pole, but if somebody who had been an out and out communalist all his life, applies, he is most welcome to come and work in the Home Ministry. I am telling you on my responsibility. The Home Ministry is full of such kinds of communal elements. That is why to-day these things are happening. I will give one or two incidents to show how unfair they are.

Take, for example, the case of one little Muslim girl, Miss Rehmani of Lucknow whose boy-friend was short at and killed. This girl has been sanctioned parole but is not being released. What is the noting? I am told that if she is released, there will be communal tension. So, Miss Rehmani, aged 25, cannot be released.

Then, a former Member of Parliament, Shri Badrudduzza two years under MISA. No trial, no bail and after a lot of pressure from here, we have succeeded in getting his release and now after two years, no charge-sheet.....

MR. CHAIRMAN: The hon Member's time is up.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Only one thing I want to say. My demand is that full and adequate compensation

should be given to those who have suffered in these riots, irrespective of caste, creed and community and I demand a parliamentary probe, suspension of officers who are posted there, senior officers particularly, and Shri Dikshit has no moral right to continue as the Home Minister.

श्री शशि भूषण (दक्षिण दिल्ली) : श्री बसु ने काफी मुद्दों पर प्रकाश डाला है। उन्होंने कहा हिन्दुस्तान में माइनोरिटीज सेफ नहीं है। इसको कोई नहीं मान सकता। दुनिया के दूसरे देशों से यहां ये ज्यादा सेफ हैं हालांकि हम बहुत अच्छा माहौल इनके लिए यहां नहीं बना पाए है। मैं उनको याद दिलाना चाहता हूं कि पैलेसटाइन में अरब माइनोरिटीज के साथ क्या हुआ, चीन में मंजोलों और मांचू अल्पमत के साथ क्या हुआ, साउथ अफ्रीका में काले लोगों के साथ क्या हुआ, अमरीका में काले लोगों के साथ क्या हुआ? हमारे देश में सब से बड़ी पार्टी कांग्रेस है, राष्ट्रीय एकता का हमेशा से उसने झंडा अपने हाथ में रखा है। इसके लिए गांधी जी ने अपनी कुर्बानी दी, गणेश शंकर विद्यार्थी ने कुर्बानी दी, सैक्यूलर सोसाइटी बनाने के लिए हमेशा पंडित जवाहर लाल जी ने प्रयत्न किया। जिस तरह से आज भी हमारा मकसद समाजवाद का है उसी तरह से सैक्यूलर सोसाइटी बनाने का भी है। उसका हम हमेशा प्रयास करते हैं। लेकिन कुछ जमायतें हमारे देश में ऐसी हैं जिन को आप भी जानते हैं और हम भी जानते हैं जो इस में विश्वास नहीं करती हैं। सैनिक पैरेड सुबह शाम करती है। हाथों में डन्डे लेकर छुरे ले कर, भाले ले कर ट्रेनिंग लोगों को देती है। क्यों देती है? इसलिए की जब कभी दंगे हों तो ये उन में भाग लें, अफवाहें फैलाएं और दंगा कार्यवाही शुरू कर दें। जब कभी दंग होते हैं आम तौर पर यही कहा जाता है और अंग्रेजों के जमाने में भी यही कहा जाता था कि धार्मिक स्थानों से पत्थर बरसाए गए, गोलियां चलाई गईं। यही कहा जाता है कि फला जानवर की हड्डी फैंक दी गई और इस तरह से दंगे करा दिए जाते हैं। आज भी मस्जिद का जिक्र किया गया है। यह मस्जिद इतनी छोटी है कि वहां से कोई गोली चला कर बच नहीं सकता, सम्भव भी नहीं बचना। सारे शहर में अफवाह फैला दी गई कि मस्जिद से गोली आ रही है, फलां जगह से आ रही है। इस तरह की अफवाहें जो लोग फैला कर दंगे करते हैं हम चाहते हैं कि सरकार उन पर बंदिश लगाए। यह हमारी हमेशा से डिमांड रही है। इस प्रजातंत्र की छत्रछाया में अब तक इन पर बैन नहीं लग सका है। मैं जानना चाहता हूं कि कितने और लोगों की कुर्बानी दी जाएगी इन लोगों के सामने। जितनी भी इस तरह की मुस्लिम या हिन्दू या दूसरी जमायतें हैं, उन पर आप बंदिश लगाएं ताकि लोगों को इस से छुटकारा मिल सके। हमारे पास इतनी बड़ी पुलिस और फौज है। फिर नेकर पहन कर पैरेड करने वालों की क्या जरूरत है? क्या उन्हें सेना पर विश्वास नहीं है, सरकार पर विश्वास नहीं है? अंग्रेजों के जमाने में यह समझ में आता था कि युनियन जैक के साथ साथ हरे और पीले झंडे हों लेकिन वे भी इनको बैन नहीं कर सके। हम नहीं कर सकते हैं। यह बात अब समझ में नहीं आती है? शायद वही प्रवृत्ति जो तब थी आज भी है। आज भी आप सुबह किसी भी पार्क में जा कर देख लें आपको लोग परेड करते हुए मिल जाएंगे। उन पर जब तक बैन नहीं होता दंगे खत्म नहीं होंगे।

यह कहा जाता है कि पुलिस देर में पहुंची जब आग लगी उससे कोई पंद्रह मिनट बाद पुलिस पहुंच गई थी एसपी, आई जी तथा सारे अफसर पहुंच गए थे। हिन्दुस्तान की प्राइम मिनिस्टर और होम मिनिस्टर भी पहुंचे वहां आग लगाने का क्या है? एक मिनट में लगाई जा सकती है। पहले से प्लान न किया हो तो ऐसा नहीं हो सकता है। एक बात में इस बार एकता जरूर रही। कुछ हिन्दु इलाकों के अन्दर मुसलमानों ने गोलियां चलाई और कुछ मुसल-

[श्री शशि भूषण]

मा न इलाकों के अन्दर हिन्दुओं ने चलाई। आप देखें कि इन दंगों में कांग्रेस कार्यकर्ता भी मारे गए हैं। सत्य नारायण को आप जानते हैं। यह कांग्रेस के एक अच्छे कार्यकर्ता थे। न मुसलमान और न हिन्दु उनके प्रति द्वेशभाव रखते थे। वह क्यों मारे गए मारने वाले कौन थे? डी आई जी भरवाह साहब को छर्रे लगे हैं? उनको ये मारने वाले कौन थे? दस दिन पहले मेरी उन से बात हुई थी? उन्होंने कहा था कि दिल्ली में फ़िजा बहुत खराब है हम लोग चाहे जितने सिक्योर हों लेकिन हमें भी कभी भी गोली लग सकती है देश में ऐसा ही वातावरण बना हुआ है। यह दस दिन पहले की बात है। आज उनको गोली लग गई। हर आदमी साम्प्रादायिक ताकतें जब हाथ में माचिस लिए फिरती हों तो उन से देश को खतरा होना स्वाभाविक है। सरकार ने बहुत तत्परता से काम लिया इस मामले में। लेकिन वह बहुत घना इलाका है। वहां बहुत कम पुलिस चौकियां है। एक दो डिवीजन और वहां बनने चाहिए। वहां पुलिस चौकियां ज्यादा बनानी चाहिए क्योंकि आम तौर पर इस इलाके में काफी दंगे होते आये हैं, पता नहीं इस दंगे मे लाइसेंस वाली बन्दूकों का इस्तेमाल किया गया है या गैर-लाइसेंस लुदा बन्दूकों का। जो लोग मरे हैं पता नहीं उन में से कितने सरकारी गोलियों से मरे हैं और कितने गैर-सरकारी गोलियों से मरे हैं। लेकिन जो कुछ भी हुआ है वह दिल्ली के सभी नागरिकों के लिए शर्म की बात है? इस बात की कोशिश करनी चाहिए कि आईन्दा ऐसा न हो।

आज और कल दिन भर इस तरह की अफ़वाहें फैलाई जाती रही है कि फ़लां पुलिस वाला मर गया यह हो गया वह हो गया फ़लां जगह लोग इकट्ठे हो रहे हैं चादनी चौक में गोली चल गई है आदि। लेकिन फिर भी स्थिति को बिलकुल काबू में कर लिया गया है। सरकारी अधिकारी और सामाजिक कार्यकर्ता इस बात के लिए बधाई के पात्र हैं कि उन्होंने सिचुएशन पर इतनी जल्दी काबू पा लिया है।

लेकिन जो ताकतें ये दंगे करवाती है और बाहर की जो ताकतें उन की मदद करती है मैं चाहता हूं कि सरकार उन की तरफ़ ध्यान दे और उन के खिलाफ़ सख्त कार्यवाही करें। हिन्दुस्तान में राइट रीएक्शन और लेफ्ट रीएक्शन दोनों मिल कर यहां की आबो-हवा को खराब करने की कोशिश कर रहे हैं। लेफ्ट रीएक्शन से मेरा मतलब नक्सलाइट्स से है। हम ने देखा है कि राइट रीएक्शन किस तरह गुजरात, बिहार और दूसरी जगह प्रजातन्त्र पर कुठाराघात कर रहा है और क्या तरीके अपना रहा है कोई साधुओं के नाम पर कोई धर्म के झंडों के नाम पर कोई त्याग और बलिदान के नाम पर यह सब कुछ कर रहा है। ऐसे लोगों से हम को सतर्क रहना चाहिए।

जितनी नाजुक घड़ी से आज हमारा देश गुजर रहा है पहले कभी हम को वैसी स्थिति का सामना नहीं करना पड़ा है? आर्थिक कठिनाइयों और सामाजिक स्थिति के कारण देश को गम्भीर समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। जो विध्वंशक ताकतें संगठित हो कर काम कर रही है खास तौर से उन से हमें सतर्क रहना चाहिए। इस के लिए यह जरूरी है कि कम्यूनल सोसिज के लिए इन्टलिजेंस का एक विभाग अलग से बनाया जाए। आज तक कम्यूनल फोसिज से पैदा होने वाले भयानक खतरे को ठीक तरह से नहीं समझा गया है। हम देखते हैं कि कम्यूनल दंगों के अपराधी छट जाते है और कम्यूनल दंगों मे दूसरों को मारने वालों में से किसी को भी आज तक फांसी की सजा नहीं हुई है। लोगों को पता है कि कुछ लोगों के पास रिवालवर और दूसरे हथियार हैं लेकिन फिर भी उन को कोई सजा नहीं दी गई है। साम्प्रादायिक दंगों में लोग पुरानी दुशमनी भी निकालते है।

साम्प्रदायिक दंगों में हिस्सा लेने वालों के खिलाफ़ कार्यवाही करने के लिए सख्त कानून बनाया जाए, ताकि हम ऐसी स्थिति

से अच्छी तरह से निपट सके। मैं फिर कहूंगा कि सरकार साम्प्रदायिक जमातों के खिलाफ़ सख्त कार्यवाही करे और उन को बैन करे।

श्री रामावतार शास्त्री : (पटना) सभापति महोदय जिस समस्या पर हम विचार कर रहे हैं सचमुच में वह एक बहुत ही नाजुक समस्या है। लेकिन इस नाजुक सवाल के बारे में स्थगन प्रस्ताव पेश करते हुए श्री वाजपेयी ने जिस दृष्टिकोण से अपनी बातें रखी हैं उन से साम्प्रदायिक दंगे कम होने के बजाय और भड़केंगे। उन्होंने जो विचार प्रकट किये हैं मैं उनसे सहमत नहीं हूं।

मैं यहां स्पष्ट करना चाहता हूं कि इस स्थगन प्रस्ताव का समर्थन करने के लिए हमारे कुछ कारण हैं। दिल्ली हिन्दुस्तान की राजधानी है। यहां गृह मंत्री और गृह मंत्रालय, दिल्ली प्रशासन और उनकी लाडली दिल्ली पुलिस की नाक के नीचे इस तरह की खौफनाक वहशियाना घटना घटी। यह पूरे हिन्दुस्तान के लिए दुख की बात है और स्वतन्त्र तथा धर्म-निरपेक्षता की हमारी नीति को चुनौती है। इसलिए इस स्थगन प्रस्ताव के जरिये गृह मंत्री और गृह मंत्रालय की निन्दा करने के उद्देश्य से ही हमारे दल ने इस स्थगन प्रस्ताव का समर्थन किया है।

सदर बाजार और आजाद मार्किट में जो कुछ भी हुआ है वह एक पूर्व-नियोजित कार्यक्रम के अनुसार ही हुआ है। केवल यह बात नहीं है कि दो आदमी झगड़े और इतने बड़े पैमाने पर लूट-मार और आगजनी हो गई। जून, 1973 में भी इस तरह की घटना हुई थी और उस समय भी यही कहा गया था कि कि दो गुंडे आपस में लड़ गये। इतने बड़े पमाने पर आगजनी इस बात का सबूत है कि साम्प्रदायिक तत्वों की तरफ़ से यह एक पूर्व-नियोजित कार्यक्रम था जिससे जनसंघ और आर० एस० एस० के लोग अपने को अलग नहीं कर सकते।

मैं खुद एक प्रतिनिधिमंडल के साथ उस इलाके में घूम आया हूं। किशनगंज और आजाद मार्किट के इलाके में शायद ही कोई मकान या दुकान बची हो। और उस इलाके में कौन लोग रहते हैं? अल्पसंख्यक जाति के लोग वहां रहते हैं। उस इलाके को बिल्कुल मरघट बना दिया गया है कोई चीज वहां नहीं बची है। पांच लाख रुपये का एक कारखाना जला दिया गया। एक व्यक्ति की तीन गाड़ियां गैराज में खड़ी हुई थीं उनको निकाल कर जला दिया गया। यह देख कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं कि क्या हिन्दुस्तान में रहने वाले हम लोग इतने वहशी हो गये हैं कि हम अपने भाइयों को भाई नहीं समझते और उन पर इस तरह ओछे तरीके से वार करते हैं।

यह ठीक ही कहा गया है कि वहां पुलिस लगभग दो घंटे के बाद पहुंची। वहां के अल्पसंख्यक लोगों का कहना है कि पुलिस ने वहां जाकर दंगाइयों की और मदद की। इस बात की जांच होनी चाहिए। इतना ही नहीं पुलिस वाले और उनके अफ़सर डर के मारे घरों में घुसे हुए थे जब कि दंगाई लोगों को मार रहे थे सामान लूट रहे थे और जला रहे थे। मुझे तो भय है कि दिल्ली पुलिस और हुकूमत में साम्प्रदायिक तत्व और जनसंघ के लोग घुसे हुए हैं। पटना में 18 तारीख़ को जो आगजनी की गई थी उसके सम्बन्ध में आर० एस० एस० और जनसंघ वालों के नाम लिये गये थे और यहां भी उनका नाम लिया जा रहा है। उस समय श्री उमा शंकर दीक्षित इस बारे में चुप रहे थे और उन्होंने कुछ कहने की कोशिश नहीं की थी और शायद आज भी वह ऐसा ही करेंगे।

[श्री रामावतार शास्त्री]

मुझे सन्देह होता है कि वह उन तत्वों के प्रति नर्मी की नीति बरतते हैं—नर्म हैं और रेलवे मजदूरों तथा आम जनता के प्रति गर्म हैं। मुनाफाखोरों, गल्लाचोरों और भ्रष्टाचारियों के खिलाफ तो कोई कार्यवाही नहीं की जाती है लेकिन जो लोग देश में जनतन्त्र की हिफाजत के लिए संघर्ष कर रहे हैं जन-आन्दोलन कर रहे हैं उन पर झट से एम० आई० एस० ए० और डी० आई० आर० लागू कर दिया जाता है ।

अभी अभी बड़ौदा में उस में 200 रेल कर्मचारियों को गिरफ्तार किया गया । एक तरफ इस तरह से आप कर रहे हैं और दूसरी तरफ आप के नाक के नीचे इस तरह से मैसाकर हो रहा है जनता का और खास कर के अल्पसंख्यक लोगों का और आप चुपचाप टुकुर टुकुर ताक रहे हैं । सरकारी रिपोर्ट के मुताबिक इस दंगों की मत्यु हुई और गैर सरकारी रिपोर्टों के मुताबिक 20 आदमियों की मत्यु हुई । कहा जाता है उस से भी ज्यादा हो सकती है । उसमें दोनों सम्प्रदाय के लोग हैं । लेकिन मैं यह जानना चाहता हूं कि जिनके मकानात या दूकाने जली क्या मंत्री जी यह बतायेंगे कि उनमें से ज्यादातर अल्पसंख्यकों के मकान और दुकानें हैं या नहीं ? स्पष्ट आप बताएं कि क्या बात है ? वहां आम जनता जो गरीब है वह इस दंगे में शामिल नहीं है । मैं पहले ही कह चुका हूं कि कुछ संगठित लोग कुछ जो उप-चुनाव होने वाले हैं उनको निगाह में रख कर इस तरह के दंगे करवा रहे हैं । आम जनता का उससे कोई मतलब नहीं है और उनको तरजीह देती है पुलिस उनके खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं करती । इतना ही नहीं अभी श्री भगत बोल रहे थे तो उन्होंने कम्युनिस्ट पार्टी और मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के वक्तव्य का जिक्र करते हुए कहा कि यहां के जनसंघ के लोगों ने एक प्रस्ताव पास किया है कि 24 घंटे के अन्दर कार्यवाही नहीं करोगे तो फिर हम आन्दोलन करेंगे । इनका आन्दोलन तो इसी ढंग का ही आन्दोलन होता है । इनका जन-आन्दोलन दंगा कराने का ही होता है । गल्ला चोरों और चोर व्यापारियों के खिलाफ लड़ने का इनका कोई जन आन्दोलन न आज तक चला है न चलने वाला है । इसी तरह की धमकी इन्होंने 1973 के जून में भी दी थी और उस समय मंत्री महोदय को याद होगा सत्याग्रह आन्दोलन हुआ था । उस समय भी सत्याग्रह आन्दोलन दंगा भड़काने के लिए था और अभी भी 24 घंटे के बाद आन्दोलन करेंगे तो उसमें भी और क्या होगा ? इस तरह से ये आप से अपने पक्ष में दंगा करने वालों के पक्ष में नाक रगड़वाने की कोशिश कर रहे हैं । इससे सावधान रहने की जरूरत है । । कहा गया कि जब मजदूर आन्दोलन करते हैं किसान आन्दोलन करते हैं, शहरी जनता टैक्स की बढ़ती के खिलाफ आन्दोलन करती है महंगाई के खिलाफ भ्रष्टाचार के खिलाफ आन्दोलन करती है ऐसे मौके पर इस आन्दोलन से जनता का दिमाग फेरने के लिए, उस में फूट डालने के लिए इस तरह के कुचक्र ये साम्प्रदायिक तत्व रचते हैं । आज ठीक वही बात आ गई कि 3 मई को ऐसा शानदार दिल्ली बन्द हुआ, तमाम कारोबार बन्द रहे ..... (व्यवधान) ..... सुनिए सुनिए, इन का साथ मत दीजिए, इतना शानदार दिल्ली-बन्द हुआ उससे हमारे जनसंघ के भाइयों के सीने पर सांप लोटने लगा । उस सफलता को इन्होंने देखा तो सोचा कि उसको गलत रास्ते पर ले जाओ । उस बीच में भी इन्होंने कोशिश की लेकिन वे कामयाब नहीं हो सके । तो अब ये कामयाब हो रहे हैं । इस तरह से सारे हिन्दुस्तान में दक्षिण पन्थी तत्वों को समेट कर एक करने के लिए ये आन्दोलन कर रहे हैं प्रगतिशील नीतियों के खिलाफ । बिहार में भी इनका

एक आन्दोलन चल रहा है विधान सभा को भंग करो, नारा यह है और दीवारों पर क्या लिखा जा रहा है ? मेरे साथ चलें जनसंघ के भाई पटना में, दरभंगा में, कई जगह दिखला दूंगा, नारा दिया जा रहा है—गाय हमारी माता है, गफूर गाय खाता है। यह क्या है ? इस तरह की बातें की जा रही हैं .....

श्री फूल सिंह वर्मा (उज्जैन) . यह गलत है ।

श्री रामावतार शास्त्री : मेरे साथ चलिए, मैं दिखला दूगा ।

श्री फूल सिंह वर्मा· यह सी पी आई वालों ने लिखवाया है जो जय प्रकाश बाबू को डिफेम करना चाहते हैं, जनसंघ को बदनाम करना चाहते हैं, इन्होंने लिखवाया है।

सभापति महोदय : वर्मा जी, आप बैठ जाइये। आपको मैंने परमिट नही किया है। आपके लीडर जवाब देंगे आप उन से कह दीजिएगा।

श्री रामावतार शास्त्री : पूरे हिन्दुस्तान मे इनका यह कुचक्र चल रहा है साम्प्रदायिक तत्वों के जरिए दक्षिण पन्थी तत्वों को समेटने का। इसलिए मैं मांग करना चाहता हूं कि आप इसके लिए एक जांच कमीशन नियुक्त कीजिए और नहीं तो पार्लियामेंट के मेम्बरों के जरिए जांच करवाइए। दूसरे, तमाम लोग जो गुनहगार हैं, आपने अभी तक ज्यादातर मुसलमान आवाम को गिरफ्तार किया है, अगर यह बात सही है तो यह निन्दा की बात है, आप तमाम कल्प्रिट्स को वह कोई भी हों, हिन्दू हों, मुसलमान हों, उनको गिरफ्तार कीजिए और उनके खिलाफ सख्त कार्यवाही कीजिए, उन को सख्त सजा दीजिए। फायर आर्म, बन्दूक या और विस्फोटक पदार्थ जो घरों में पड़े हुए है उनको निकलवा कर जब्त कीजिए। अल्पसंख्यकों की रक्षा का पूरा पूरा प्रबन्ध कीजिए और तमाम लोगों के पुनर्वास और खाने पीने की व्यवस्था कीजिए जो लोग मारे गए हैं उनके साथ हमारी हमदर्दी है और हम उनके प्रति समवेदना प्रकट करते हैं। साथ ही मांग करते हैं कि उनके परिवार के लोगो को उचित मुआवजा दीजिए। दो हजार रुपया मुआवजा नाकाफी है। श्रीनगर में जो नेशनल इंटीग्रेशन कौंसिल मे फैसला किया था उन फैसलों को अमल मे लाइए और जो लोग उस फैसले में दखल दे उनके खिलाफ कार्यवाही कीजिए। आर० एस० एस०, जनसंघ और जमायते इस्लामी पर रोक लगाइये। यह हमारी मांग नही, आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी यह माग कर चुकी है। आखिर में मैं कहना चाहता हूं दीक्षित जी से कि अगर उनसे यह नही सभल पाता है तो वे जनसघ से दोस्ती निभाना चाहते हैं तो मेहरबानी करके वे गद्दी खाली कर दे। दिल्ली पुलिस में आमूल परिवर्तन आप कीजिये। उसमे अल्पसख्यक जाति के लोगों को भी भर्ती कीजिए। जहां तक मेरी जानकारी है वे उसमें बहुत कम है या नही के बराबर है। इन सभी सवालों का जवाब वे दे देंगे तभी इनका दामन पाक व साफ होगा और तभी सचमुच मे हम देश में जनतन्त्र और धर्म-निरपेक्षता की नीति की हिफाजत कर सकेंगे ।

श्रीमती सुभद्रा जोशी (चांदनी चौक) : सभापति जी, अभी दिल्ली मे जो साम्प्रदायिक दगे हुए उसकी कुछ चर्चा यहां पर हुई और कुछ सभासदों ने उन पर रोशनी डाली। मैं तो गृह मंत्री जी का ध्यान पीछे ले जाना चाहती हूं। 16–17 मार्च को दिल्ली में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के ऊपर के नेताओं की मीटिंग हुई। उस मीटिंग में यह कहा गया, उनके एक उच्च अधिकारी ने कहा कि इस वक्त जनता में बहुत क्षोभ और बहुत रोष है। जनता का क्षोभ और रोष बहुत उचित है। आर एस एस का काम है उस रोष और क्षोभ को दिशा देना। उन्होंने कहा कि इस दिशा देने की जिम्मेदारी से राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ

[श्रीमती सुभद्रा जोशी]

अलग नहीं रह सकता और हमारा फर्ज है कि हम उसको दिशा दें। उन्होंने यह भी कहा—सभापति महोदय—मई में हर डिस्ट्रिक्ट में यूथ मीटिंग्ज कीजिये, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कार्यकर्ताओं को इस बात की ट्रेनिंग दीजिए कि जनता को अपनी तरफ़ किस तरह से खींचा जा सकता है। उन्होंने कहा कि आज तमाम लोगों के अन्दर रोष है—इस लिये ऐसे मौके पर जनता को अपनी तरफ खींचना आसान है और इसके लिये तमाम स्वयं सेवकों को ट्रेनिंग दी जानी चाहिये। इस ट्रेनिंग के बाद, अप्रैल और मई का महीना ट्रेनिंग में इस्तेमाल करने के बाद, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के लोगों का यह कर्तव्य होगा की उनको यह सन्देश हिन्दुस्तान के गाव गांव में ले जाना होगा।

इस सभा में बैठे हुए सभी सभासद और गृह मंत्री जी खुद इस बात का अन्दाजा लगायें कि इन बातों से यह जमायत किस कार्यक्रम को लेकर चलने वाली है। अभी हमारे यहां के सभासद—श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने कहा—मस्जिदों या अन्य धर्म स्थानों का गलत इस्तेमाल नहीं होना चाहिये और वह यह भी चाहते है कि किसी भी धर्म स्थान का अपमान न हो। सभापति महोदय, मैं बड़े अदब से अर्ज करना चाहती हू कि इस जमायत का, खास तौर से राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का यह रवैया रहा है—अफवाहें उड़ाना, इस तरह की कहानियां जोड़ना कि फला मस्जिद में यह काम होता है, फला मस्जिद में वह काम होता है—यह उनका पुराना हथियार रहा है। उस दिन भी, जिस दिन कि यह घटना घटी है, शहर के दूसरे कोनों में यह अफवाह फैला दी गई कि इस मस्जिद से हथियार रखे हैं, फला मस्जिद में हथियार रखे हैं—इस तरह की अफवाह पुरानी दिल्ली में फैलाई गई। हमारे कार्यकर्ताओं ने लोगों को मुहल्लों में लेजा ले जा कर मस्जिदें दिखलाईं और उनको यकीन दिलाया कि वहां कोई हथियार नहीं रखे है . . . (व्यवधान)

मैं बड़े अदब से कहना चाहती हू—जो बातें यहां पर बड़ी इमासेन्टली कही जाती है उन बातों को बाहर बड़े खराब तौर से अफवाहों की शक्ल में इस्तेमाल किया जाता है, इस बात की कोशिश की जाती है कि कहीं न कहीं धर्म स्थानों पर हमला करने के लिये लोगों को बहकाया जाय, बेचारे नौजवान भड़क कर उनकी तरफ चले जाय। मैं गृह मंत्री जी से निवेदन करना चाहती हू कि मुझे अफसोस इस बात का है कि आप इन घटनाओं को रोक नहीं सकते। कहा यह जाता है—डेथ इज सपोज्ड टु बी नेबुलस—लेकिन दुर्भाग्यवश हमारे यहां जब कोई मर जाता है तो ये फिरकावाराना जमायतें, उनके धर्म के मुताबिक, उनकी कम्यूनिटी के मुताबिक उनका नाम ले ले कर आपके सामने आ जाती है कोई हिन्दुओं का ठेकेदार बन कर आ जाता है, कोई मुसलमानों का ठेकेदार बन कर आ जाता है। सभापति महोदय, मैं आपसे साफ़ साफ़ कहना चाहती हू—मैं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को हिन्दुओं का नुमाइन्दा नहीं समझती, उसी तरह से जिस तरह से मैं जमायत-इस्लामी या मुस्लिम लीग को मुसलमानों का नुमाइन्दा नहीं समझती। मैं यह अर्ज करना चाहती हू जब तक हमारे देश की सियासत में हमारे देश की राजनीति में इन चीजों पर पाबन्दी नहीं लगाई जायेगी, तब तक इसका कोई इलाज, मुस्तकिल इलाज नहीं होने वाला है।

अभी जनसंघ के नेता ने यहां पर कहा और हमारे भगत जी ने उसका जवाब दिया—इन को कैसे मालूम हुआ कि गोलियां किधर से आई, कैसे मालूम हुआ कि किस मकान से गोलियां आई और साथ ही वे इसकी जांच की मांग कर रहे है। सिर्फ इन्होंने ही ऐसा नहीं कहा है—मैं होम मिनिस्टर साहब की तवज्जह इस तरफ दिलाना चाहती हूं—इन के

सदर-सैंड अखबार को देखिये—जिस दिन दंगा हुआ उसके दूसरे दिन जो अखबार निकला और उसके बाद जो अखबार निकल.—उस मे जिस तरह से ये खबरे दी गई, इसी तरह से जब मेरठ में दंगा हुआ था, उस समय भी इस अखबार में ये खबरे निकली थी । मै, होम मिनिस्टर साहब से पूछना चाहती हू—न आप इन जमायतो के खिलाफ कोई कार्यवाही करना चाहते है, न आप उन अखबारो के खिलाफ कोई कार्यवाही करना चाहते है तो फिर जनता की रक्षा किस के हाथो मे सौपना चाहते हैं । हम बार-बार कह रहे है इतने वर्षों से लगातार कहते आ रहे है, लेकिन कोई कार्यवाही नही हो रही है ।

आज मुझे इस बात का गम है—हमारे पुलिस अधिकारियो पर चार्ज लगाया जा रहा है । वे हमारे भाई है, हमारे ही घरो में से गये हैं, हमारे ही बच्चे और भाई है—सभापति महोदय, वे क्या करे, इनकी शिक्षा तो आर० एस० एस० मे हो जाती है, क्योकि आपने उनको आज तक मना नही किया है कि वे आर० एस० एस० के मेम्बर नही हो सकते, आप न कोई फैसला नही किया है कि सरकारी मुलाजिम आर० एस० एस० के मेम्बर हो सकते हैं या नही हो सकते हैं । यह सरकार कांग्रेस की सरकार है—लेकिन वे कांग्रेस के मेम्बर नही हो सकते । सरकार का कहना है कि सरकारी मुलाजिम कांग्रेस के मेम्बर नही हो सकते, कम्यूनिस्ट पार्टी के मेम्बर नही हो सकते, किसी जमायत के मेम्बर नही हो सकते, लेकिन आर० एस० एस० के मेम्बर हो सकते हैं । यह नीति कांग्रेस के उसूल के खिलाफ़ है, ये साम्प्रदायिक जमायते है, फिरकेपरस्त जमायते हैं, जम्हूरियत के खिलाफ़ हैं—फिर आप किस तरह से अपने सरकारी अफ़सरों को कहते हैं कि आप इसके मेम्बर हो सकते हैं लेकिन दूसरी जमायतो के मेम्बर नही हो सकते । ऐसी हालत में आप अपने अफ़सरों से क्या तवक्को रखते है । मैं ने बार बार इस हाउस में कहा है—हमारे नेताओं की, हमारे वजीरो की, जो हुकूमत चला रहे है, उनकी शिक्षा गांधी जी के चरणो मे हुई, उनकी शिक्षा नेहरू जी के चरणो मे हुई, लेकिन जिनको हम अधिकार देकर प्रशासन का काम चलवाते है उनकी शिक्षा शाखाओं में लाठी चलाते हुए कण्ठ छेद सीखने के लिये हुई उन से हम कोई तवक्को नही रख सकते है । इस लिये मै आप से निवेदन करूंगी यदि आप वास्तव मे जनता को सुरक्षा देना चाहते है तो, इन लोगों का सही ट्रेनिंग दीजिये उस गलत ट्रेनिंग से निकाल कर सही रास्ते पर लाइये तब कुछ हो सकेगा ।

सभापति महोदय, मैं एक बात और कहना चाहती हू दिल्ली की दशा अभी सुधरी नही है जिस किस्म की अफ़वाहे और कहानिया फैलाई जा रही हैं इन जमायतो द्वारा, उस पर रोक थाम करने की जरूरत है, अगर रोकथाम नही होगी तो जिस डायरेक्ट एक्शन की ये लोग धमकी दे रहे है वह डायरेक्ट एक्शन क्या होगा, आप और हम लोग अच्छी तरह से परिचित हैं । सभापति महोदय, मैं कहना यह चाहती हू कि जब भी कोई ऐसा प्रोग्राम आता है तो उन लोगो की पहले पकड धकड हो जाती है उसी तरह से जब ये लोग भी धमकी दे रहे हैं तो सरकार इन को भी पहले से क्यो न पकड़ ले इस का क्या उत्तर सरकार देना चाहती है ?

SHRI SEZHIYAN (Kumbakonam): Mr Chairman, Sir, it has been reported in the press that communal riot that rocked the Sadar area on Sunday was the worst riot since partition in Delhi. I share the concern of all the members who spoke before me, whether they were sitting on this or that side, that it is a disgrace to the working of secular democracy in this country to have such communal riots. In spite of our Constitution, which has

[Shri Sezhiyan]

got very many noble provisions, in spite of the many pious wishes on our part, in spite of the National Integration Council, which is put in liberation, which works now and then, we find to our dismay that there are communal riots. It is a very disgraceful thing to any human democracy in this world that just because a person's name is Ram or Rahim, he is done to death. It is the most inhuman thing that can happen in any civilized society.

We celebrated the Buddha Purnima on Monday. One day earlier a carnage had taken place, a communal holocaust had occurred, in the heart of the capital of India. If this discussion is only going to bring forth some sound and fury against communalism, if communalism is only going to be castigated in a loud voice, I do not think it is going to serve any purpose. Previously also, we had many discussions wherein such wishes were expressed. So far, to our dismay, no effective remedy has been found to root out communalism and communal riots in this country.

I do not want to go into the entire ambit of the working of communal forces in this country because our discussion is limited to the adjournment motion moved by Mr. Vajpayee regarding failure on the part of the Government in preventing and controlling the riot that took place on Sunday in the Sadar Bazar area.

Yesterday, I had occasion to visit some of the riot-affected areas. I saw the roads littered with bricks and brocken glasses, many houses razed to the ground, sharred and spoiled vegetables scattered everywhere. The sight was a very pathetic one. Fear-stricken faces were peering out from the broken glasses. I do not know to which community they belonged. They belonged to one community or the other. The poor innocent people have suffered during the communal riot.

Before condemning other things, we are more concerned with this thing. If there have been some communal elements—in a vast society, there are bound to be bad elements—our charge is as to why the Government has not taken any precaution, what action has been taken by the Government when the first news about the communal holocaust came to their notice.

SHRI R. S. PANDEY (Rajnandgaon). The Government has taken all the precautions.

SHRI SEZHIYAN: I am glad to hear Mr. R. S Pandey assuring me about it. But I am guided by what the newspaper reports say. I do not know the inner working of the very many things that happen inside the Government to which he may have an access.

This is what the *Times of India* says

> "There appears to have been a total collapse of intelligence and inadequate appreciation of the situation by the police. If previous experience is any guide, the simmering discontent erupted on Sunday's long hot afternoon with the heating providing the spark.
>
> The first reports of stoning appear to have reached the police around 10 a m Large-scale rioting and arson started only about 1.30 p m. what were the police officers in charge of the area doing in these vital three and a half hours? It is incontrovertible that they were much too slow to react."

This is what the papers have reported. From 10 a.m., the news has been reaching the police station At 1.30 p m., the large-scale arson and rioting started What were the police officials doing for 3 1/2 hours? This is the question. Then, it also says:

> "A contributory cause of Sunday's rioting was the generally lax police supervision of bad characters who generally hold people to ransom. Only two days ago, six toughs

roamed about freely with drawn knives in the evening...."

This is what the papers say.

Our charge on the Government and the administration is that they have failed to take precautions and to keep these things under control. If a small band of people, however bad they may be, if they are able to hold to ransom the entire society, why there should be a civilised Government, a police administration worth the name. If a handful people could hold the entire society to ransom, it is not a civilised administration worth its name.

I need not bring to your notice the past experiences. The Home Ministry of all the Departments hold all the secrets and the intelligence In December, 1972, an exhaustive note was prepared after much discussion inside the Home Ministry and it was reported to the press also It has been stated in that note that the Home Minisry, after detailed analysis of various communal riots that rocked the country at various places found that whenever the administration has been firm, the riots have either been averted or controlled effectively in a short time. They also found cut that, on the other hand, if the law and order machinery failed to anticipate the tension or could not act promptly, the results were disastrous. It was found that in almost all cases the unsocial elements exploited the situation and innocent people were the worst sufferers."

Therefore, it was nothing new. The Government knew the whole process very much. Why did they not act here in time, in the Sadar Bazaar area, even though the news came them that the trouble had started, that bad elements were roaming about with drawn knives. Why were these elements not rounded off? Why was no action taken by the police for 2½ to 3 hours? Loot and arson had started at 1.30, but the police reached there much later. Yesterday somebody told us—it is for him to verify and if it is not correct, to repudiate that the police went there at 4.00 p.m. And they say that the situation worsened after the police came. After 4.00 p.m. when the police came to the area, the situation worsened and loot and arson began it spread in larger numbers and to other areas. The chief responsibility for this squarely lies at the doors of the police administration which failed in the duty that they owe to the society, in their duty of protection of the minorities.

In the National Integration council it was recommended that the authorities in charge of maintenance of law and order should be made personally responsible for preventing communal incidents I want to know whether the Home Ministry would take action against those persons who were found wanting, who were very complacent in spite of repeated warnings given to them Even now nobody is sure what was the starting point of the communal riots. It has been said in some papers that there was a brawl in a sugarcane juice shop. Even that does not appear to be the real basis or the starting point. Because it is reported in one of the papers that, "according to another version, two members of the same community quarrelled at a fruit juice shop and this was followed by a brawl during which the other communities got involved." Therefore, the base seems to be very thin. But a huge, cruel riot has rocked the Sadar Bazaar area, for which, I feel, the Government and the administration is squarely responsible. They have failed in their elementary duty of giving protection to the minorities and keeping in control the bad characters. Even when the brawl started and stone-throwing had been indulged in, they did not rush to the spot immediately to maintain law and order. On the other hand, when they went, it seems the intensity of the riot increased and it also spread to other areas. Therefore, it is the Home Ministry and the police administration that has miserably failed the people of Delhi.

श्री अमर नाथ चावला (दिल्ली सदर) : सभापति महोदय, यह मेरी बदकिस्मती है कि फिरकेवाराना फसादात मेरे क्षेत्र में हुए। मैं उस दिन 3 बजे से सवा 11 बजे रात तक वहां रहा और उसकी बिना पर आपकी खिदमत में कुछ बातें रखना चाहता हूं। यह बात बार बार कही गई कि जो बैड एलिमेन्ट है, गुंडा एलिमेन्ट है उसके ऊपर नजर रखनी चाहिए, सख्त कार्यवाही उनके साथ करनी चाहिए---इसमें कोई दो राये नहीं हो सकती है। जो राइट हुआ है इस सारे हादसे को देख कर मैं यह समझता हूं कि केवल बैड एलीमेंट्स का हाथ इसमें नहीं है और इसके पीछे कोई गहरी साजिश है। मैं नहीं मान सकता कि इस इलाके में दो जूम पीने वाले लड़े थे, दो बैड एलीमेंट्स आपस में टकरा गए और यह सारा झगड़ा शुरू हो गया। थोड़े से ही अर्से में कितनी ही जगह आग लगा दी गई। मैं वहां तीन बजे पहुंचा तो मुझे पता लगा कि डी आई जी बेदी मरवाह के गोली लगी है। वे मुझे वहां नहीं मिले। मैंने उनके साथ अस्पताल में जाकर भेंट की। मैंने उनसे पूछा कि आपको गोली लगी तो क्या आप यह बता सकते हैं कि गोली किस तरफ से आई। उन्होंने कहा कि उस वक्त धुआं था, गैस का भी धुआं था, आग का भी था इस वास्ते यह कहना बहुत मुश्किल है कि गोली किस तरफ से आई। गोली मुझे लगी तो मैंने पीठ फेर ली। फिर पीछे मुझे गोली लगी। उसके बाद मुझे पता नहीं क्या हुआ। वे आगे इसलिए बढ़े थे कि फायर इंजन जो आग बुझाने के लिए वहां आए हुए थे उनको आगे नहीं बढ़ने दिया जा रहा था। इसलिए उन्होंने हवाई फायर किए, अपने फोर्स को लेकर आगे बढ़े। उन्होंने बड़ी बहादुरी से काम लिया और फायर इंजन काम करने लगे। जब फायर इंजन काम कर रहे थे तो उस वक्त उनको ये पैलेट्स आकर लगे और वे जख्मी हो गए। जिस बहादुरी के साथ उन्होंने काम किया उसकी जितनी सराहना की जाए थोड़ी है। आग बुझाने के काम में रुकावट डालने वाले अगर यह कहा जाता है कि गुंडे ही थे तो इस बात को मैं मानने के लिए तैयार नहीं हूं। इसके पीछे और हाथ था। तीन बजे के करीब उस इलाके में एम पी श्री गौतम कौल भी मोर्चा सम्भाले हुए थे और वह सिचुएशन को काफी कन्ट्रोल में ला चुके थे। पहले आजाद मार्किट के इलाके, किशनगंज के चौक के आसपास जो दूकानें थी उनको आग लगाई गई। उसके बाद बहादुरगढ़ रोड की तरफ आग लगाने वाले बढ़े और उस तरफ आग लगाई। जहां जहां पुलिस काबू पाती चली गई वहां वहां से हट कर ये लोग दूसरी तरफ आग लगाते चले गए। इससे साफ जाहिर है कि केवल बैड एलीमेंट्स का ही इसके पीछे हाथ नहीं था बल्कि कोई आर्गेनाइज्ड ग्रुप काम कर रहा था। बहादुरगढ़ में ये आगे बढ़े तो वहां पुलिस वालों ने कन्ट्रोल किया। फिर ये सदर थाना की तरफ आ गए। वहां पर कन्ट्रोल किया। फिर एक मस्जिद गुल है उसके पास की दूकानों को आग लगाई गई। पुलिस ने वहां तक कन्ट्रोल किया तो ईदगाह के पास मोतियाखा के अन्दर आकर आग लगा दी गई। इस तरह से वे लोग आगे बढ़ते चले गए। जहां जहां पुलिस काबू आग पर पाती गई यह ग्रुप आगे बढ़ता गया। सदर थाने के इलाके के अलावा पहाड़गंज के थाने के इलाके में सतरह लोग गिरफ्तार हुए है। वहां पर माइनोरिटी कम्युनिटी की जो दूकानें हैं उनको आग नहीं लगाई गई। उनसे तमाम सामान निकाल कर ही, बाहर रख कर ही आग लगाई गई। इससे जाहिर होता है कि कोई आर्गेनाइज्ड ग्रुप था जो यह सारा काम कर रहा था, किसी खास ग्रुप का खास हाथ इसके अन्दर रहा है---

एक माननीय सदस्य : कौन ग्रुप था ?

श्री अमर नाथ चावला : वही लोग हो सकते हैं जिनका इससे कुछ फायदा हो सकता है, ऐसी फिजा पैदा करके जो लाभ उठाना चाहते हैं। वह चीज आपके सामने आ जाती है।

अभी कुछ कारो का जिक्र हुआ है । कारों को गैरेज के अन्दर आग नही लगाई गई । बाहर निकाल कर आग क्यो लगाई गई ? इसलिए कि मकान या गैरेज न जलें । मकान किसी खास कम्युनिटी के थे, कारे दूसरी कम्युनिटी की थी । इससे साफ जाहिर हो जाता है कि किस का हाथ इसके पीछे है ।

सारी चीज को मैंने अपनी आखो से जाकर देखा है । कुछ एलीमेंट्स ने मेरे साथ बुरा व्यवहार करने की कोशिश भी की । उसको भी सामने रखते हुए मैं कह सकता हू कि आम जनता का इसमे हाथ नही है और न आम जनता चाहती है कि रायट्स हो । एक छोटा सा आर्गेनाइज्ड ग्रुप जगह जगह पर आग लगाता है । अगर आम जनता का इसमे हाथ होता तो इतनी जल्दी इसको कण्ट्रोल नही किया जा सकता था । व्यापारी तबका, लेबर, कर्मचारी, आदि कोई भी तबका नही चाहता है कि ऐसे फसाद हो, उनका इसमे इंटरेस्ट नही है । एक खास ग्रुप, एक खास तबका ही इसमे इंटरेस्टिड है और वह सबको मालूम है और उसका मैंने आपके सामने जिक्र किया है ।

जहा जहा आग लगी है और हिन्दू,सिख, मुसलमानो आदि की मौतें हुई हैं उनको फौरन मदद मिलनी चाहिये और वहा उनके घरो के अन्दर रिलीफ पहुचना चाहिये, कर्फ्यू के अन्दर भी और उसके बाद भी । यह चीज जरूरी है । वहां पर उनको खाने का जो सामान है मिलना चाहिये, पहुचना चाहिये । मेडीसिस उनको पहुचनी चाहिये और इसका इन्तजाम होना चाहिये । बिजली का इंतजाम कल तक वहा नही था । कल स्ट्रीट लाइटिंग का इन्तजाम कर दिया गया है । बिजली घरो मे नही पहुची है । बिजली कर्मचारियो को प्रोटेक्शन मिलना चाहिये ताकि जल्दी से जल्दी वे घरो के अन्दर भी कनेक्शन दे सकें । बच्चो को पीने के लिए दूध वहा पहुंचना चाहिये । मैं इर्विन अस्पताल गया था । वहा मैंने लोगो को देखा है जिनके छुरे लगे हैं, गोलिया लगी हैं, चाकुओ से जख्मी हुए हैं । उनमे हिन्दू, मुसलमान, सिख सभी हैं । उनकी तरफ भी तवज्जह दी जानी चाहिये, उनका रिलीफ पहुचना चाहिये ।

जहा मै सरकार से एक हाई लेवेल फैक्ट फाइडिंग इक्वायरी कमेटी की मांग करता हू वहा मै इस बात को भी समझता हू कि हमें बड़ी तेजी के साथ ऐसा वातावरण बनाना चाहिये ताकि लोगो के अन्दर कान्फिडेंस रेस्टोर हो । रयूमर मांगरिंग से भी आपको सावधान रहना चाहिये और इनको फैलने नही देना चाहिये । मेरा पूरा विश्वास है कि चूंकि जनता का सहयोग ऐसे तत्वों को प्राप्त नही है इस वास्ते आप बड़ी जल्दी से जल्दी सारी स्थिति पर काबू पा लेंगे ।

SHRI EBRAHIM SULAIMAN SAIT (Kozhikode) Mr Chairman, Sir, it is with a very heavy heart and with great pain and anguish that I stand up in this august House to take part in this debate about the unprecedented and pre-planned riots which have rocked this capital city only the other day

Sir, I must tell this House very frankly that the riots that took place two days ago in the capital city were the biggest riots that this capital city has seen after the independence of this country

I must also tell you that the destruction the colossal destruction which has been caused by these riots in the capital city of Delhi has no parallel before as far as Delhi is concerned. Not only 10 to 20 people were dead, not only property in the shape of houses, shops, godown and factories worth crores of rupees has been destroyed, but also thousands and thousands have been rendered homeless and penniless on the streets and this has been the magnitude of the sort of riots which rocked the capital city, day before yesterday. Those friends,

[Shri Ebrahim Sulaiman Sait]

those colleagues, who have not visited that area, cannot understand the magnitude of the destruction which has been caused to persons and property in the capital city.

16 hrs.

Even yesterday, when I had gone over there with other leader of opposition we saw the smoke coming out from the debris. That means the fire was still there. As far as death toll is concerned, I would like to quote from the Patriot

"The death toll rose to 28 according to hostpital sources with the number of injured taken for medical attention increasing to 300 It was, however, learnt that 22 persons died in Irwin Hospital and six in the Willingdon Hospital The figure for police and other hospitals as also those believed dead under the falling debris could not be ascertained"

Further it says

"Till Monday evening, doctors in the Irwin Hospital had attended about 200 cases Ninety of them had bullet and pellet wounds and 10 bore multiple stab injuries The condition of 15 of them was said to be serious"

So, this was the magnitude of the riot that had taken place Let me tell you very clearly that by this adjournment motion we do not intend to apportion blame here. We just want the Government of this country to understand and realise their responsibility They must clearly understand that the Government the Administration and the Police had utterly failed to put down the riot and bring the situation under control in time. This riot started at about 1-30 P.M and it went on till midnight for about 12 hours. Till then the Government of this country was not able to put down the riot with a firm hand If arson, loot, fire and killing continued here for hours together, what was the police, administration and Government doing I cannot understand It has been stated by my friends here that the Police came three hours after That is, they came three hours after the riot started. They came at 3 or 4 o'clock. They were not able to control or handle the situation Therefore, the Border Security Force was called in After being called, it took two hours for BSF to reach that is, they reached there at 6-30 P.M. The situation went on till midnight. This was the position in that area The riot spread to other areas like Bahadurgarh Road, Kasabpura, Thana Road, Sarem Khaleel. The situation was under control, of course, at Kishanganj

What is the Intelligence worth? I ask riots cannot take place without preparation It was on large-scale and preplanned A largescale destruction had taken place The Government must take the responsibility for all this I just want to quote what the Times of India says It says.

"There appears to have been a total collapse of intelligence and inadequate appreciation of the situation by the police if previous experience is any guide, the simmering discontent erupted on Sunday's long hot afternoon with the heating providing the spark"

We have the experience of the riots that took place in Ahmedabad, we have seen the riots in Bhiwandi, we have seen the riots in Jamshedpur. Everywhere there was a colossal failure of the Government The mischievous elements are trying to destroy all peace in this country Why is Government allowing this to happen? Government should realise their responsibility We have brought forward the adjournment motion for this purpose only The Government have got the police force, they have got military force They should act in time by using these forces so that the mischievous elements are put down with a heavy hand. If there are militant forces, they must be smashed so that the people can live in peace in this country.

You all know that we are a weaker section of the society. Numerically we are weak, economically we are weak and whenever riots take place, it is we who suffer. You would have know the article written by Shri Inder Malhotra in the Illustrated Weekly of India in which he said that whenever riots take place in this country, out of ten people who are killed, nine of them belong to Muslim community.

The tragedy if 10 people are arrested 9 of them belong to minority community. We appeal for getting protection and justice. My friend, Shri Shashi Bhushan said that minorities have complete protection I differ with him. There is no security of honour, life and property of the minority community The Kishanganj area is completely a minority community area All the houses set on fire belong to minority community and then you say there is security for minorities in this country. Can anybody believe it? Can you throw dust in the eyes of the people and befool them? Therefore, let us act It is our duty

It is said arms were found in the mosque. It is also said police do not enter the mosques. I can quote hundred and one instances where police entered the mosques on false charges and found nothing. Mosques are open for 24 hours It is only Motherland and Pratap newspapers which choose to publish such type of news and no other paper does it

Now, after these riots what happens? Arrests take place I do not want to go into the details because there is tension in Jama Masjid and Billimaran areas. When curfew was relaxed this morning for a few hours in Sadar Bazar stabbing cases took place. One Maulana Abdul Hamid Rehman was pulled from the tonga and stabbed. So, the situation is not under control. Therefore, first and foremost task should be to establish perfect normality.

Then, what have you done to mischief makers? You do not give them examplary punishment. They must be metted out examplary punishment—whosoever he might be. People who kill and loot have no religion. Therefore, they must be met with examplary punishment. Again, the victims of riots must be fully compensated. Only houses belonging to minority community were destroyed and set on fire Where the building belonged to majority community the cars were brought out from the garrage and set on fire on the road.

Lastly, during these riots what happens is women and children shriek and cry for protection and help. The women with their youn babies undergo the agony of hunger. There is no water in the pipes and there is complete darkness They have no drop of milk or loaf of bread If we want to go there for relief works no passes are issued Since Sunday morning the riots started but till yesterday evening nothing was given to the victims particularly women and children. If the Government cannot take the responsibility of feeding women and children of the locality where riots take place then they must allow social workers to go there and provide help. This is what should have happened. I myself along with other Leaders of the Opposition wanted to go even in the forenoon of yesterday, but we were not allowed to go. It was only in the afternoon that we were allowed to go As far as Government's giving protection to the people who are suffering is concerned, I myself had aproached the Home Minister and told him to call the military at 4.30 p.m. I had met also the Prime Minister and told her that the military should be called. I was told that it was coming. But the Milithary did not come at all. I am told that it had been alerted and it was standing by. But what I would say is that if the police is not able to control the situation, the military should be called at all costs.

[Shri Ebrahim Sulaiman Sait]

Therefore, we must see that everybody should have protection in this country. There should be complete cordiality. We desire that all should live happily in a peaceful manner with complete amity and cordiality I would only say one word more finally before I conclude:

वह चमन चमन ही नहीं जिसके गोशे गोशे में
कहीं बहार न आए, कहीं बहार आए ।
वो मयकदे की यह साकीगरी की है तौहीन
कोई हो जाम बकफ कोई शर्मसार आए ।।

Therefore, let everybody have proper protection in this country. Let Government act in time and see that all these mischief-makers are completely put down and peace is established and the minority is given all protection possible.

श्रीमती मुकुल बनर्जी (नई दिल्ली) : अध्यक्ष महोदय, 5 तारीख को दिल्ली में जो कुछ हुआ उस के लिए सारी दिल्ली के नहीं सारे हिन्दुस्तान के ललाट पर कलंक का टीका पड़ गया है। इसलिए सब के दिल में दुख है और होना भी चाहिए। हम ने देखा कि साम्प्रदायिकता के ऊपर हमारा देश दो टुकड़ों हुआ था। देश के आजादी के चार महीने के अंतर साम्प्रदायिकता को सपोर्ट करने वाले जो लोग थे उन्होंने राष्ट्रपिता गांधी की हत्या कर दी और यह साम्प्रदायिकता धीरे धीरे बढ़ती गई। मगर हमारी सरकार ने बहुत कोशिश करके काफी इस का दमन कर दिया।

यह जो हालत आज हुई है यह खाली एक अलग चीज नहीं हुई है। यह यहां पर जो लोग साम्प्रदायिकता में विश्वास करते हैं, जो लोग सिखाते हैं, जो सुबह शाम परेड करने भी सिखाते उन लोगों ने इसके लिए कोशिश की, काफी दिनों से वे कोशिश कर रहे थे दिल्ली में आग लगाने की लेकिन २ब भी इन्होंने कोशिश की उस वक्त दूसरे लोग जो अच्छे हैं, जो सेन लोग है, उन लोगों ने कोशिश कर के उस को दबा दिया, होने नहीं दिया। मगर इसबार को अचानक उन लोगों ने जो किया वह कोई चन्द गुंडों का काम नहीं है, चन्द ऐंटी सोशल एलीमेंट्स का काम नहीं है। एकदम जैसे चुन चुन कर लोगों को मारा गया उस से पता चलता है कि यह पूरा प्री-प्लान्ड था और इन लोगों का काम है, इन लोगों ने करवाया है, जो साम्प्रदायिकता में विश्वास रखते हैं और जो यह देख रहे हैं कि हमारा देश एक बहुत हालत पूरी न, बहुत तकलीफ के जमाने से गुजर रहा है। ऐसे वक्त में सब लोगों को चाहिए कि सब एक साथ हो कर तकलीफ का सामना करें और इस के भीतर से गुजर कर एक अच्छा टाइम ले आए, खुशहाली में आए, लोगों की तकलीफ दूर करें। लेकिन यह न कर के वे करते क्या है कि दंगों की तकलीफ और भी बढ़ाने की कोशिश करते हैं कि रेलवे को बन्द करो, गवर्नमेंट एम्पलाइज को स्ट्राइक में ले आओ। वे यह कोशिश कर रहे हैं कि ऐसे जितने तबके है जिन को वह आगे ला सकते है, उन को ला कर सारी हमारी आर्थिक हालत को खराब करें, यह कोशिश उन की कामयाब काफी नहीं होगी। मगर कभी कभी कोशिश कर के इधर उधर वे लोग कुछ कर लेते है। यह जो हुआ है उन्हीं लोगों ने करवाया है, मगर एक चीज मैं बता दूं कि हिन्दुस्तान की जनता भूखी हो सकती है, हिन्दुस्तान की जनता नंगी हो सकती है, मगर हिन्दुस्तान की जनता बेवकूफ नहीं है। जो ये कोशिश कर रहे हैं, इन की सारी कोशिश इन की सारी साजिश खत्म हो जाएगी। इन्होंने जो किया है वह भी लोग समझ जाएंगे कि दंगा फसाद कौन करवाता है ? मैं तो एक चीज बताया चाहती हूं कि यह जो हो रहा है, इसे हमारे देश में कराने की कोशिश करते हैं वह चाहे हिन्दु संस्था हो, चाहे मुस्लिम संस्था ही, चाहे सिख संस्था हो, चाहे ईसाई संस्था हो, इस को हमें खत्म करना चाहिए। मुझे गांधी जी ने एक दफा कहा था हिन्दुस्तान में हिन्दु देखता हूं मुसलमान देखता हूं, सिख, ईसाई देखता हूं, महाराष्ट्रियन देखता हूं, बंगाली

देखता हूं, पंजाबी देखता हूं, मगर मुझे बताओ की हिन्दुस्तानी कौन है। तो वह हालत हम को ले आनी है।

हिन्दू के ऊपर गर्व करते हैं हिन्दू की सभ्यता, हिन्दू की संस्कृति, इन सब पर गर्व करते हैं और दूसरी तरफ साम्प्रदायिकता बढ़ाते है। उन को भी मैं बता रही हूं कि खाली हिन्दु लोगों के लीडर बनते से काम नहीं चलेगा, खाली मुसलमान लोगों के लीडर बनने से काम नहीं चलेगा, हरिजन के लीडर खाली हरिजन के बनने से काम नहीं चलेगा। आज सारे हिन्दुस्तान के लोगों को, सारे हिन्दुस्तान के दबे हुए और तकलीफ में पड़े हुए लोगों को ऊपर उठाना होगा। इसलिए ये जो कर रहे हैं इस को तो दबाना ही चाहिये और मैं गृह मंत्री जी से बहुत अदब से कहना चाहती हूं, मैं उन से अनुरोध करती हूं कि इस के लिए एक हाई लेवेल फैक्ट फाइंडिंग कमेटी बैठनी चाहिए। मैं इस मामले में भगत जी से एक राय हूं, मेरी पूरी रेंसपेक्ट, जुडिशियल एन्क्वायरी पर और जुडिशिय स्ट्रक्चर पर है मगर जुडिशियल एन्क्वायरी में बहुत टाइम लगता है। इस का जल्दी से जल्दी हल निकलना चाहिए। इसलिए एक हाई लेवेल फैक्ट फाइंनिग कमेटी इम्मीडिएटली अप्वाइट करनी चाहिए और जो लोग दंगा फसाद करवाते है, जो साम्प्रदायिकता फैलाते है, जो इस को दूसरी जगह भी करवाना चाहते हैं, उन लोगों को फौरन पकड़ना चाहिए और उन्हें कड़ी से कड़ी सजा देनी चाहिए। देशद्रोहियों की जो सजा होती है वह इन लोगों को देनी चाहिए। इतना मैं कह कर समाप्त करती हूं।

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA (Begusarai): Mr. Chairman, Sir, the first question to which I would like to address myself is whether we were wrong in bringing forward this Adjournment Motion. My mind is clear that we were not. I think we would be doing less than our duty if we did not invite the attention of the House to the colossal failure of the administration is saving the lives and property of the people.

It has been said that it is one of the blackest scars probably the blackest scar on the face of Delhi. As a Member of the Opposition. I would say that it is the blackest scar on the face of the Central Government but at the same ime as an Indian, I have no hesitation in saying that it is the blackest scar o the face of all of us.

When we visited some of the areas we found that almost a mini earthquake had rocked them. I am particularly referring to the Kishanganj and Sadar Bazar areas. I worked as a volunteer during the 1946 riots. Though at the time I might not have been very well known, yet I had the great privilege of working in the great company of Dr. Rajendra Prasad and also Khan Abdul Ghaffar Khan who happened to work in the riot-affected areas of Bihar The kind of scenes which I saw yesterday reminded me of those horrifyin orgies which were perpetrated during 1946.

Now, I am also conscious of the fact, Mr. Chairman, that to take part in this debate is, in all conscience, like walking on a sword's edge, as they say in Sanskrit. The situation is not fully defused yet. There is still a precariously unstable equilibrium and we have got the disturbing news that the virus has a tendency of spreading. I hope it is wrong. However, one has to say certain things so so that it is nipped in the bud. I know where, plainly, my duty lies. If we canot save any life it is clear that we snould say or do nothing which would endanger anylife. So, our concern would be, and particularly, so far as I am concerned. my concern would be to say nothing which will exacerabte the feelings or further add to the tension although I must tell this House that I came to form a clear impression, in the midest of the wreckaes in which I found myself yesterday, what kind of devastations had ben brought about what kind of orgies have been perpetrated. But, I would not like to go into the

[Shri Shyamnandan Mishra]

arithmetic of the losses suffered by the various sections of the community at this point of time. That would not help matters. But, those of us, who have worked for quite some time now, in causes like this, feel sometimes frustrated that the policy of the country is irrelevant both from the point of view of material development and spiritual development of the country. What has to be done about it, is the basic question to which this House has to address itself. But, I would not like to go into that matter just now. The time does not permit me to do that.

Now, Mr. Chairman, no one in this House, I am quite sure, would wield even a knife in dealing with a political opponent. Yet, this House is to answer a question, why is it not able to radiate a moral influence which will prevent incidents of this kind? All of us, I can say without any fear of contradiction, would not do anything of that kind. It appears to me, therefore that neither this Government is able to wield any moral authority nor is this House able to radiate the necessary moral influence to prevent happenings of this kind. Otherwise, how do you explain that only within a walking distance of this great institution, within a walking distance of the headquarters of the Central Government, such orgies had been perpetrated and these institutions have had absolutely no deterring influence on the incidents which took place day before yesterday.

SHRI N. K. P. SALVE (Betul): You identify the sections on which we should exercise the moral influence.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: On the general atmosphere in the country. I have told you.

Now, Sir, a few things are clearly established. There was a complete failure of the intelligence system of the Government. What is this intelligence system for? Is it meant for spying on the Members of Parliament? Is it only meant for tapping the telephone systems? Again, what are these policemen for? Are they meant for protecting the hoards of the ruling party who carry out raid on 7, Jantar Mantar? I have seen in the past that the Police had behaved as shameless domestic servants of the establishment This fact would be borne out by many people in this city who had seen certain things.

Then, Sir, it is also clear that no prompt and adequate measures to meet the situation had been taken. Who will answer for this? There must be some person who owns the oral responsibility for this and makes a bow. If I beseech the Home Minister to do so, I am not motivated by malice. We are only trying to do good to him; we are not trying to do anything which would harm him. He would not be having a big bungalow to live in, he would not have many facilities which he now enjoys, but he would be rising in the eyes of the people if he resigns on this issue. Many of us do not happen to be in power, but we value the glow of moral power much more than the artificial shine of the crowns on the other side.

We would like every one to realise this and have inspiration and....

MR. CHAIRMAN: He should conclude now.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: Sir, I will take a few more minutes. This is a very important subject. How can I finish my observations within a few minutes?

MR. CHAIRMAN: My problem is that we have to finish this by 6-30 p.m. because only 2½ hours have been allotted. The Minister has to be called and Shri Vajpayee has to reply. So, would the House like to extend the time by, say, half an hour?

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: The Minister will have to speak and I will have to reply. So, more time is required.

MR. CHAIRMAN: There are two more speakers from the Government

side and two from the opposition, apart from the Minister and Shri Vajpayee.

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI K RAGHU RAMAIAH): It may be extended by one hour.

MR. CHAIRMAN: All right, it is extended by one hour.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: Let me make my points clear, even though I know what I am going to say would be just like throwing water on a duck's back so far as the hon. Members on the other side are concerned.

My submission is that had sufficient force been summoned, including the army, in time the situation would not have aggravated that badly. I am really surprised to find that although an appeal was made by an hon. Member of this House that the situation was grave that the army had to be summoned, it was not done.

Then, it beats me completely why the Government did not care to send any relief till yesterday evening. Not a loaf of bread was sent. Did the Government think that this House would refuse the necessary supplies to them if they gave relief to the people there? That also was not done.

Then, what is most reprehensible is the fact that the Government, the ruling party, has tried to exploit the situation for its own political advantage. Otherwise how do you explain that the hon. Member, Shrimati Subhadra Joshi, was allowed to go round and we were prevented from doing so in the first instance; and it was only on second thoughts that many of the leaders of the opposition were allowed to go into that area? I have also seen jeeps laden with breads and other food materials brought by the ruling party to be distributed, but for the supplies that some of the hon. Members from this side had carried, there was hesitation in the eyes of the officers in charge in taking hold of them.

Why is there so much of violence in the country at the moment? The reasons are obvious. The high prices are violence; serious unemployment is violence, added to that, increasing disparity is violence.

AN HON. MEMBER: Communal violence.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: Yes, I am coming to that. You have brought about a situation where all these things are in existence.

But, more than all these, the main reason is that you have neglected the fundamental development of the country, that is, the development of character of the people of the country. The movement for independence succeeded, because it was built on the formation of character of the people What is the position now? Whatever character formation had taken place in the past had been undone during the recent years. That is one of the reasons that you find the spread of violence.

Shall I draw the attention of this honourable House to a report that has appeared in one of the national dailies? Probably, it is the *Indian Express* which says that many of these incidents can be traced to the influence of liquor. Thus is one of the great achievements of the ruling party that it has completely scrapped prohibition. During the course of last few years, the consumption of liquor has doubled and trebled in the city of Delhi. If my hon friend, Mr. Salve wants to know, it is this kind of thing, the spread of liquor and the like which brings about many unfortunate developments.

My demand is that certain immediate steps must be taken. Firstly, as has been rightly stressed by many hon. Members, the appointment of a judicial commission has to be announced forthwith But this judicial commission, I must say, must be a judicial commission with a difference. We have appointed so many judicial commissions, but with what result? They have yielded little result. So this judicial commission must be told, to find

(Shri Shyamnandan Mishra.)

out what recommendations of the previous Commissions were not acted upon and, therefore in consequence, such incidents are taking place. That, I have no, doubt will clearly forest the responsibility on the head of the Government and on the administration. I think, I am quite clear that this also must be one of the terms of reference of the judicial commission.

Secondly, we must try to see that adequate relief is reached to the people. We must enable the students to take part in their examination. Many students from the minority community, we are told, want to be enabled to take their examinations. That encouraged me very much that in the midst of the worst happenings that had been enacted there, these boys do not forget their real works—their studies and their examinations. The Government must do something about it.

I would also like to submit that the Government must take the problem of national integration a little more seriously than they have been doing so far. To the Government, the National Integration Council is nothing more than a needless encumbrance. If they want to completely burn the Council, let them do that. For all practical purposes, they have already done that.

We are trying to build an economy without building the foundation of the nation itself. That is the tragedy.

Here are a few suggestion's of mine, in this connection. A pledge for national integration must be taken collectively, every day, in every institution, including the Parliament of India. Why should it not be so? You might say that in would be only dramatising the whole thing. But drama and emotions have not certain place in life. This will remind us of this great duty. Before the commencement of work. If in every educational institution, the pledge of national integration is taken by boys and girls and also in legislatures by their Members, I think, it will be conductive to an atmosphere of national integration.

The daily programme of radio, television and cinema should also begin with a reminder of the pledge. Why should we not, right from the morning, be reminded of this pledge?

Due recognition should be given for services in the course of national integration. We have not heard yet that any person had been conferred the highest decoration of the land for his excellent work for national integration. For certain aspects of national development, it has, of course, been done.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: They will award it Mrs. Subhadra Joshi.

SHRI R. S. PANDEY: You spell out the meaning of national integration to Mr. Vajpayee.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: We must also be assured if the Government means seriously by the National Integration Council, that this Council will meet regularly at an interval of three months. There must not be any let up in that.

Again, the question of social harmoney should be discussed in every Block meeting. Why have you got these institutions at the Block level? Do you think that the process of national integration is that simple that you can talk once in a while in this House and it will come about? So, in every Block Development Committee and in every city with large congregations of people, there must be social harmoney committee—indeed, in every walk of life. If you are able to do that, then I think we would be doing something in the direction in which we all want the country to go. Therefore, my humble submission is that, if the Government is not able to assure us with some concrete and fresh approach with regard to this matter, we would not feel satisfied or happy and we would say that this incident of the most shameless kind has been lost upon the Government.

श्री शंकर दयाल सिंह (चतरा) : सभापति जी, कई तरह के बौद्धिक भाषण यहां पर सुनने को मिले। मैं ने जब भाषण देना शुरू ही किया है वाजपेयी जी बाहर जा रहे हैं। इससे पता चलता है कि मेरी सच्चाई सुनने का उनमें साहस नहीं है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मैं चार बजे से यहां बैठा हूं।

सभापति महोदय : किसी दूसरे कारण से जा रहे हैं, अभी वापिस आयेंगे।

श्री शंकर दयाल सिंह : सभापति जी दिल्ली में जो कुछ भी हुआ, इसमें दो मत नहीं है कि बहुत ही शर्मनाक, दर्दनाक और भयानक यह दुर्घटना या घटना हुई है। श्याम बाबू ने ठीक ही कहा कि इससे पूरे भारतवर्ष का माथा नीचे होता है। जो खबरें अखबार में आई हैं उनसे पता नहीं चलता है कि दंगे का कारण क्या था। जो कारण आये हैं वह पंचतंत्र की कहानी के समान है। दो व्यक्ति गन्ने का रस पी रहे थे। कहा जाता है गन्ने का रस बेचने वाले और पीने वालों में लड़ाई हुई। बाद में वे बगल की एक दुकान से टकरा गए, उस दूकान के कांच टूट गए। जिस दूकान के कांच टूट गए उस दुकानदार ने उनको पीटना शुरू किया। वहां से वे भाग कर एक टाइपराइटर की दुकान में घुसे और बड़ा एक दो टाइपराइटर गिर गए तो टाइपराइटर के दुकानदार ने मारना शुरू किया। इस प्रकार से यह पंचतंत्र की कहानी बनी है।

एक दूसरा वर्णन है कि दो जुआरियों के दल में झगड़ा हो गया और झगड़ा बढ़ते बढ़ते बात यहां तक पहुंच गई। जो अखबारों में बातें आई हैं उन बातों को मैं कह रहा हूं लेकिन इसके बारे में हम लोगों को कुछ पता नहीं है। अगर श्यामबाबू, अटलजी और सुलेमान सेठ जी साहब को पता हो तो बतायें कि कैसे हुआ। उन्होंने बहुत सारी बातें कही हैं अपने भाषण में आपसे कहना चाहता हूं देश में अभी जो हालत है उसको देखते हुए कहीं न कहीं कुछ बातें हो रही हैं, कोई न कोई दल, कोई न कोई वर्ग, कोई न कोई तत्व ऐसे तत्व चाहे वे देशी हों या विदेशी, इस बात में लगे हुए हैं, इसके लिए प्रयत्नशील हैं कि देश को हम स्थिर नहीं रहने देंगे। जब यहां की व्यवस्था स्थिर नहीं रहेगी तब यहां की सत्ता भी स्थिर नहीं रह सकेगी। गुजरात में जो भी बातें हुई, बिहार में जो भी वारदातें हुई, चाहे आग लगाने की घटनायें हों, लूट की घटनायें हों, हत्या की घटनायें हों, उसी तरह से दिल्ली की भी यह घटना है जो पूर्व नियोजित हो, सुनियोजित हो या एक्सीडेंटल हो लेकिन इन घटनाओं से देश पीछे हटता है, आगे नहीं बढ़ता है।

बहुत सारी बातें हमारे दोस्तों ने आपके समाने कही हैं। अटल जी ने इस घटना के सम्बन्ध में यह कहते हुए बड़े जोर से अपना भाषण शुरू किया कि यह बहुत ही नाजुक मामला है। मैं समझता हूं यह नाजुक मामला नहीं है, बहुत ही गम्भीर मामला है। आप अपने शब्द को बदलिये। श्यामबाबू का भाषण होने लगा तो मैं समझ नहीं सका कि रायट के बारे में बोल रहे हैं या फिफ्थ फाइव ईयर प्लान के बारे में बोल रहे है।

श्री श्यामनन्दन मिश्र : मैं निवेदन करूंगा कि उनकी समझ को अभी बहुत विकसित होना है।

श्री शंकर दयाल सिंह : मैं उनको इतना ही विश्वास दिलाता हूं कि जब कभी अर्थ व्यवस्था पर या योजना पर मैं बोलूंगा तो श्याम बाबू से जा कर सीखूंगा।

श्री सुलेमान सेठ जो तकरीर कर रहे थे तो पता चला कि केरल में जो मामला ऊपर नीचे हो रहा है, उसकी तसवीर उनकी तकरीर में थी। वह वहां से बबराए हुए थे।

श्री ज्योतिर्मय बसु ने कहा कि हम भी हमदर्द हैं। हमारे साथी रामावतार शास्त्री गृहमन्त्री और गृह मन्त्रालय पर बहुत बातें बोल गए। उनको तो मैं समझ सकता हूं। बेचारे रेलवे के मामले में फेल हो गए तो गृह

[श्री शंकर दयाल सिंह]

मन्त्रालय पर झपट पड़े। उनकी बातों में क्या तथ्य है इसको वह भी जानते हैं और हम भी जानते हैं। सभी जानते हैं कि अगर सरकार एलर्ट नही रहती, ठीक समय पर सरकार कदम न उठाती, अधिकारी तुरन्त घटना स्थल पर न पहुचे होते तो दंगा बहुत भड़क जाता, भभक जाता और जहा दस लोग मरे वहां सैकड़ों लाशे पड़ी हुई आपको मिलती। प्रधान मन्त्री जी, गृह मंत्री जो तुरत गए और उन्होंने स्थिति का जायजा लिया। मैं भी सदर बाजार गया, किशन गंज में और आजाद मार्किट मे गया हू। वहा के नागरिकों ने मुझे बताया है कि अगर सरकार तुरन्त कारवाई न की होती तो तीन चार दिनों तक वहा पर लाशों के अम्बार लगे रहते और लग जाते। एक भी व्यक्ति ने इसको नहीं कहा है कि सरकार की वजह से ये दंगे हुए। छोटे मोटे पुलिस के आदमी की बात क्या की जाए, पुलिस के एक बड़े अफसर, डी आई जी के रैंक के अफसर श्री मरवाह को भी छुरी लगा, गोली और वे बेचारे अस्पताल मे हैं। उन सब लोगों ने अगर तत्परता नही दिखाई होती तो दंगा बन्द नही होता।

दंगों और दूसरी तरह की जो वारदाते होती हैं उन मे बहुत बडा अन्तर होता है। करीब करीब सभी पार्टिया इस बात को मान कर चलती हैं कि दंगा नाम की जो चीज है वह मनुष्यता के ऊपर एक बहुत बडा खतरा है, अभिशाप है। इसलिए दंगे में चाहे हिन्दू का खून गिरे या मुसलमान का, इसान का खून गिरता है, लाल खून गिरता है, इसान का खून गिरता है। इसीलिए किसी शायर ने कहा है:

हिन्दू हो, मुसलमान हो, सिख हों, ईसाई हो
लेकिन वतन तो उसका है जो खून दे वतन के लिए

देश पर सकट आता है तो जो खून देता है वह शहीद कहलाता है। लेकिन इस तरह की जब बाते होती हैं तो उस मे एक दर्द उभरता है..

श्री श्याम नन्दन मिश्र: यह बिलकुल मौजू नही हुआ।

श्री शंकर दयाल सिंह: इनकी तो यह हालत है:

मैं आह भी भरता हूं तो हो जाता हूं बदनाम
ये कत्ल भी करते हैं तो चर्चा नहीं होती।

मैं कहना चाहता हूं कि जो घटना हुई है उसकी जांच होनी चाहिये। कई माइयों ने कहा कि जूडिशल इनक्वायरी बिठाई जाये। लेकिन मैं नही चाहता कि जांच रिपोर्ट आने में देरी हो। मैं चाहता हूं कि जांच रिपोर्ट तुरन्त आए, जल्दी आए। इस प्रश्न को किसी भी तरह से राजनीतिक प्रश्न न बनाया जाए यह खीचातानी का सवाल नहीं है, इधर इधर आप इसको न खींचें। आप राजनीति करना चाहते हैं तो उसके लिए बहुत ही जगहें हैं, बहुत से मसले हैं। मनुष्यता के ऊपर इससे बडा दर्द फूट पड़ा है। ऐसे समय में आप इसको राजनीतिक प्रश्न न बना कर मानवता का प्रश्न बनायें। फिर चाहे किसी भी दल के लोग क्यों न हों। सब को इस घटना की भर्त्सना करनी चाहिये। जिन लोगों का भी इसमें हाथ है जाच करके उनके मखौटों को आपको सामने रखना चाहिये ताकि दूसरे लोग उन पर थूके और आगे से ऐसे असामाजिक तत्वों से होशियार रहे।

बहुत से बेकसूर लोगो का खून हुआ है उनको सरकार उचित मुआवजा दे। जो वहा भय का वातावरण छाया है उस स्थिति का सामना करें और उस वातावरण को दूर करे। वहां खाने पीने की चीजे पहुचाई जानी चाहिये।

सरकार को देश के कई हिस्सों में जो इस तरह की घटनाएं हो जाती है उनके प्रति एलर्ट रहना चाहिये। यह ठीक है कि कुछ ऐसे दल हैं जो इस तरह की बातों में लगे रहते हैं और चाहते हैं कि इस तरह की बाते हों और हमारा भी उल्लू सीधा काम चलता रहे। इसान का घर जलता है और दूसरे इस में हाथ सेकते हैं। यह नहीं होना चाहिये। एक बात मैं वाजपेयी जी से जरूर कहना चाहता हूं। इस बात को वह सवेदना व

सहानुभूति से नहीं देख रहे हैं। हम चाहते हैं कि स्थिति सामान्य हो लेकिन वह चाहते हैं कि स्थिति असामान्य हो. . .

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : हम नहीं चाहते हैं।

श्री शंकर दयाल सिंह : इनके दल ने कल दिल्ली बन्द का नारा दिया है, हड़ताल की बात कही है। जहां ये घटनाएं हुई हैं वहां जो लोग गए होंगे उन्होंने देखा होगा कि आग किस तरह से भयंकर रूप में लगी है, सुनियोजित ढंग से लगाई गई है, लोहा तक गल गया है, बिल्कुल जल गया है। मैं आपकी इजाजत से आपके सामने लोहे के इन टुकड़ों को रख रहा हूं ताकि पता चल सके कि किस तरह से वहां घटनाएं हुई है। जब लोहा तक गल गया है तो मैं नहीं जानता कि हमारे विरोधी दल के साथी इस सवाल को राजनीतिक सवाल बनाएं। हम चाहते हैं कि उनके दिल भी पिघलें ताकि मानवता का कल्याण हो।

SHRI SAMAR GUHA (Contai). I have not given an Adjournment Motion, but I thought it would be proper to support it, because it is better that we should discuss this ugly incident freely, frankly and openly, instead of taking an attitude of hush-hush Let the people of the country know, let the world know, let our neighbours know that we are all united in this House, the people of India are united in condemning the ugly incident and also the motive behind it. I express my regret and shame for what happened to these persons and I request that adequate compensation should be given to these sufferers At the same time I am with the others who have demanded a probe. I have a sort of feeling—after going through the facts of the case—whether there is some sort of a conspirational plot behind this sudden and ugly communal incident. Is there any intriguing hand behind this? The reason is this; the ground why I have come to entertain this sort of suspicion is this. Let us look into the causes which have been attributed to this sort of a communal flare-up. It has been stated that there was some altercation between two young boys before a sugarcane stall. Some others said that this was due to assault and clashes between two sets of gamblers Some others said that this was due to some contests between a shop-keeper and a customer. Others said that there was a cinema house and there was some trouble over there.

It appeared to me that such silly things cannot flare up into a communal incident all of a sudden nuless there are some people there to start it. Immediately it came to my mid—this suspicion came to my mind—how and from where such an incident could take place all of a sudden. There must be some other reason behind all this. This is one aspect.

There is another reason for this incident. This is a sensitive area. There had been a riot a year before. There must be a chart—crime chart at the police station. Why did they not act? I do not want to quote but it has been reported in every paper hat the police who were there were besitating to take the necessary steps. Shri Rajgopal went there. It was only then that the police took some active steps. What are the reasons for this? There is another mysterious report that appeared in the press. What was the report? Some press report—I do not know whether it is from the National Herald Press or some other paper—was there that about eight people were killed; Patriot said that 28 people were killed. Each and every paper reported differently. Is it due to police firing that they were killed or due to firing by shivers? There is a report in almost all the papares that there were sniper fires and most of the injuries and deaths were as a result of the fire of these snipers. What did the police do? I do not know whether it was a fact but a report has

[Shri Samar Guha]

been given to me that most of the killings were due to the snipers from the house-top. Who was that person responsible for this? It has been stated that he is a retired police officer who did this. Is it a fact? This has to be probed into. Why did I use the word 'Conspiratorial plot'? Because, I have developed a suspicion—maybe, there is overzealous enthusiasm—because there is overzealous enthusiasm to scuttle even the railway strike by someone? It is they who have been trying to mislead the people.

I know how the people are going on in different parts of the country—I mean the railway offices—threatening to scuttle the railway strike. It is they who create the misunderstanding in the minds of the people. It is these people, in their overzealous attitude, who try to take steps to create confusion in the minds of the people. Is is imaginative? I say that it is the retired police officer who fired from the top of a house. Why cannot he be arrested? He should have been arrested? I want to disabuse my mind from this suspicion. That is the reason I have raised certain postulates. I have not come to the conclusion.

I am worried for another reason. When we have good relations with Bangladesh, Tehran, Afghanistan and trying to ease our relations with Pakistan the world should not get any impression of violence on account of communalism existing in our country. This monster of communalism must be rooted out.

There are reports in the Press saying that there will not be any Magisterial or Judicial probe. Why should such reports appear in the Press? It creates suspicion in the minds. I do not want a Magisterial or a Judicial inquiry. I want a committee of the Members of Parliament to be set-up immediately. I want it for two reasons. First, to extend relief and to create a sense of confidence amongst sufferers This committee should visit the area immediately and create a sense of faith and confidence. Second, this Committee with a sense of seriousness and urgency should probe whether this is a plot and conspiracy of certain mischief mongers and over-enthusiastic people or is it a spontaneous flare up. It not give me an impression of spontaneous flare up. There seems to be some conspiracy behind it and maybe a political conspiracy to divert the attention of the people.

Lastly, I want to address the Prime Minister. She is the President of the National Integration Committee. Let us look at ourselves. There is still that lingering poison in our body-politic. It is the political parties who are responsible for all this. The hearts of the people are clean. The peasants sleep together; the workers sleep together but we shed our crocodile tears before elections. We beg of the minorities for their votes but we have never made any positive efforts whatsoever for harmonious nationalism. I request the Prime Minister—if they really mean business—to see to it that the community is completely free from the virus of communalism and also the task before the National Integration Committee be taken up seriously and sincerely so that the concept of harmony be developed in our country.

19 hrs.

SHRI PRIYA RANJAN DAS MUNSI (Calcutta-South): Sir, almost all the speakers from the Opposition and from our Party have expressed their sentiments and condemned the situation which happened on the 5th. It would have been better if Mr. Vajpayee and other Members from the Opposition had expressed that their main intention was to draw the attention of the Government than to create a situation and atmosphere which may further precipitate the tense atmosphere. It would have been better if all political parties in the Parliament had expressed their dissatisfaction over the situation which took place on the 5th and condemned all those forces which

were responsible for this incident and expressed their united sentiments for the people who still love this country than to see whether Administration is wrong or whether the police force is sufficient or not. But unfortunately, the basic intention of some of the political parties today in bringing forward this adjournment motion is not to ease the situation but to malign the Government and to create an impression or a situation that Government is not at all looking after the interests and rights of the minorities in this country. As you know, and even the enemies of the Congress Party will agree, that the record and the history of the Congress Party will show that the basic character of the Congress Party has been that it has stood all along for secularism. It may be that the Congress has not had the strength enough to fight in the economic struggle; it may be that it did not have strength enough to create a situation where even the poorer people can get food. But no one can deny the fact that the Congress is the only party in India which from the freedom movement up to this day has stood united at least for one cause, and that is the cause of secularism. The basic foundation of our party is the spirit of secularism which we had inherited from the leadership of Mahatma Gandhi.

Unfortunately, I could not follow what Prof. Samar Guha was wanting to explain when he said that he did not even believe in secularism, but he wanted some synthetic nationalism. I do not know what synthetic nationalism is.

SHRI SAMAR GUHA: I wanted it to develop into a positive concept

SHRI PRIYA RANJAN DAS MUNSI Unfortunately, the great patriot Netaji Subhas Chandra Bose, for whom Prof. Guha has a tremendous regard, is not with us today; if he would have been with us, he would have explained the concept of secularism better and he would have said that secularism was the real concept and synthetic nationalism had no meaning.

Charges have been made by the Members of the Opposition, almost by all the Members of the Opposition, against the Congress Party and the Government, that we had simply allowed the situation to continue, as a result of which some people had unfortunately lost their lives. It may be a fact that due to various reasons, either due to their delayed arrival there or due to various other reasons the police arrived there late or they arrived in time but could not take tion to bring the situation within control. But is it not a fact that every time when we accuse the police forces in this country for all the incidents which have taken place, at least some responsible officers have proved their loyalty not to the Congress Party and the Government but to the Constitution and to the people of this country, even risking their lives in order to control the situation? We have witnessed this on many occasions. I would, therefore, say that there are patriots in the police forces and there are patriots in the administration who do feel that if things continue like this, their children would also suffer in course of time. So, I would submit that it is not always wise to accuse the police forces or to accuse the Government and say that they are hopeless and helpless as if only the Members of Parliament and the political parties are the only forces which can control the situation and restore normalcy.

Charges have been made against our party to the effect that the Congress MPs went there with political patronage, having been blessed by Government, whereas the Opposition Members could not there. I deny this charge. Neither Mr. H. K. L. Bhagat nor the other Congress MPs who went there even telephoned to Mr. Uma Shankar Dikshit or even the police officers asking for protection, but they went on their own taking all the risk. But some of the Members of the Oppo

[Shri Priya Rajan Das Munsi]

sition first contacted the Lt. Governor, and then they contacted the Home Minister not with a view to go there and create a situation conducive to the restoration of peace, but first to be safeguarded with police protection for themselves and then to go and witness the situation. This is the fact. This was what they did. But the Members of the Congress Party did not do so. (*Interruptions*). They went on their own. Mr. Bhagat went on his own. Even in the Shahdara incidents I know that he did the same thing; risking his life, he went there on his own. (*Interruptions*) Let not my hon. friends interrupt. I know what security they require. So, why should they shout and interrupt?

MR. CHAIRMAN: He did not name any Opposition Member or party. So, why should the hon. Member or a particular section of hon. Members from the Opposition get provoked?

SHRI PRIYA RANJAN DAS MUNSI Another charge that has been made is that enthusiastic sections of the Government side or of the Congress Party were amongst the people who went to resist the strike or who went to see the failure of the strike and they were the partners in the game, as Prof. Samar Guha had explained in his speech.

Sir, I would like to put it in another way. Perhaps this is one plot that the gangsters have understood, namely, when the Government and its entire machinery and the responsible patriotic forces are doing their best to avert the threatened railway strike, when their entire attention is engaged there, then the gangsters have chosen the right and opportune moment to create a further massacre in the capital to divert the entire attention of the Government, so that there might be perhaps another situation created

Sir, we have been witnessing during the last three months speeches and incidents directing the target, Delhi *chalo*, to create a situation in Delhi as was seen in Gujarat and Bihar, and experiments have been made on various occasions but they have all failed. Perhaps the incident in Sadar Bazar and Azad Market is not an accident. But I do feel that it has failed, and I feel that it might be a planned, organised effort to create a situation not only in Delhi but all over India to create a situation in the economic development of the country.

Sir, this is a strike call given by a particular party or certain political parties, I do not know. If those political parties are sincerely demanding peace at the moment with the cooperation of the Government and all the political forces, is it proper at the moment to call a bandh to excite or incite violence, especially those gangsters who have been waiting till now for further opportunities to create disorder and disaster in this capital? Is it fit enough at the moment? Whether a Hindu dies or a Muslim dies, everybody has sympathy for all the poor people, and I do feel that the compensation that the Government would like to give is not sufficient in the shape of money. The real compensation for the loss would be the guarantee of the political parties that united we shall resist all the hooliganism, united we shall oppose it and united we shall condemn this sort of activities in our country. That will be the real compensation for those families.

My last appeal to you is this. Mr. Jyotirmoy Bosu said many things and charged us with many things. I do not wish to repeat them because on most of the occasions I ignore his argument. They are not practical, and nobody cares. But I would like to refer to only one point. He said that the riot took place under the leadership of Mrs. Indira Gandhi and the Congress Party. He said that the Government have failed everywhere and that the Home Minister should resign. I would like to remind him and his party—at least the Communist Party of India will agree with me that it was his party, at the time of

the rule of the United Front Government in West Bengal in 1969, when the non-Bengali speaking Muslims and the Hindustanis stood firmly by the Congress in a pocket of the Hooghly district, namely, Telenapara, when the others indulged in massacre. (*Interruptions*)

SOME HON. MEMBERS: Shame, shame.

SHRI NOORUL HUDA (Cachar): It is absolutely wrong. (*Interruptions*).

SHRI PRIYA RANJAN DAS MUNSI: Please stop. You are just a new entrant. You were not a member of the party then. (*Interruptions*). At that time, we requested and we demanded the Home Minister there, Shri Jyoti Basu, and all the political parties, to restore peace, law and order. If I am wrong, it may be verified from the records of the West Bengal Government. It was happening in Kerala. I am told. But Shri Vayalar Ravi knows it better. So, Sir, it is not wise to say that the Government intentionally allowed the situation to grow like that. But one thing is very clear. I would appeal to the Home Minister and the Government and to our reverted leader, the Prime Minister also, that in this situation, at the moment, there is a threat to the Government and the patriotic forces: either you compromise or we will create trouble. I say that it is better to fight and not to compromise. Either we fight for progress and succeed or we do not. There is no midway. There is no question of compromise.

The Jan Sangh said—and *Motherland* was referred to by Bhagatji—that they are for direct action. What do they mean by direction? By calling for direct action, are they deliberately creating a situation whereby an incident as in Sadar Bazar took place with the help of the gangsters? If that is so, I would finally appeal to the Government that they should stand firm and be bold enough to deal with the situation. If the gangsters are going to kill, we are ready to die, but no compromise in this hour of crisis. This is one thing on which I would appeal to you. Sir, my last submission is this. The licences for arms are huge in number in Northern India. I am told that the Punjab Police and the Delhi Police make some relaxation in regard to issue of arms licences. When I compare the licensing procedure that is obtaining in Calcutta with that of other places like Delhi, I find that there is a tremendous disparity I do not know how they get it. I would request the Home Minister to clarify the position. There should be a uniform pattern all over India in regard to the issue of arms licences.

Telescopic rifles are being found in Delhi and other places. What happened in Sadar Bazar? I am not saying that some people took part and took the initiative, but, I believe and I apprehend that it was a planned game. Every such incident, whether it is communal or any other incident, is started with professional goondas. They are hired and they are paid for it. I am sorry to submit before the hon Home Minister that in Delhi, during the last one year, activities of the anti social elements have been on the increase. I think Members of the Opposition as well as the ruling party would agree with me that in the picture houses, in night shows, even in Connaught Place, responsible family people, unless they are accompanied by four or five family members, dare go and enjoy the films. I have personal experience about this. Goondas completely drunk with dagger, sometimes with gun, use filthy language times hold out threats. If a single girl, goes to see a film or goes for shopping, there is no guarantee that she will come back home safe. It is not that Government has failed. But, perhaps, the anti social elements have gained upper hand in Delhi and other places because of many reasons, either they are planted by political parties or they are being hired by some foreign

[Shri Priya Rajan Das Munsi]

agents. I am not quite sure. But, it is a fact that last year, one girl was raped in the Delhi University campus and there were several incidents of looting. The anti social elements have got monopoly right in Delhi streets in the nights. Whatever they want, they can do. It is a fact. Taxiwalas do not want to take passengers to the remote places of Delhi after 9 P.M. This is happpening. My submission to the Home Minister is, all the anti-social elements whether they come from Punjab or Delhi or any other part of India, and who are staying at Delhi, irrespective of their caste, creed and religion, should be detained under MISA until the law and order situation improves and incidents of the nature of Sadar Bazar do not recur. I appeal to the Members of the Opposition, forgetting the adjournment motion, forgetting who is right and who is wrong, let us unanimously resolve that Parliament is against those forces which an engaged in communal activities. Let Sadar Bazar be the last incident and we should be united to face the situation if it happens tomorrow.

श्री एस० ए० शमीम (श्रीनगर) : सभापति जी इस मुल्क की और इस हाउस की बदकिस्मती यह है कि रेल का मामला हो. या तेल का मामला हो फसादात का मामला हो या शुबहात का मामला हो, हम लोग बहुत कम पार्टी बाजी से ऊपर आते हैं। अगर आज का फसाद इस मुल्क का आखरी फसाद होता तो मुझे कोई ऐतराज नही था कि चलो, यह इस मुल्क का आखरी फसाद होना था, अगर इतनी बडी कीमत दी तो कोई बात नही, कम से कम इस के बाद तो इस मुल्क की फिजा इस मुल्क का माहौल सुधर जाता लेकिन सख्त बदकिस्मती यह है कि फसादात का यह सिलसिला पिछले 27 सालों से जारी है और आज इस फसाद ने फिर एक बार दिल को दहला दिया है। इस लिये नहीं कि 100 आदमी मारे गये या 100 मकान जले, लेकिन अभी तो हजारों आदमियों को मरना है, सैकड़ों नहीं हजारों मकानों को जलना है --इस बात ने बेचैन कर दिया है। इसी वजह से आप की तवज्जह इस तरफ़ दिलाने के लिये हम ने इस ऐवान में बहस को आगाज किया है।

मैंने वाजपेयी जी और सेट जी की तकरीरों को हुक्मरान मेम्बरों की तकरीरों को बडी दिलचस्पी से सुना। वाजपेयी जी की तकरीर के एक एक शब्द से मुझे ऐतराज नहीं है, बडी मासूम तकरीर उन्होंने की। वाजपेयी जी की तकरीर के बाद मैं अपने आप से यह सवाल पूछ रहा था--अगर इस मुल्क के एक बहुत बडे नेता जिन के पीछे एक जमायत है, ये विचार रखते हैं, ये ख्याल रखते हैं तो फिर इस किस्म की दुर्घटनाये क्यो होती हैं। वाजपेयी जी ने पूछा--रजीत सिंह की मां ने और यूसुफ़ की मां ने हम से यह सवाल किया है कि उन का बेटा क्यो मारा गया ? अगर इस सवाल का कोई जवाब न होता तो हम समझते कि चूकि इस का कोई जवाब नही है इस लिये इस सवाल का जवाब देना हमारा फर्ज भी नही है। लेकिन हमारी बदकिस्मती यह है कि इस सवाल का जवाब मौजूद है--वाजपेयी जी भी जानते है, मैं भी जानता हूं, आप सब जानते हैं कि क्यों वे मासूम मारे जाते हैं, जिन की सिर्फ यह खता होती है कि उन्होने एक खास घराने में पैदा होकर एक खास नाम अपने ऊपर लिया है। इस की वजह यह नही है कि दो रस-पिलाने वाले आपस में लड पड़े। इस की वजह यह नही है कि साईकल वाला और ठेलेवाला टकरा गये, इस वजह से खून खराबा हो गया। फसादात के लिये सैकडो आदमियों को पागल बनाना पड़ता है उन्हे वायलेंस जुल्म और तशद्दुद की शराब पिलानी पड़ती है और असल बात यह है कि हम लोगों ने इस मुल्क मे अभी इस फिजा को खत्म नही किया है जिस में वायलेंस फिर केवाराना वायलेंस खास तौर से परवरिश

पाती है । यह तो एक बहाना है कि हुकूमत ने कोताही की है, हुकूमत से गफलत हुई है, लापरवाही हुई है, फसादात को बरवक्त रोका जाता तो शायद 30 आदमी न मरते, 5 आदमी मरते या 2 आदमी मरते लेकिन यह मसले का हल नही है । हम हुकूमत को दोष देते हैं, उस की नाअहलियत, गफलत और लापरवाही को दोष देते हैं लेकिन मैं हुकूमत की बादर्मा.यती को दोष नही देता क्योंकि इस सारी दुर्घटना से यू तो सारे मुल्क मे इस शहर की कालिख लगी हुई है—लेकिन सब से ज्यादा रुसवा इस मुल्क की हुकूमत हुई है । मैं नही समझता कि इस हकुमत मैं ऐसे हुक्काम मौजूद हैं जो सिर्फ अपने दुश्मन को नीचा दिखाने के लिये चेहरे पर कालिख मले । इस मुल्क मे इस हुकूमत मे इस कानून के तेहत ऐसे लोग मौजूद हैं जो फिजा तैयार करते है—जिस तरह खेती मे फसाद के बीज डाल दिय जाये तो फसाद की पूरी फसल तैयार हो जाती है ।

वाजपेयी जी आपने कहा है कि मस्जिदो और मन्दिरो का गलत इस्तेमाल नही होना चाहिये । कौन कहता है कि होना चाहिये ? आप ने कहा है कि हिन्दुस्तानी मरे हैं और इस देश के माथे पर कलं कलगा है—लेकिन यहां मुझे एसा महसूस होता है कि हम पालियामेन्ट मे एक जुबान बोलते है और जब हमारे पास मुहज्जिद आडियेंस होती है तो दूसरी जुबान इस्तेमाल करते है । हमारी जुबान में बड़ी मासूमियत होती है, मैं इस के लिये आप को दोष नहीं देता, लेकिन क्या आप अपनी पार्टी के अखबार पढते है, क्या आप की पार्टी का अखबार "मदर लैंड" भी यही बात कहता है, क्या आर्गेनाइजर भी यही बात कहता है ? इस मुल्क में हिन्दू मुसलमान, सिख, इसाई सब एक हैं क्या ये अखबार ऐसा, कहते हैं, मस्जिदो और मन्दिरो का गलत इस्तेमाल नही होना चाहिये—क्या ये अखबार भी ऐसी राय जाहिर करते हैं ? मैं बाकायदा इन अखबारो का मुताला करता हू और इस लिय करता हू कि जहर की बुनियाद को जानना चाहता हू । यहा सेट साहब मौजूद हैं—उन्हो ने भी बडी परेशानी का इजहार किया है । लेकिन क्या सेट साहब अपनी पार्टी के अखबारात पढ़ते है ? मैं भी उन के अखबारात पढताहू मैं सेट साहब को दोष नही देता हू, मैं वाजपेयी जी को दोष नही देता हू, दोष इस हद तक देता हू कि पालियामेन्ट मे खूबसूरत भाषण करने से, मासूम बाते करने से ये हुकूमत के बुकला हुकूमत की वकालत करने से क्या उस जज्बे को खत्म कर सकते हैं जिस ने इस मुल्क का बटवारा किया और जो आज भी हमारे दिलो का बटबारा करना चाहता है । कौन कहता है—हिन्दू मरा, कौन कहता है—मुसलमान मरा, मैं नही जानता उन का मजहब क्या था, लेकिन इतनी बात जानता हू कि उन्होने कोई कुसूर नही किया था उन्होंने कोई गुनाह नही किया था । आप ने रजीत सिह की बात की, यूसुफ की बात की, वे तो मर गये, उन पर फातिहा पढ कर मुतमईन हो सकते है लेकिन वे बच्चे जिन्हे अभी माओ से जन्म लेना है जो, माओ की कोख मे पल रहे है उनको कत्ल करने के मसूबे बन रहे है उनको मटिया-मेट करबे की साजिशे हो रही है—उसकी फिक्र कर लीजिए । हम अपने बच्चों को कौन सा मुस्तकबिल दें, इसकी फिक्र कीजिए । यह कहने से बात नही बनेगी कि हुकूमत ने बरवक्त कार्यवाही की,

[श्री एस० ए० शकील]

पुलिस वहां पर पहुच गई थी और उसके बाद विरोधी दल का गलत इलजाम हैं—यह बात उन लोगो ने की है जिनके लख्ते जिगर इस फसाद की आग मे झुलस गए उन्हे मालूम है कि पुलिस वहा पहुची या नही पहुची। आप लोग एयरकडीशन्ड एवान मे बैठकर क्यों फैसला देते हैं आप अपने जमीर की अदालत के सामने खडे होकर देखें कही कोताही जरूर हुई है, कही जरूर कोई गफलत हुई है और जो कुछ हुआ उससे सिर्फ यह सबक हासिल कर लीजिए कि आइन्दा ऐसा न हो। आपने बात की यूसुफ की, आपने बात की रजीत सिंह की। एक बात हम भूल जाते हैं, एक मा के बच्चा को, चार बच्चो को दहकती आग मे जलाया गया था। हमारी कोताही यह है कि हम अपनी कोताहियो को, अपनी बुजदिली को, हम अपनी गद्दारी को भूल जाते हैं। अगर हर लमहा हमारे सामने उस बेगुनाह औरत के मासूम बच्चे रहते तो हमारे हाथ से कभी ऐसा हादसा नही होता। मुझे यह वाक्या श्रीमती सुभद्रा जोशी जी ने बताया कि 1947 मे जब इस मुल्क में, दिल्ली में खास तौर से फिरकेवाराना फसाद हो रहे थ तो वह और बहुत से लोग गाधी जी के पास गए उनसे कहा कि गाधीजी दिल्ली की हाल बहुत खतरनाक है, मुसलमानों पर सख्त जुल्म हो रहे हैं, मुसलमान मारे जा रहे हैं तो गाधीजी ने पूछा उनको बचाने के लिए क्या कर रहे हो ? उन लोगों ने कहा बहुत कुछ कर रहे हैं। गाधीजी ने कहा या बताओ मुसलमानो को बचाने मे कितने हिन्दू मारे गए ? अब यह सवाल पूछने वाला इस मुल्क मे कोई नहीं रहा। अब यह पार्लियामेन्ट है, यहा यहां पर एक तरफ इल्जाम लगते हैं कि उसने हिमाकत की, उसने गद्दारी की और दूसरी तरफ यह इल्जाम लगता है कि कुसूर आपका है। गाधी जी की तरह से यहां पूछने वाला कोई नही हैं कि तुम जो पार्लमेन्ट के एयरकंडीशन्ड ऐवान मे तकरीर कर रहे हो तुम मे मुसलमानो को बचाने के लिए कितने हिन्दू मरे और हिन्दुओ को बचाने के लिए कितने मुसलमान मरे। यह सवाल पूछने वाला अब इस देश मे कोई नही रहा। यही वजह है कि यह आखिरी फसाद नहीं है। मैं जिस बात पर तवज्जह दिलाना चाहता हू वह यह नही है कि फसाद हुआ उसकी अहमियत है लेकिन मैं इस एवान को बताना चाहता हू कि इस मुल्क मे अभी और फसादात होगा इसलिये उसकी फिक्र कीजिए। अगर दयानतदारी से आप महसूस करते हैं कि हमने, हमारी लीडरशिप ने, हमारे तालीमी इदारो ने, मास मीडिया ने, सियासी जमातो ने जो एक जबान पार्लमेन्ट मे आकर बोलते हैं, एक जबान अखबार मे लिखते हैं और एक जबान से मोहल्ले वालो के जो जलसे होते है उनमे तकरीरे करते है। एक ही तरीका है हम एक दिल और एक जबान से जो महसूस करते है, अगर वाकई दयानतदारी से महसूस करते हैं कि मुसलमान एक साथ नहीं रह सकते तो बजाये इसके कि सेक्युलेरिज्म का सहारा ले, बजाये इसके कि रियाकारी से काम ले, यह कहे कि नही नही, हम इस देश मे एक साथ रहने वाले नही है, उनका बडा करम होगा अगर खुलकर आये और कहे कि नही और, हिन्दू मुसलमान इस देश में एक साथ नही रह सकते।

बहुत सी बातें कही गई बगला देश की और अमरीका की। जिस तरह से कुछ लोग

रेल की दुर्घटना को रोकने के लिए गलतफहमी पैदा करने के लिए बसने को एक पहलू देते हैं उसी तरह से कुछ लोग असल बाकये से तवज्जह हटाने के लिए ऐसी बाते करते हैं बगला देश की, इरान की और पाकिस्तान की। रेल तेल से इसका कोई सम्बन्ध नही है। इस वक्त सवाल यह है कि इस मुल्क मे हर साल अगर सैकडो मौते होती हैं तो क्या वजह है कि अभी तक एक कातिल को भी फासी के तख्ते पर नही लटकाया गया जिसने एक बेगुनाह इनसान का गला काटा। क्योकि जब ऐसे कातिल को मालूम होगा कि उसका हर अमल जेल ही नही, फासी के तख्ते पर उसको लटकायेगा तभी उसके दिल मे खौफ पैदा होगा। अगर एक आदमी किसी का कत्ल करता है तो उसको आप फासी की सजा देते हैं लेकिन जब सौ आदमी मिलकर एक हजार कत्ल करते है तो कहते हैं कि इक्वायरी कमीशन अपनी रिपोर्ट सबमिट कर रहा है। इन्साफ और कानून के यह तकाजे जो हैं वह यकीनन इस मुल्क के लिए नेक फेल का हिसाब नही रखते है। हमे सोचना होगा और खुलकर सोचना होगा कि हम फिरकापरस्त ताकतो को रोकने के लिए, उनके असर को

दस मिनट की तकरीर के लिए मैं ने साढे तीन घटे की तकरीरे सुनी है, मैं दो मिनट और चाहता हू।

मैं सिर्फ यह कहना चाहता हू इस मुल्क की लीडरशिप बहैसियत मजमुई यह फैसला करे कि हमे फिरकापरस्त जमातो को नही बल्कि दिलो मे परवरिश पाने वाली फिरकापरस्ती को खत्म करना है। अभी वाजपेयी जी ने मजाक मे शशि भूषण जी से कहा था आप तो काग्रेसी जनसघी है--शशि भूषण जी की सेक्युलेरिज्म पर मुझे बडा विश्वास है--लेकिन इस बात मे कोई शक नही है कि इस जमात मे भी आपकी तरह सोचने वाले मौजूद है और उस जमात मे भी आपकी तरह सोचने वाले मौजूद है। हमे इस मुल्क की सियासत को एखलाकी बुनियादो पर कायम करना होगा जब इस मुल्क मे गाधी जी जैसा कोई आदमी यह पूछे बताओ फसादात की कहानिया बडे मजे मे सुनते हो, कुछ ऐसे भी मोलवी और पडित है इस मुल्क मे जो फसादात की मुबालगा --आमेज लजीज कहानिया सुना सुना कर लहू गरम करते है। मैं ने ऐसे मोलवी साहब को सुना जो फर्जी कहानिया सुना सुना कर लहू गरमाते है। वे जो कहानिया सुनाते है उन कहानिया को सुनाने पर कोई पाबन्दी नही है। अखबारात जहर फैलाते है और हमारे इन्द्र कुमार गुजराल साहब कहते हैं मैं बिल्कुल गैरजानिबदार हू, फिरकेवाराना जहर फैलाने वाले अखबारात को भी इश्तहार देता हू और सेक्युलेरिज्म फैलाने वाले अखबारात को भी इश्तहार देता हू, हमारी दाद दो मैं कितना गैरजानिबदार हू। हमे इस मुल्क के लिए राह मुकर्रर करनी है कि इसे गाधी जी के रास्ते पर चलना है या गोडसे के रास्ते पर चलना है। इसलिये आज जो हुआ है वह इसलिये हुआ है कि हमने अहमदाबाद की हकीकत को तस्लीम कर लिया, हमने जलगाव, भिवण्डी और राची की हकीकत को तस्लीम कर लिया कि यह तो ऐसा होता ही रहता है। शशि भूषण जी ने कहा इस देश मे अकलियते महफूज है। किसी हद्दतक से

[श्री एस०ए० शमीम]

उनसे मुत्तफिक हूं। इस मुल्क में 55 करोड़ की आबादी में 50 करोड़ हिन्दू हैं, यहा अगर 5 करोड़ मुसलमान जिन्दा हैं तो इसलिये जिन्दा हैं कि 50 करोड़ हिन्दुओ की नीयत ठीक है, उनका किरदार ठीक है लेकिन काले कौवे कहा नही होते ? वह मुसलमानो में भी है और हिन्दुओ में भी है। उन गुंडो का जैसा शेख साहब ने कहा कोई मजहब नही होता। उन्होने अकबर की तरह अपना एक मजहब ईजाद किया है। उस मजहब का मुताला कीजिए वह अगर उनके मफाद की चीज है तो वे यकबयक जनसघी, काग्रेसी और कम्युनिस्ट कहलाते है। आप गुडो के मजहब का मुताला करके गुडो के खिलाफ यलगार कीजिए। वे किसी मजहब के साथ ताल्लुक नही रखते। यह महज इत्तफाक है कि एक गैंग का लीडर रामबीन है तो दूसरे का अल्लारखा। जिस वक्त उन्होने कत्लो गारत का बाजार गर्म किया उस वक्त वह न हिन्दू रहते हैं न मुसलमान।

मेरा आखिरी जुमला यह है कि जब तक यह हाउस अपने कौल व अमल मे, जो कुछ वह कहते हैं और करते हैं उसमे हमाहमी न करे हमारी लच्छेदार तकरीरो से कुछ नही होगा। होम मिनिस्टर साहब, आपकी काब्लियत अपनी जगह मुसल्लम है, हो तो हो लेकिन जो कुछ हुआ है इसके लिए भगवान के यहा आपका हिसाब किताब होगा लेकिन जो कुछ होने वाला है उसकी फिक्र कीजिए।

[شری شمیم احمد شمیم (سری نگر)-

سبھاپتی جی اس ملک کی اور اس ہاؤس کی بدقسمتی یہ ہے کہ ریل کا معاملہ ہو یا تیل کا معاملہ ہو- فسادات کا معاملہ ہو یا شہادت کا معاملہ ہو ہم لوگ بہت کم پارٹی بازی سے اوپر آتے ہیں- اگر آج کا فساد اس ملک کا آخری فساد ہوتا تو مجھے کوئی اعتراض نہیں تھا- کہ چلو یہ اس ملک کا آخری فساد ہونا تھا- اگر اتنی بڑی قیمت دی تو کوئی بات نہیں- کم سے کم اس کے بعد تو اس ملک کی فضا- اس ملک کا ماحول سدھر جاتا- لیکن سخت بد قسمتی یہ ہے کہ فسادات کا یہ سلسلہ پچھلے ۲۷ سالوں سے جاری ہے- اور آج اس فساد نے پھر ایک بار دل کو دہلا دیا ہے- اس لئے نہیں- کہ ۱۰۰ آدمی مارے گئے اور ۱۰۰ مکان جلے- لیکن ابھی تو ہزاروں آدمیوں کو مرنا ہے- سینکڑوں نہیں ہزاروں، مکانوں کو جلانا ہے- اس بات نے بیچین کر دیا ہے- اسی وجہ سے آپ کی توجہ اس طرف دلانے کے لئے ہم نے اس ایوان میں بحث کا آغاز کیا ہے-

میں نے واجپئی جی- اور سیٹھ جی کی تقریروں کو- حکمران ممبروں کی تقریروں کو بڑی دلچسپی سے سنا- واجپئی جی کی تقریر کے ایک ایک شبد سے مجھے اعتراض نہیں ہے- بڑی معصوم تقریر انہوں نے کی- واجپئی جی کی تقریر کے بعد میں ابھی آپ سے یہ سوال پوچھ رہا تھا - اور اس ملک کے ایک بہت بڑے

نوتا- جی کے پیچھے ایک جماعت ہے- یہ وچار رکھتے ہیں- یہ خیال رکھتے ہیں- تو پھر اس قسم کی درگھٹنائیں کیوں ہوتی ہیں- واجپئی جی نے پوچھا- رنجیت سنگھ کی ماں نے اور یوسف کی ماں نے ہم سے یہ سوال کیا ہے- کہ ان کا بیٹا کیوں مارا گیا- اگر اس سوال کا کوئی جواب نہ ہوتا تو ہم سمجھتے- کہ چونکہ اس کا کوئی جواب نہیں ہے اس لئے- اس سوال کا جواب دینا ہمارا فرض بھی نہیں ہے- لیکن ہماری بد قسمتی یہ ہے کہ اس سوال کا جواب موجود ہے- واجپئی جی بھی جانتے ہیں- میں بھی جانتا ہوں- آپ سب جانتے ہیں کہ کیوں وہ معصوم مارے جاتے ہیں- جن کی صرف یہ خطا ہوتی ہے- کہ انہوں نے ایک خاص گھرانے میں پیدا ہوکر ایک خاص کام اپنے اوپر لیا ہے- اس کی وجہ یہ نہیں ہے- کہ دو رس پلانے والے آپس میں لڑ پڑے- اس کی وجہ یہ نہیں ہے کہ سائیکل والے اور ٹھیلے والے ٹکرا گئے- اس وجہ سے خون خرابہ ہوگیا- فسادات کرانے پر سیکڑوں لوگوں کو بے کل بنانا پڑتا ہے- انہیں وائلنس- ظلم اور دہشت کی شراب پلانی پڑتی ہے- اور اصل بات یہ ہے- کہ ہم لوگوں نے اس ملک میں ابھی اس فضا کو ختم نہیں کیا ہے- جس میں وائلنس-

فرقہ وارانہ وائلنس خاص طور سے پرورش پائے ہیں- یہ تو ایک بہانہ ہے کہ حکومت نے کوتاہی کی ہے- حکومت سے غفلت ہوئی ہے- لاپرواہی ہوئی ہے- فسادات کو ہر وقت روکا جاتا تو شاید ۳۰ آدمی نہ مرتے- ۵ آدمی مرتے یا دو آدمی مرتے- لیکن یہ مسئلے کا حل نہیں ہے- ہم حکومت کو دوش دیتے ہیں- اس کی نا اہلیت- غفلت اور لاپرواہی کو دوش دیتے ہیں- لیکن میں حکومت کی بددیانتی کو دوش نہیں دیتا- کیونکہ اس ساری درگھٹنا سے- یوں تو اور ملکوں میں اس زہر کی کلاس لگی ہوئی ہے- لیکن سب سے زیادہ رسوا اس ملک کی حکومت ہوئی ہے- میں نہیں سمجھتا کہ اس حکومت میں ایسے حکام موجود ہیں- جو صرف اپنے دشمن کو نیچا دکھانے کے لئے اپنے چہرے پر کالس ملے- اس ملک میں اس حکومت میں- اس قانون کے تحت ایسے لوگ موجود ہیں- جو فضا تیار کرتے ہیں- جس طرح کھیتی میں فساد کے بیج ڈال دئے جائیں تو فساد کی پوری فصل تیار ہو جاتی ہے-

واجپئی جی آپ نے کہا ہے کہ مسجدوں اور مندروں کا غلط استعمال نہیں ہونا چاہیئے- کون کہتا ہے کہ ہونا چاہیئے- آپ نے کہا ہے کہ

[شری شمیم احمد شمیم]

ہندوستانی مرے ہیں اور اس دیش کے ماتھے پر کلنک لگا ہے۔ لیکن یہاں مجھے ایسا محسوس ہوتا ہے کہ ہم پارلیمینٹ میں ایک زبان بولتے ہیں اور جب ہمارے پاس مہذب آڈیئنس ہوتے ہیں۔ تو دوسری زبان استعمال کرتے ہیں۔ ہماری زبان میں بڑی معصومیت ہوتی ہے۔ میں اس کے لئے آپ کو دوش نہیں دیتا۔ لیکن کیا آپ اپنی پارٹی کے اخبار پڑھتے ہیں۔ کیا آ کی پارٹی کا اخبار صدر لیفٹ بھی یہی بات کہتا ہے۔ کیا آرگنائزر بھی یہی بات کہتا ہے اس ملک میں ہندو۔ مسلمان۔ سکھ۔ عیسائی سب ایک ہیں ۔ کیا یہ اخبار ایسا کہتا ہے ۔ مسجدوں اور مندروں کا غلط استعمال نہیں ہونا چاہیئے۔ کیا یہ اخبار بھی ایسی رائے ظاہر کرتے ہیں۔ میں باقاعدہ ان اخباروں کا مطالعہ کرتا ہوں۔ اور اس لئے کرتا ہوں کہ زہر کی بنیاد کو جاننا چاہتا ہوں۔ یہاں سہگل صاحب موجود ہیں۔ انہوں نے بھی بڑی پریشانی کا اظہار کیا ہے۔ لیکن کیا سہگل صاحب اپنی پارٹی کے اخبارات پڑھتے ہیں۔ میں بھی ان کے اخبارات پڑھتا ہوں میں سہگل صاحب کو دوش نہیں دیتا ہوں۔ دوش اس حد تک دیتا ہوں کہ پارلیمینٹ میں خوبصورت بھاشن کرنے سے۔ معصوم باتیں کرنے سے یہ حکو کے وکلا حکومت ہند کی وکالت کرنے سے کیا اس فتنہ کو ختم کرسکتے ہیں۔ جس نے اس ملک کا بٹوارہ کیا۔ اور جو آج بھی ہمارے دلوں کا بٹوارہ کرنا چاہتے ہیں۔ کون کہتا ہے کہ ہندو مرا۔ کون کہتا ہے کہ مسلمان مرا۔ میں نہیں جانتا کہ ان کا مذہب کیا تھا۔ لیکن اتنی بات جانتا ہوں کہ انہوں نے کوئی قصور نہیں کیا تھا۔ انہوں نے کوئی گناہ نہیں کیا تھا۔ آپ نے رنجیت سنگھ کی بات کی یوسف کی بات کی۔ وہ تو مر گئے۔ ان پر فاتحہ پڑھ کر مطمئن ہو سکتے ہیں۔ لیکن وہ بچے جنہیں ابھی ماؤں سے جنم لینا ہے۔ جو ماؤں کی کوکھ میں پل رہے ہیں۔ ان کو قتل کرنے کے منصوبے بن رہے ہیں ان کو ملیامیٹ کرنے کی سازش ہو رہی ہے۔ اس کی فکر کر لیجئے۔ ہم اپنے بچوں کو کونسا مستقبل دیں۔ اس کی فکر کیجئے۔ یہ کہنے سے بات نہیں بنیگی۔ کہ حکومت نے ہر وقت کاروائی کی پولیس وہاں پر پہنچ گئی تھی۔ اور اس کے بعد وروودھی دل کا غلط الزام ہے۔ یہ بات ان لوگوں نے کی ہے۔ جن کے لطف جگر اس فساد کی آگ میں جھلس گئے ہیں۔ انہیں معلوم ہے کہ پولیس وہاں پہنچی یا نہیں پہنچی آپ لوگ ایئرکنڈیشن ایوان میں بیٹھ کر کیوں فیصلہ دیتے ہیں۔ آپ اپنی ضمیر کی عدالت کے سامنے کھڑے ہوکر دیکھیں۔ کہیں کوتاہی

اب یہ پارلیمینٹ ہے- یہاں پر ایک طرف الزام لگتے ہیں کہ اس نے حمایت کی اس نے غداری کی- اور دوسری طرف یہ الزام لگتے ہیں کہ قصور آپ کا ہے- گاندھی جی کی طرح سے یہاں پوچھنے والا کوئی نہیں ہے کہ تم جو پارلیمینٹ کے ایگزیکٹیو ایوان میں تقریر کررہے ہو- تم میں مسلمانوں کو بچانے کے لئے کتنے ہندو مرے- اور ہندوؤں کو بچانے کے لئے کتنے مسلمان مرے- یہ سوال پوچھنے والا اب اس دیش میں کوئی نہیں رہا- یہی وجہ ہے کہ یہ آخری فساد نہیں ہے- میں جس بات پر توجہ دلانا چاہتا ہوں- وہ یہ نہیں ہے کہ فساد ہوا- اس کی اہمیت ہے- لیکن میں اس ایوان کو بتانا چاہتا ہوں کہ اس ملک میں ابھی اور فسادات ہونگے- اس لئے اس کی فکر کیجئے- اگر ایمانداری سے آپ محسوس کرتے ہیں- ہم نے- ہماری لیڈرشپ نے- ہمارے تعلیمی اداروں نے- ماس میڈیا نے سیاسی جماعتوں نے جو ایک زبان پارلیمنٹ میں آپ بولتے ہیں اور ایک زبان سے محلے والوں کے جو جلسے ہوتے ہیں- ان میں تقریر کرتے ہیں- ایک ہی طریقہ ہے- ہم ایک دل اور ایک زبان سے جو محسوس کرتے ہیں- اگر واقعی ایمانداری سے محسوس کرتے ہوں- تو ہندو- مسلمان ایک

ضرور ہوتی ہے- کہیں ضرور کوئی غفلت ہوتی ہے- اور جو کچھ ہوا اس سے صرف یہ سبق حاصل کر لیجئے کہ آئندہ ایسا نہ ہو- آپ نے بات کی یوسف کی- آپ نے بات کی رنجیت سنگھ کی- ایک بات ہم بھول جاتے ہیں ایک ماں کے بچوں کو- چار بچوں کو دہکتی آگ میں جلایا گیا تھا- ہماری کوتاہی یہ ہے کہ ہم اپنی کوتاہیوں کو- اپنی بزدلی کو- ہم اپنی غداری کو بھول جاتے ہیں- اگر ہر لمحہ ہمارے سامنے اس بےگناہ عورت کے معصوم بچے رہتے تو ہمارے ہاتھ سے کبھی ایسا حادثہ نہیں ہوتا- مجھے یہ واقعہ شریمتی سبھدرا جوشی جی نے بتلایا- سنہ ۱۹۴۷ میں جب اس دلی میں خاص طور سے فرقہ وارانہ فساد ہورہے تھے- تو وہ اور بہت سے لوگ گاندھی جی کے پاس گئے- ان سے کہا کہ گاندھی جی دلی کی حالت بہت خطرناک ہے- مسلمانوں پر سخت ظلم ہورہے ہیں- مسلمان مارے جارہے ہیں- تو گاندھی جی نے پوچھا ان کو بچانے کے لئے کیا کررہے ہو- ان لوگوں نے کہا کہ بہت کچھ کررہے ہیں- گاندھی جی نے کہا کہ بتاؤ مسلمانوں کو بچانے کے لئے کتنے ہندو مارے گئے- اب یہ سوال پوچھنے والا اس ملک میں کوئی نہیں رہا-

[شری شمیم احمد شمیم]

ساتھ نہیں رہ سکتے تو بجائے اس کے کہ سیکولریزم کا سہارا لیں بجائے اس کے کہ ریاکاری سے کام لیں یہ کہیں- کہ نہیں- نہیں- ہم اس دیش میں ایک ساتھ رہنے والے نہیں ہیں- ان کا بڑا کرم ہوگا- اگر کھل کر آئیں اور کہیں کہ نہیں- ہندو- مسلمان اس دیش میں ایک ساتھ نہیں رہ سکتے-

بہت سی باتیں کہی گئیں- بنگلہ دیش کی اور امریکہ کی- جس طرح سے کچھ لوگ ریل کی دورگھٹنا کو روکنے کے لئے غلط فہمی پیدا کرنے کے لئے مسئلے کو ایک پہلو دیتے ہیں- اسی طرح سے کچھ لوگ اصل واقعہ سے توجہ ہٹانے کے لئے ایسی باتیں کرتے ہیں- بنگلہ دیش کی- ایران کی- اور پاکستان کی- ریل تیل سے اس کا کوئی سمبندھ نہیں ہے- اس وقت سوال ہے کہ اس ملک میں ہر سال اگر سیکڑوں موتیں ہوتی ہیں- تو کیا وجہ ہے کہ ابھی تک ایک قاتل کو بھی پھانسی کے تختے پر نہیں چڑھایا گیا- جس نے ایک بے گناہ انسان کا گلا کاٹا- کیونکہ جب ایسے قاتل کو معلوم ہوگا- کہ اس کا ہر عمل جہل ہی نہیں- پھانسی کے تختے پر اس کو لٹکائے گا- تبھی اس کے دل میں خوف پیدا ہوگا- اگر ایک آدمی کسی کا قتل کرتا ہے- تو اس کو آپ پھانسی کی سزا دیتے ہیں- لیکن جب سو آدمی ملکر ایک ہزار قتل کرتے ہیں تو کہتے ہیں کہ انکوائری کمیشن اپنی رپورٹ سبمٹ کر رہا ہے- انصاف اور قانون کے یہ تقاضے جو ہیں وہ یقیناً اس ملک کے لئے نیک فعل کا حساب نہیں رکھتے ہیں- ہمیں سوچنا ہوگا اور کھل کر سوچنا ہوگا- کہ ہم فرقہ پرست طاقتوں کو روکنے کے لئے ان کے آگے کو - - - - (گھنٹی بجنے پر)

دس منٹ کی تقریر کے لئے میں نے ساڑھے تین گھنٹے کی تقریریں سنی ہیں- میں دو منٹ اور چاہتا ہوں-

میں صرف یہ کہنا چاہتا ہوں- اس ملک کی لیڈرشپ بحیثیت مجموعی یہ فیصلہ کرے کہ ہمیں فرقہ پرست جماعتوں کو نہیں بلکہ دلوں میں پرورش پانے والی فرقہ پرستی کو ختم کرنا ہے- ابھی واجپئی جی نے مذاق میں شنی بھوشن جی سے کہا تھا آپ تو کانگریس جن سنگھی ہیں- - - -شنی بھوشن جی کی سیکولریزم پر مجھے بڑا وشواس ہے - - - - لیکن اس میں کوئی شک نہیں ہے کہ اس جماعت میں بھی آپ کی طرح سوچنے والے موجود ہیں- اور اس جماعت میں بھی آپ کی طرح سوچنے والے موجود ہیں- ہمیں اس ملک کی سیاست

کو اخلاقی بنیادوں پر قائم کرنا ہوگا۔ جب اس ملک میں گاندھی جی جیسا کوئی آدمی یہ پوچھے بتاؤ فسادات کی کہانیاں بڑے مزے میں سنتے رہو۔ کچھ ایسے بھی مولوی اور پنڈت ہیں۔ اس ملک میں جو فسادات کی مبالغہ آمیز لذیذ کہانیاں سنا سنا کر لہو گرم کرتے ہیں۔ میں نے ایسے مولوی صاحب کو سنا جو فرضی کہانیاں سنا سنا کر لہو گرماتے ہیں۔ وہ جو کہانیاں سناتے ہیں ان کہانیوں کو سنانے پر کوئی پابندی نہیں ہے۔ اخبارات زہر پھیلاتے ہیں اور ہمارے اندر کمار گجرال صاحب کہتے ہیں کہ میں بالکل غیر جانب دار ہوں۔ فرقہ دارانہ زہر پھیلانے والے اخبارات کو میں اشتہار دیتا ہوں اور سیکولریزم پھیلانے والے اخبارات کو بھی اشتہار دیتا ہوں۔ ہماری داد رو میں کتنا غیر جانب دار ہوں۔ ہمیں اس ملک کے لئے راہ مقرر کرنی ہے کہ اسے گاندھی جی کے راستے پر چلنا ہے یا گاڈسے کے راستے پر چلنا ہے۔ اس لئے آج جو ہوا ہے۔ اس لئے ہوا ہے کہ ہم نے احمدآباد کی حقیقت کو تسلیم کرلیا۔ میں نے جل گاؤں؟ بھیونڈی اور رانچی کی حقیقت کو تسلیم کرلیا۔ یہ تو ایسا ہوتا ہی رہتا ہے۔ شسی بھوشن جی نے کہا۔ اس دیش میں اقلیتیں محفوظ ہیں۔ کسی حد تک میں ان سے متفق ہیں۔ اس ملک میں ۵۵ کروڑ کی آبادی میں ۵۰ کروڑ ہندو ہیں۔ یہاں اگر ۵ کروڑ مسلمان زندہ ہیں تو اس لئے زندہ ہیں کہ ۵۰ کروڑ ہندوں کی نیت ٹھیک ہے۔ ان کا کردار ٹھیک ہے۔ لیکن کالے کوے کہاں نہیں ہوتے؟ وہ مسلمانوں میں بھی ہیں اور ہندوں میں بھی ان غنڈوں کا۔ جیسا شیخ صاحب نے کہا۔ کوئی مذہب نہیں ہوتا۔ انہوں نے اکبر کی طرح اپنا ایک مذہب ایجاد کیا ہے۔ اس مذہب کا مطالعہ کیجئے وہ اگر ان کے اپنے مفاد کی چیز ہے تو وہ یک بیک جن سنگھی۔ کانگریسی اور کمیونسٹ کہلاتے ہیں آپ غنڈوں کے مذہب کا مطالعہ کر کے غنڈوں کے خلاف یلغار کیجئے۔ وہ کسی مذہب کے ساتھ تعلق نہیں رکھتے۔ یہ محض اتفاق ہے کہ ایک گینگ کا لیڈر رام دیی ہے تو دوسرے کا اللہ رکھا۔ جس وقت انہوں نے قتل و غارت کا بازار گرم کیا۔ اس وقت وہ نہ ہندو رہتے ہیں اور نہ مسلمان۔

میرا آخری جملہ یہ ہے کہ جب تک یہ ہاؤس اپنے قول و عمل میں جو کچھ وہ کہتے ہیں اور کرتے ہیں اس میں ہماں ہمی نہ کرے۔ ہماری لچھیدار تقریروں سے کچھ نہیں ہوگا۔ ہوم منسٹر صاحب آپ کی قابلیت اپنی جگہ مسلم ہے۔ ہو تو

[شری شمیم احمد شمیم]
ہو لیکن جو کچھ ہو لیا اس کے لئے
بھگوان کے یہاں آپ کا حساب کتاب
ہوگا- لیکن جو کچھ ہونے والا ہے اس
کی فکر کیجئے-

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT): I propose to take this occasion as seriously as is humanly possible for me, a Minister responsible to Parliament and to the people of India. I shall deal with some of the criticisms at the end, but, before that I would like to give a brief connected account of the events which will give information in reply to many of the questions which have been raised here.

I agree with all the Members of the House who have expressed their anguish over what happened day before yesterday and I join them in expressing my very deep grief over what happened despite the best efforts that were made.

On the 5th afternoon, violence and arson occurred on a large scale in certain parts of Sadar Bazar Police Station area resulting in a number of casualties, destruction of valuable property and widespread panic. According to information so far available, it appears that at about 1.30 in the afternoon, information was received in the Sadar Bazar Police Station that rioting was taking place in Kishanganj Chowk and the Azad Market area within the jurisdiction of the Sadar Bazar Police Station and the Sub-Divisional Officer and the Station-House Officer of the Sadar Bazar Police Station immediately reached the scene of trouble within a few minutes.

Finding the situation serious they called for reinforcements and also altered the higher officers. Between 1-45 P.M. and 2 P.M., the Additional District Magistrate and the Superintendent of Police, North District, also reached the Kishenganj Chowk-Azad Market area. The A.D.M. found it necessary to order the police to open fire to disperse the mobs indulging in arson and violence. The I.G.P., the District Magistrate and the D.I.G. had all reached the scene of trouble soon thereafter. There were numerous instance of violence, including resort to use of private fire-arms, brick-battings, throwing of soda-water bottles etc. and arson in the Kishenganj Chowk—Azad Market area until about 3-30 P.M. when the situation started coming under control. Such incidence, however, spread to Bahadurgarh Road area and the situation in that locality came under control by about 4 P.M.

These disturbances spread to Sadar Thana Road area which came under control by about 5 P.M. Stone throwing and arson started occurring in the Kasabpura Motia Khan area from about 6 P.M. The mobs were dispersed and the situation was brought under control in this area by about 7 P.M. The entire disturbances came under full control by about 8 P.M. when curfew was announced and effectively enforced soon thereafter. The fires had also been brought under control by 8 P.M. though fire-fighting operations continued till late at night.

During this period, all locally available resources were mobilised by the Delhi Administration to control the situation and for preventing it from escalation. The I.G.P., District Magistrate and other senior officers were personally directing the measures to control the situation. About eight companies of CRP and Delhi Armed Police were pressed into service in this area and were subsequently reinforced by another eight companies of the BSF for intensive patrolling and vigilance in the

affected areas as well as other sensitive parts of the city. About two dozens of fire tenders were pressed into operation to put out fires caused by person. It is a matter of profound sorrow to all of us that ten valuable lives were lost in the course of the disturbances and about 131 persons were known to have received injuries. Fifteen Policemen including the IGP, the DIG and ten Firemen also received injuries.

SHRI R. S. PANDEY: What is the condition of the DIG, Mr. Marwah in the hospital?

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: I visited him in the morning. He has received five pellets, three at the back on his head and two when he turned right on the sides. The pellets have not been removed and the authorities at the Wellingdon Hospital will decide when to remove the pellets. But he is out of danger though he would have to remain in the hospital for a few days.

About 60 of the injured persons are still receiving treatment. As I said, Sir, the doctors have given us their assurance that all the cases are out of danger.

Investigations are in progress to ascertain the cause of the disturbances. Three criminal cases have been registered and 66 persons including some apprehended on the scene of occurrence have been arrested. More arrests are expected in the course of the specific investigations. An assessment is being made of the damage caused to property.

Sir, in this connection I wish to announce on behalf of the Government, that we have decided to institute a fact-finding inquiry of a comprehensive character at as high a level as possible. We have not decided whether it should be a judicial inquiry but it has to be a high-level inquiry, not a magisterial inquiry. And the idea is that as soon as possible the real facts should be unearthed so that the Government would be enabled to take effective and proper action.

SHRI SAMAR GUHA: It should be a Committee of Members of Parliament.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: It should not be like other commissions which have not yielded any results....

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: Result is another matter....So far as the present case is concerned, first, the facts have to be ascertained and made available to Government further action. Thereafter will have to be taken. At that time the question can be considered. The malady is very deep-rooted and merely by the result of the recommendations of one Commission you cannot remove it.

As many hon. Members have pointed out, it is a very complicated problem and it is a deep-rooted malady. We have inherited it from olden times. It is a kind of a poison which entered into the body-politic of India more than fifty or hundred years ago.

During the foreign regime, we had been endeavouring consistently not only since the Congress came into existence but even after Gandhiji gave his life, all the time. to establish secularism in this country.

The Prime Minister as well as myself had been keeping in touch with the situation continuously from the afternoon of the 5th. We also visited the area of these occurrences on the 5th evening and my colleague, Shri R. N. Mirdha, Minister in the Ministry of Home Affairs, went round the area yesterday. All the concerned

[Shri Uma Shankar Dixit]

officers of the Delhi Administration are doing all that is possible to restore the sense of security and renove unnecessary panic. They have been given special instructions firstly to find out the material facts so that the terms of reference can be quickly drafted regarding the constitution of an inquiry committee and a one-man Committee can be appointed without delay.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: Will that Committee's Report be published at all?

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: It will be published. Also I want to say one thing. About the origin, I cannot really vouchsafe completely for the correctness of the information. I have received. Upto now, from whatever information has come to us, I would say that one proprietor of a typing institute at Chowk Kishanganj had quarrelled with three boys on the 5th May at about 1 p.m. in Mohalla *Sheez Mahal*. While quarrelling, they reached near the Chowk Kishanganj at about 1-50 p.m. and when they were near the Chowk Kishanganj, arguments developed and three of them assaulted the typing institute proprietor. Some people intervened at this stage and three boys asked for help at which they joined and started pelting stones and soda-water bottles and thereafter the trouble escalated. I have given the the facts.

Shri Vajpayee refered to the Tandon Inquiry. He wanted to know why it was not published and what action had been taken on that Report of Shri Tandon? In the first place, neither Shri Vajpayee nor anybody else ever demanded the publication of that Report. I am even now willing to place a copy of it in the Library of Parliament and I can also offer a copy of it to any Member who wants to have it. Now, this is not at all the time for placing it on the table. But, I would briefly give an account of what has happened in that connection.

The main finding of Shri N. N. Tandon who went into the communal riots of June 1972 was that, preceding the riot, the bad characters involved in it had engaged in several quarrels. Shri Tandon felt that had due note been taken of their doings and that had the police taken adequate preventive action against them, riot might perhaps, have been averted. Therefore, the main recommendations made by Shri Tandon related to effective preventive action against bad characters. He also touched on various procedural aspects of such preventive action, such as up-to-date maintenance of history-sheets, legal aspects of the relevant provisions of the Cr. P.C. etc. The recommendations of Shri Tandon were seriously considered by the Administration and a well-coordinated strategy was evolved for effective and sustained action against bad characters and criminals throughout Delhi. In the ten months since then over 4,000 bad characters have been bound down under the preventive provisions of the Cr. P.C. and about 300 externed from Delhi under the provisions of the Bombay Police Act. (*Interruptions*).

SHRI SHASHI BHUSHAN: Shri Tandon has not referred to the paramilitary organisation.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: Shri Tandon had also recommended certain improvements in the set up for the collection of intelligence on communal matters. Action on those recommendations has also been taken. Intelligence units have been set up now within the District Police also.

Before I proposed to deal with other points I must admit that so far as intelligence is concerned not only was the cell or the officer who was

entrusted with this job not able to give any advance information about what was going to happen but also the other agencies did not give any idea about any such plan. The fact of the matter is that in that area—I mean it in the best possible spirit—small incidents can escalate into big ones or into unfortunate, deplorable events, which continue to happen from time to time. I have been assured on authority by responsible officers that a large number of such intimations or complaints are given from time to time and the officers are able to intervene and prevent escalation. Some other time I can place a statement on the Table of the House or inform the House that small incidents do occur from time to time and they do not all escalate into such events. In this particular case, a news report was published in the Nav Bharat Times to the effect that there was some quarrel in connection with a girl who was passing. I have made inquiries and questioned all the four or five responsible officers, who have assured me that there could be no conceivable connection between that event and this. Eve teasing does occur sometimes and unless the report goes to the police some of these persons get away with it.

Now, I shall very briefly deal with the other important points. So far as Shri Vajpayee is concerned, I have answered part of his question. He wanted to know how many people were killed by bullets and how many by pellets. According to the ascertained information five of those who have died were killed by bullets and the other five by pellets. He also said there was a particular house from which firing was going on I do not know which house he refers to. There were some houses—whether residential or other—from which shots were fired. In one particular case police was able to locate the house and went up to the first or second floor and the person there was silenced. I have tried to answer his main points.

Our friend, Shri Jyotirmoy Bosu, of course, used his usual phraseology. One cannot quarrel with him. That is his way of life. So far as figures are concerned he said many things, which, I think, as a responsible person he should not have uttered. He is not here and, as such, I need not dwell much on it. For instance, the figures of death and injured quoted by him are probably beyond all conceivable reality

Shri Atal Bihari Vajpayee has said that all the injured people did not go to hospital. But the fact that his statement was equally exaggerated has been quite correctly and effectively brought out by Shri H. K. L. Bhagat. When he goes on to say that from 200 persons pellets were removed by one doctor during that short time, I submit that it is too tall a claim for anybody to believe. My main point is that so far as we are concerned, we go by the figures of the number of persons who entered the hospital Anyone who went to the hospital was treated; all who went were treated; where it was not necessary and the hurt was not grievous, they were allowed to go away. These men and women would also have been allowed to go away. If certain people did not go to hospital —I want to be excused, but I am willing to attribute a possible motive for their not going—they did not, deliberately, go to the Government hospitals for fear that they might be identified as persons concerned and they might be asked, How did you get this? Where were you and what were you doing? and so on. There may be mixed motives. But if it is said that such a large number was injured, I have no reason and no

[Shri Uma Shanker Dixit]

ascertained information to help me believe in a figure of that size. Therefore, I hope and believe that the House will not go by such fantastic figures, both about death and about injury. As regards the injured persons, the House will have noted that I have given a much larger figure..

SHRI BHOGENDRA JHA (Jainager): Why does he not ask Shri Vajpayee to give him the names?

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: This is not an occasion for any frivolous discussion or repartee or exchange of words for no purpose. It is a serious and solemn occasion. I do feel distressed and deeply anguished over what has happened, and my hon. friend should not unnecessarily lower the debate to a point of controversy. It will not help anybody, nor will it help the common cause, and I think he and I hold the same view so far as this matter is concerned. Why do they want to spoil the atmosphere? We are wedded to this policy of secularism, and we will do everything that is possible to identify the miscreants and to deal with them as strongly as possible.

Shri Jyotirmoy Bosu had said that this had been done or instigated or encouraged, indirectly or even overtly by the Government, by the Congress Party Government because there was an election to come I do not know to which election he was referring. He asked 'Who profits from the riots?'. I ask this question of this House 'Who profits from the riots?'. Has the Indian National Congress ever before or after it entered the Government profited from a riot? You can take every instance. I challenge them and say this without any fear of contradiction that on every such occasion, there were other parties like, for instance, the party of which my hon. friend Shri Atal Bihari Vajpayee is the head or Mr. Sulaiman Sait's party or the Jamat-e-Islami or the Hindu Mahasabha. In case after case it has happened, it has always happened for giving profit—I would not call it profit, but political benefit—to the people who want to get advantage out of such a situation. It is something which in my opinion was so callous and so cruel that any party which has Gandhiji's ideology dear to it and Jawaharlal Nehru's ideology to follow will not even look at it. There may be, as Mr. Shamim said, black sheep and white sheep. I do not say that we are all milk-white and so on. But so far as secularism is concerned, I say without fear of contradiction that there is no other party which is more secular than the Congress Party and the Congress Government. It may be that we have failed in controlling eruptions like the one in question. I have said that it is a superficial assessment of the situation for anybody to think that if you arrest some people quickly or kill more people in the first instance then it will all be, as Mr. Shamim wanted to put it, peace and nobody will ever be hurt hereafter. That is not so. It is a poison which has entered every part of the body-politic. We have to remove that poison. A friend like him should not take this as a kind of a table-talk. Let him seriously ponder and consider what he should do for himself....

SHRI S. A. SHAMIM: Is he agreeing with me or disagreeing with me or is he angry with me?

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: I agree with him but he has also paid a left-handed compliment. Let him follow a straight line and he will find that he is very much more at home in our party than the place where he is sitting. (*Interruptions*).

SHRI S. A. SHAMIM: You want to eliminate my effectiveness?

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: I think I am inclined to agree with him in the sense in which he said it.

Then, Shri Ramavatar Shastri said that this is *Vahshyana Ghatna*. It is quite correct that when people go about hitting each other and burning houses, it is something beastly. But if you see the number of persons killed from bullets, it is not more than five to six persons.

If it were an open place where one strong firing of a few rounds would have brought the situation under control, probably they would have done so. But there are several lanes and the crowd came from several areas and assembled there. I am afraid—I do not know if the House is inclined to blame me for I am willing to take the blame for the constructive responsibility as Home Minister—the loss of life would have been very much more if heavy firing had been resorted to too early.

What did they do? On every occasion, as soon as the officers reached there, firing had taken place; apart from Kasabpura, Bahadurgarh Road Sadar Thana Road etc. It is not that they hesitated to do that May be some of the jawans lower down did not feel as strong as they should have. What happened? When four or five fire brigade engines entered, they were not allowed to proceed There was a hail of stones, bottles pellets from shot guns, and not one of them could go forward. Only one head driver of an engine or the head of the fire brigade could enter because they showed courage and finally they were able to make a dent, When the DIG was hurt,—they did not know that he had been hit by pellets —many thought that he was possibly killed or was on his way to death. And this had affected the mind of some people to some extent. But officer after officer came up, and the IG himself came in. In a situation like this, some blame must be attached to all of us, to the Delhi Administration and ourselves. But I do want to say that the IG—I do not know whether he is the most fit person on earth and I am not saying anything of the kind—did show courage and went forward and was able by his example to show the way.

Then there was the other point. I do not think it was a very fair one. An hon. Member mentioned the name of an officer and said that he formerly belonged to the Jan Sangh or the RSS. We have never known about this. Even if a person formerly belonged to the Congress (O) or Jan Sangh or the CPM or the. CPI, if today he carries on the discipline of his office and is doing his work efficiently, we do not go back to his antecedents But if there is any proof or any cause for real suspicion that an officer is showing a certain tendency repeatedly which is born out of his earlier association, we shall certainly consider it. This is the first time that I have heard this allegation. But before he mentioned the name, it would have been far better and more appropriate if he had written to me....

SHRI VAYALAR RAVI (Chirayinkil): He just wants publicity.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: Now, they were there all the time I got the first information of it at 3 p.m. And from then on up to the night, we were in touch. But this officers from before and up to the end, were there all the time working to control the situation.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: Why did you get it so late?

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: Sir, whenever it came, I received it.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: Is that a reply?

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: I am telling the fact What is the use of disputing it?

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE We would like to know, why was the Home Minister informed so late?

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: It is not always that the Prime Minister and the Home Minister are informed So long as the officers felt that they could deal with the situation at their own level they did not want to..

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA This was considered to be a very petty matter to be conveyed to the hon Home Minister of the Government of India

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT By 2 30 P M they felt that the situation was coming under control As the firing took place and the crowd receded from the Azad Market area, they want to other areas and then elsewhere arson was resorted to Two boys were caught red-handed with cloth soaked in kerosene or petrol They were seen throwing it at two buildings and they have been caught Therefore, by that time, the officers felt that the situation had come under control When it began to spread and when they found that the situation might escalate and become much worse, they did inform me They might have had their reasons and I am telling you frankly from what I know of the situation

श्री रामावतार शास्त्री जी ने कहा है कि मेरा दामन तब पाक और साफ होगा जब मैं उन के कहने के मुताबिक कार्यवाही करूंगा। मुझे मालूम नहीं है, सब को अपना अपना दामन मालूम होता है, शास्त्री जी को अपना मालूम होता, शास्त्री जी मेरे दामन के बारे में चिन्ता करें उस से पहले उन को अपने दूसरे सब व्यक्तियों के दामन को देख लेना चाहिए और अगर मेरा दामन उन को ज्यादा पाक साफ लगे, तो कृपा कर के इस तरह के आरोप न लगाए। यह शोभा नहीं देता।

श्री एस० ए० शकीम . तरदामनी पै शेख
हमारी न जाइयो।
दामन निचोड़ दें तो
फरिश्ते वजू करें॥

श्री उमा शंकर दीक्षित उन्होंने भी कहा और दूसरे माननीय सदस्यों ने भी कहा कि जो साम्प्रदायिक दल हैं उन को भारत सरकार को बेकायदा घोषित कर देना चाहिए। मैं इस सबन्ध मे यही कहना चाहता हू कि इस विषय पर पहले भी विचार हो चुका है और यदि हम को कभी ऐसा लगा कि किसी समय कोई विशेष कानूनी कार्यवाही करने से देश का लाभ होगा तो मैं इतना ही कह सकता हू कि उस मे हम हिचकेंगे नहीं। अगर हम और मौकों पर नहीं हिचके है तो इस मौके पर भी नहीं हिचकेंगे। इस मे आप को सन्देह कैसे होता है? लेकिन अभी से हम कहते रहें कि हम इन को बैन करेंगे उन को बैन करेंगे, यह तो समझ मे नहीं आता। इस समय जो स्थिति है वह हम बता रहे हैं। जिस दिन करना होगा उस दिन कर देंगे।

श्री नरेन्द्र कुमार सालवे जल्दी आए वह दिन।

19 58 hrs.

[MR. SPEAKER in the Chair]

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: I think I have already answered this point. Mr. Sezhiyan has said that intelligence was not received earlier. I have said that it is a fact that in the matter of intelligence the administration really did not get the help that they should have got in

this case. How much difference it would have made, it is very difficult to say at this stage because as soon as the trouble started, even with the best of efforts thereafter, the situation did escalate and arson had travelled from place to place.

It has been said that BSF took two or two and a half hours to reach the place. I have explained this in my main statement. Another question was asked, why the army was not called? I would reply to both these questions very briefly. Neither the army nor the B.S.F. was intended for the normal duty. The idea was that it should come for route marches or flag marches and then assist the other police which was there with the city administration to help them in this matter, not directly to take part in it. But, of course, they did arrive and it is not that they started at 8 O'clock or 8.15 they started coming from several places, and it took two or more hours. It is almost outside the Union Territory of Delhi where these forces are kept. Normally, if they are ready in uniforms and in all other respects, it should take at least one hour. I do not think it took them unduly more time. Possibly, another 15 minutes or half an hour would have been saved. But I do not think much difference would have occurred.

20. hrs.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: When did the B.S.F. arrive?

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: I said, it was coming all the time. Finally, it came at about 8 O'clock. All the time, it was coming, in groups.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: When did the first group arrive.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: I do not know the exact time. But it was not more than about 2 or 2½ hours. It was coming in groups. The first full battalion had reached at about 8 O'clock or 8.15. Thereafter, another battalion came. It started early it was evening all the time.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: How early? He is evading the main question. By what time did it arrive?

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: I do not know the zexact time. There are many points which have to be investigated. Unless we go into details it is not possible to give a thoroughly reliable reply.

Mr. Ebrahim Sulaiman Sait said that the death roll was 28.

SHRI EBRAHIM SULAIMAN SAIT: I quoted form the *Patriot*.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: Perhaps, this is the only time he has quoted the *Patriot*. I do not think he reads the *Patriot*. If he had been a regular reader of the *Patriot*, then he would have held different views.

What I am trying to say is that Mr. Ebrahim Sulaiman Sait should have come to me; he could have gone to the hospitals; he could have asked me in writing or otherwise. We have given

[Shri Uma Shankar Dixit]

accurate facts and figures to everybody who enquired about it. If there is any more information available, we shall do so. Earlier, we had the number of 9 deaths and then a dead body was brought in the morning and we added that. I have taken every care to see that the facts I give are correct and reliable.

In my opinion, the Muslim League, the Jamat-e-Islami, the Jana Sangh the Hindu Sabha and the R.S.S. have no right to complain about the communal happenings until they themselves reform their policies and their ideologies.. (*Interruptions*). After the Partition, there was no Muslim League in India. However, they kept the League in Kerala only claiming that it was a different thing, that it was not a Muslim League at all. It got the name of Muslim League. Otherwise, it is as secular as any other party in India. Credit or discredit must go to Mr. Ebrahim Sulaman Sait that he has now started an all-India League and has started branches all over India. What does he want now? Does he want another portitions? (*Interruptions*). As regards the trouble in Sadar Bazar, I will do everything, any reasonable request that he makes to help him..(*Interruptions*).

SHRI S. A. SHAMIM: What is the justification for having a coalition with them in Kerala? (*Interruptions*)

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: Kerala is different.

Shri Sulaman Sait said that, formerly, the fact used to be that, if ten persons were killed, nine used to belong to minorities. This is not supported by facts.....

SHRI EBRAHIM SULAIMAN SAIT: I have quoted from Inder Malhotra's article in *The Illustrated Weekly*.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: From what I know, for more than one year, this is not so, and I do not think it was ever so; there might have been one such case in a 100. We should not go into this kind of calculations. I agree with Mr. Shamim that it was wrong of Mr. Sulaiman sait to bring it up like this. (*Interruptions*) I can say without fear of contradiction that it is not so in the present case.

He has said that we should give exemplary punishment. This is one point on which I find myself in complete agreement with Mr. Sulaiman Sait, and I can assure him that, to the maximum limit of our capacity, we shall see that the law takes its course and that the courts will note the spirit in forming the speeches of the hon. members.

Mr. Samar Guha has said that these are silly causes and he gave a very brilliant speech on the root causes. I agree with his philosophical assessment of the situation, but usually—the misfortune of this country is—I do not know why this is so—that, usually it is the silly causes that lead to such deplorable and painful incidents.

Although I do not completely agree with the very picturesque language used by Mr. Shamim the spirit of his speech was such that all of us must express agreement...

SHRI S. A. SHAMIM: That means, you did not understand it.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: Quite possible; your language was so inexplicable.

He was talking of the seed of communalism and the depth of it. I would like to say that that seed of communalism was sown long ago, and the poison has entered deep into the body. Since the time of Mahatma Gandhi, the Congress Government has been engaged in a most consistent endeavour for achieving secularism in this country.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, यह स्थगन प्रस्ताव इस दृष्टि से अपने उद्देश्य में कुछ हद तक पूरा हुआ है कि गृह मंत्री महोदय ने सारे काण्ड की उच्चस्तरीय जांच कराने की घोषणा कर दी है। उन्होंने यह भी घोषणा कर दी है कि जांच रिपोर्ट प्रकाशित की जायेगी, उसे अलमारी की शोभा बढ़ाने के लिये नहीं रखा जायेगा। यह भी सन्तोष की बात है कि उन्होंने टण्डन रिपोर्ट की प्रति लाइब्रेरी में रखने का ऐलान किया है। टण्डन रिपोर्ट का एक हिस्सा उन्होंने पढ़ कर सुनाया है . . .

श्री उमा शंकर दीक्षित : मैंने सारांश सुनाया है, रिपोर्ट कोट नहीं की है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : जो सारांश है उस से इस बात की पुष्टि हो गई है कि पिछले वर्ष जो दंगे हुए थे उस के बारे में आप के उच्च-अधिकारियों ने यह कहा था—अगर पुलिस प्रारम्भ से रोक-थाम की कार्यवाही करती तो शायद दंगे को टाला जा सकता था . . (व्यवधान) . . . वही बात हम इस दंगे में कह रहे हैं लेकिन गृह मंत्री इस बात को स्वीकार करने के लिये तैयार नहीं है।

मुझे खेद है मेरे भाषण को जिस भावना से लिया जाना चाहिए था उस भावना से हमारे कई कांग्रेसी मित्रों ने नहीं लिया। उन्होंने मेरे ऊपर आरोप लगाया है जैसे मैं ने कुछ चीजों की खोज की है, उन्हें ईजाद किया है और उन्हें पका कर सदन के सामने पेश कर दिया है। उदाहरण के लिए श्री भगतजी ने कहा यह बताया गया कि मरने वाले कौन हैं, उनका सम्प्रदाय क्या है और मस्जिद से गोली आने की बात कही गई। मैं बड़े आदर के साथ निवेदन करना चाहता हूं यह चीजें अखबारों में छपी हैं। उस अखबार में नहीं जिसका हवाला हमारे मित्र सुलेमानसेट जी ने दिया है, यह 6 मई का नेशनल हेराल्ड मेरे हाथ में है।

SHRI S. A. SHAMIM: This is one paper which Dikshitji never reads.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी :

"The hospital authorities identified the dead as Rajinder, Rajesh, Sat Narain, Prakash Narain, Ranjit Singh, Nathu and Rajesh Kashmiri. The remaining one had not been identified till late tonight."

जहां तक पुलिस के ऊपर गोली की बात है, वह भी समाचार-पत्रों में आई हुई है। मैं फिर नेशनल हेराल्ड को उद्धृत कर रहा हूं :

"There was an exchange of brickbats and bottles before some men opened fire from a house top on the street crowd. People alleged that the firing came from a mosque. However the Deputy Comissioner said that he could not be definite about it because there was a cluster of houses adjacent to the mosque from where the firing could have come.

Apparently, the police displayed caution which was taken as 'inaction' by the irate crowd, which shouted anti-police slogans. It was not before five men were hurt (including Mr. Marwah), two of them probably dead that the police decided to position their gunmen to answer the fire."

अध्यक्ष महोदय, यह हिन्दुस्तान टाइम्स है, इस पर कोई साम्प्रदायिकता फैलाने का आरोप नहीं लगा सकता है। इसका संवाददाता घटना-स्थल पर मौजूद था। जो अधिकारियों ने बात की और जो कुछ देखा उसके आधार पर उसने रिपोर्ट किया है। मैं इसका एक अंश उद्धृत करना चाहता हूं :

"Although the police refused to confirm, the eye-witnesses unequivocally claimed they did see bricks being hurled from the mosque. Later they 'saw' snipers firing indiscriminately.

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

It was in one such sniper shot that the DIG Mr Marwah, was injured, these people claimed Mr. Rajgopal admitted there were snipers, without pinpointing their position The police fired back at them"

अध्यक्ष महोदय, अच्छा होता अगर गृह मंत्री जी इस बात की भी सदन को जानकारी देते कि जिन्होंने गोलिया चलाई—वे किसी भी वर्ग के हो, सम्प्रदाय के हो—उन्हे गिरफ्त मे ले लिया गया है, उन्हे पकड लिया गया है उन पर मुकदमे चलाये जायेंगे जैसा उन्होने कहा है कानून अपनी दिशा लेगा लेकिन उनके विरुद्ध कडी कार्यवाही की जायेगी। अभी तक गृह मंत्री महोदय यह घोषणा नही कर सके हैं।

श्री उमा शंकर दीक्षित : मैं ने उनकी सख्या बताई है जो पकडे गए है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मैं ने बहुत सी बातें गृह मंत्री जी को पत्र मे लिखी है जो मैं इस सदन मे कहना नही चाहता हू। मैंने उन्हे कुछ नाम भी दिए है। अभी तक मुझे यह नही बताया गया है कि वे गिरफ्तार कर लिए गए है।

मुझे दुख है कि गृह मंत्री जी और भगत जी ने भी यह कहा कि मैं ने एक डाक्टर के बारे मे कहा कि उसने दो सौ लोगो के शरीर मे से छर्रे निकाले (व्यवधान) गली महावीर मे एक सज्जन रहते हैं, मैं आज प्रात काल वहां गया था, वहा से छर्रे भी लाया हू। यह छर्रे बिल्कुल छोटे-छोटे है। (व्यवधान) गृह मंत्री जी मानेंगे अगर किसी व्यक्ति के एक आध छर्रे लगे हैं तो वह वही पर प्रयत्न करके निकाले जा सकते हैं। (व्यवधान) यह खयाल आपका गलत है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि छर्रा कितना गहरा गया है।

श्री उमाशंकर दीक्षित : कितने छर्रे लाये हैं?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : यह तो तीन हैं।

श्री उमा शंकर दीक्षित : जो निकले थे सभी ले आते।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मुझे पता नही था, मेरी बात पर इस प्रकार से अविश्वास प्रकट किया जायेगा नही तो मैं सारे छर्रे भर कर ले आता जो निकाले गए थे। लेकिन जो मुझे कहा गया है वह मैं ने सदन में कहा है। हो सकता है उसने सख्या बढ़ा-चढाकर कही हो। मै उसकी जिम्मेदारी लेने के लिए तैयार नही हू। लेकिन मै आज सवेरे घूमा हू, मेरी उनसे बातचीत हुई है। (व्यवधान) डाक्टर का नाम भी मेरे पास है। उन्होने यह कहा कि करीब दो सौ ढाई सौ लोग मेरे पास आये, हो सकता है इन मे कुछ सख्या बढाकर उन्होने कही हो। लेकिन गृह मंत्री महोदय यह आरोप लगा रहे है कि वे इसलिए अस्पताल नही गए कि उसमे कुछ और भी गडबड है। मेरा कहना है यह आरोप निराधार है। मै गृह मंत्री जी से कह सकता हू कि जितने घायल हुए सब अस्पताल मे बहुत सी परेशानी मे बचने के लिए नही जाते है। आगे कही उन्हे मुकदमो मे न फासा जाये, पुलिस पूछ-ताछ न करे। (व्यवधान) लेकिन इससे घायलो की सख्या कम नही होती है।

श्री उमाशंकर दीक्षित : न बढ़ती है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : क्योंकि आप घायलो की जो सख्या बताते हैं वह अस्पतालों के रजिस्टर बताते हैं। जो अस्पताल नहीं जाते उनकी सख्या बढ़ेगी, यह आपको मानना पडेगा।

इस चर्चा मे एक बात बार बार कही गई। मुझे अफसोस है श्रीमती सुभद्रा जोशी का वही घिसा पिटा पुराना राग और राष्ट्रीय स्वयं

सेवक संघ पर प्रतिबन्ध लगाने की मांग । जब राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ नहीं बना था तब भी साम्प्रदायिक दंगे होते थे । जिन भागों में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ नहीं है वहां भी साम्प्रदायिक दंगे हुए हैं । और जैसे नागपुर में राष्ट्रीय स्वय सेवक संघ है वहां उसके जन्म के बाद से लेकर आज तक कोई साम्प्रदायिक दंगा नहीं हुआ ।

श्री नरेन्द्र कुमार सालवे : यह गलत है, पिछले साल ही वहां दंगा हुआ ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मुझे मालूम है जो नागपुर में दंगा हुआ था वह बौद्धों में और मुसलमानों में हुआ था । मैंने महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री से पूछा था क्या इसमें राष्ट्रीय स्वय सेवक संघ का हाथ है तो उन्होंने कहा हमारे पास इसका कोई सबूत नहीं है । यह बात महाराष्ट्र विधान सभा में भी कही गई है ।

मेरा निवेदन है कि किसी एक संगठन को, किसी एक पार्टी को सारा दोष देकर सरकार न तो इस मामले में अपनी विफलता की जिम्मेदारी से बच सकती है और न इस दायित्व से मुक्त हो सकती है । स्वाधीनता के 26 साल बाद भी हमें साम्प्रदायिक सौहार्दता साम्प्रदायिक एकता का जैसा वातावरण बनाना चाहिए था वह हम नहीं बना सके हैं । गृह मंत्री आरोप लगाते हैं कि जब दंगा होता है तो किसको लाभ होता है, मुस्लिम लोग को ।

श्री उमाशंकर दीक्षित : कहा गया है कि हमें लाभ होता है इसलिये मैंने कहा ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अगर मुस्लिम लीग को दंगे से लाभ होता है तो मुस्लिम लीग से आपका गठबंधन समाप्त क्यों नहीं होता है ? (व्यवधान) अगर दंगे से लाभ होता है तो जहां दंगे होते हैं वहां से कांग्रेस दोबारा जीतकर नहीं आती ।

इस देश की कठिनाई यह है कि यह देश माईनारिटीज का देश है । यहां बहुसंख्यक है कौन ? अगर बहुसंख्यक थे, उस तरफ बैठे हुये लोगों को उनकी चिन्ता होती तो कल प्रधान मंत्री दंगाग्रस्त इलाके में गईं, गृह मंत्री दंगाग्रस्त इलाके में गए, श्री फखरुद्दीन अली अहमद दंगाग्रस्त इलाके में गए, जनरल शाह दंगाग्रस्त इलाके में गए, श्री शफी कुरैशी दंगाग्रस्त इलाके में गए वे केवल चार घरों में गए लेकिन मरने वाले आठ हिन्दू लड़के हैं उनके घर में कोई नहीं गया । (व्यवधान)

श्री उमाशंकर दीक्षित : हम किसी के घर में नहीं गए हमने बाहर की स्थिति देखी ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मैं जानना चाहता हूं श्री श्याम नन्दन मिश्र जी ने आरोप लगाया है कि डबलरोटियां और दूध बांटने में साम्प्रदायिक भेदभाव से काम लिया जा रहा है, हम भी सामान ले जाना चाहते थे लेकिन हमें इजाजत नहीं दी गई । श्रीमती सुभद्रा जोशी डबलरोटियां ले जा सकती हैं और लोग वहां भूखे नहीं हैं ? उन्हें दूध की आवश्यकता नहीं है ? (व्यवधान)

श्री एस० ए० शमीम : आप कितने मुसलमान घरों में गए ?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : आप कितने हिन्दू घरों में गए ?

श्री एस० ए० शमीम : मैं नहीं गया । मैंने कब दावा किया है ?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मैं मुस्लिम मुहल्लों में गया हूं । क्षमा कीजिये, एक बात मैं कहना चाहता हूं । मुझे चुनौती दी गई है । मैं मुस्लिम मुहल्लों में भी गया हूं और एक सज्जन का नाम मैं गृह मंत्री को बताऊंगा जिन्होंने मुझे यह कहा कि साहब जो कुछ हुआ है, बहुत बुरा हुआ है लेकिन हमें शक है कि हमारे कुछ लोग इसमें इसलिये शामिल हैं कि

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

शेख मुजीबुर्रहमान की भारत यात्रा के अवसर पर हिन्दुस्तान की तस्वीर बिगड़े, इस बात की कोशिश की गई। (व्यवधान)

श्री चन्द्रजीत यादव (आजमगढ़) : यह अनपार्लिमेंटरी है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : आप चुनौती दे रहे हैं, चार घंटे से हम सुन रहे हैं, हमारी पार्टी पर अनर्गल, निराधार और शरारतपूर्ण आरोप लगाए जा रहे हैं। क्या इस बात का संकेत हमारे मित्र श्री समर गुह ने भी नहीं दिया है? मैं चाहता हूं कि जब उच्च स्तरीय जांच होने वाली है वह इस पहलू की भी जांच करे। पाकिस्तान टूटा, बंगला देश बना, इस भूखंड की स्थिति बदली और सचमुच में इस बदली हुई स्थिति में इन दंगे का कोई औचित्य नहीं है और इसको भारत से समाप्त हो जाना चाहिये (व्यवधान)

श्री नरेन्द्र कुमार साल्वे : पहले था क्या?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : पहले भी नहीं था। लेकिन अब इस बात को आप स्वीकार करेंगे कि सारी परिस्थिति में मौलिक परिवर्तन हुआ है और वह मौलिक परिवर्तन अगर जनता के दिल और दिमाग को छूने में विफल रहा तो इसकी जिम्मेदारी हम सब के ऊपर है और इसकी जिम्मेदारी से जिनके कंधों पर शासन की बागडोर है वे बच नहीं सकते हैं . . . .

श्री बंसत साठे (अकोला) : हड़ताल वाली बात का भी खुलासा कर दें।

श्री श्यामनन्दन मिश्र : मेरा नाम लिया गया है। मैं एक बात साफ कर देना चाहता हूं। मैंने यह कहा है कि सत्तारूढ़ दल दलगत भावना से वहां काम कर रहा है, यह नहीं कहा कि साम्प्रदायिक भावना से काम कर रहा है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अच्छा हुआ कि मिश्र जी ने अपनी स्थिति साफ कर दी। लेकिन मैं जोड़ना चाहता हूं कि दलगत भावना के साथ साम्प्रदायिक भावना जुड़ी हुई है इसीलिये लाभ सत्तारूढ़ दल को होता है। अल्पसंख्यकों में असुरक्षा की भावना पैदा करके कांग्रेस कहती है कि वही उन को बचा सकती है और कोई नहीं, इस लिये दंगे सत्तारूढ़ दल को लाभ पहुंचाते हैं, किसी विरोधी दल को नहीं।

बार-बार पूछा जा रहा है कि डायरेक्ट एक्शन की घोषणा जो की गई है या कल जो हड़ताल होने वाली है उसके बारे में मुझे क्या कहना है। मुझे इसका पता नहीं है। दिल्ली प्रदेश जनसंघ ने अगर कोई फैसला किया है तो मैं जाकर पता लगाऊंगा। लेकिन अगर हड़ताल होगी तो शान्तिपूर्ण होगी। लेकिन मैं समझता हूं कि गृह मंत्री की घोषणा के बाद कि उच्च स्तरीय जांच की जायगी और टंडन कमेटी की रिपोर्ट प्रकाशित होगी, अब हड़ताल करने की आवश्यकता नहीं रह जाती है। मैं दिल्ली प्रदेश जनसंघ को सलाह दूंगा कि वह हड़ताल न करे मैं यह भी कहूंगा कि इस बात को जनता तक पहुंचाने के लिये हमें रेडियो की सहायता चाहिये। मैं समझता हूं कि अब हड़ताल का कोई औचित्य नहीं रह गया है और मैं आशा करता हूं कि वह नहीं होगी।

मेरे मित्र श्री रामावतार शास्त्री ने कहा है कि दिल्ली में उपचुनाव होने वाले हैं इसलिए दंगे कराये जा रहे हैं। इन उपचुनावों का दंगों से कोई संबंध नहीं है। 1973 वाली बात भी वह कह रहे हैं कि उस समय भी जनसंघ ने एक आन्दोलन किया था और तब भी कि सदर में दंगा हुआ है। इस के संबंध में मैं उनकी पार्टी के मुखपत्र जनयुग में प्रकाशित 17 जून, 1973 की टिप्पणी की उद्धृत करना चाहता हूं :

"दंगाइयों की दिलचस्पी इस इलाके से एक खास साम्प्रदाय के कुछ व्यापारियों और निवासियों को भगा देना था।"

इसको आप संदर्भ मे पढ़े तो सदर मे जो दंगे हुये उसके पीछे कौन सी भावना काम कर रही थी, इसकी जनयुग भी अवहेलना नही कर सका। राजनीतिक कारण या चुनाव श्री शास्त्री के दिमाग में हो सकते हैं, हमारे दिमाग में नहीं है। कोई भी साम्प्रदायिक दगा भड़का कर इस देश मे चुनाव नही जीत सकता, उससे चुनाव मे कोई लाभ होने वाला नही है। मैं फिर कहता हू। क इसलिये लाभ होने वाला नही है कि इस देश मे हिन्दू कोई नही है, इस देश मे सब अल्पसंख्यक है, इसी लिये उपेक्षा हो सकती है, अवेहलना हो सकती है।

साम्प्रदायिकता का मामला केवल एक दगे से संबंधित नही है। गृह मत्री ने इस बात का कोई उत्तर नही दिया है कि नेशनल इंटेग्रेशन काउंसिल जो पुनर्गठित की गई है उसका क्या हुआ ? क्या वह समाप्त हो गई है या मूछित अवस्था मे है और अगर बेहोश है तो कौन सजीवनी ला कर उसको फिर से होश मे लायेगा ? क्या दगे होने पर ही सैक्यूलरिज्म की याद आयगी और उसके बाद सैक्यूलरिज्म विरोधी काम चलेगे और चुनाव मे वोट की राजनीति उभर कर सामने आयगी ? ऐसी बात है तो यह कोई इसका स्थायी हल नही है। अच्छा होता अगर गृह मंत्री यह भी बताते कि नेशनल इंटैग्रेशन काउंसिल की सिफारिशो को कार्यान्वित करने के लिये तथा भविष्य मे उसके काम को आग बढ़ाने के लिये वह क्या करने जा रहे हैं...

श्री उमाशंकर दीक्षित : स्टीयरिंग कमेटी की बैठक हुई थी। उसमे सब पार्टियों को कहा गया था कि व अपने सुझाव एक महीने के अन्दर-अन्दर भेज दे। किसी ने भेज ही नही। हम क्या करे, किसी का उत्तर ही नहीं आया।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : यह सोच रहे कि हम को कोई सुझाव नही देना है, हम चुप रहे, हम समझते थे कि आगे कार्यवाई चलेगी। क्या स्टीरिंग कमेटी का सारा काम इस बात पर निर्भर करता है कि लोग सुझाव देते है या नही देते है ? अब कंमलटेटिव कमेटी के लिये भी सुझाव मागे जाते हैं। हम नही भेजे तो क्या उसकी बैठक ही नही होगी....

श्री उमाशंकर दीक्षित : एक भी न आए तो नही करेंगे।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : सरकार को भी तो कुछ करना है या नही करना है। हम समझते है कि राष्ट्रीय एकात्मकता परिषद् के काम को किसी एक दल के साथ आप न बाधे। किसी एक पार्टी के हाथ मे वीटो दे रखना ठीक नही है। पहले कम्युनिस्ट मित्र नही आये इसलिए नैशनल कम्पेन नही हुआ। इस बार जब स्टीयरिंग कमेटी की बैठक हुई तो सी० पी० आई० नही आई, सी० पी० आई० इसलिये नही आई कि मुस्लिम लीग नही आई, सी०पी० आई० और मुस्लिम लीग नही आई तो जितने आए उन सबकी छुट्टी कर दी गई। अगर राष्ट्रीय एकात्मकता परिषद् का यह हाल है तब कहना पड़ेगा कि उसके बारे मे हम गंभीर नही है

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

दंगे भविष्य में न हों इसकी हमें कामना करनी चाहिये और प्रशासन के स्तर पर रचनात्मक दृष्टि से ऐसे कदम उठाने चाहिये कि भारत में फिर से यह दुर्भाग्य देखने का अवसर न आए कि दंगा हुआ है ।

MR SPEAKER The question is

"That the House do now adjourn"

The motion was negatived.

---

20 30 hrs

COAL MINES (CONSERVATION AND DEVELOPMENT) BILL—*contd.*

MR. SPEAKER The House will now take up further consideration of the Coal Mines (Conservation and Development) Bill Shri Damodar Pandey was on his legs, and he may now resume his speech

श्री दामोदर पाण्डे : अध्यक्ष महोदय, कोल माइन्ज (कन्जरवेशन एण्ड डेवेलपमेन्ट) बिल में जो प्रावधान रखे गए हैं

MR SPEAKER The hon Member may continue on the next day

20 31 hrs

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Wednesday May 8 1974/Vaisakha 18 1896